Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य-

॥ ओ३म् ॥ Regd. No.D-C-201

जन जान

[मासिक]

अक्टुबर १९८०

भा

र

त

का

हि

न्दू

जा

गा

है

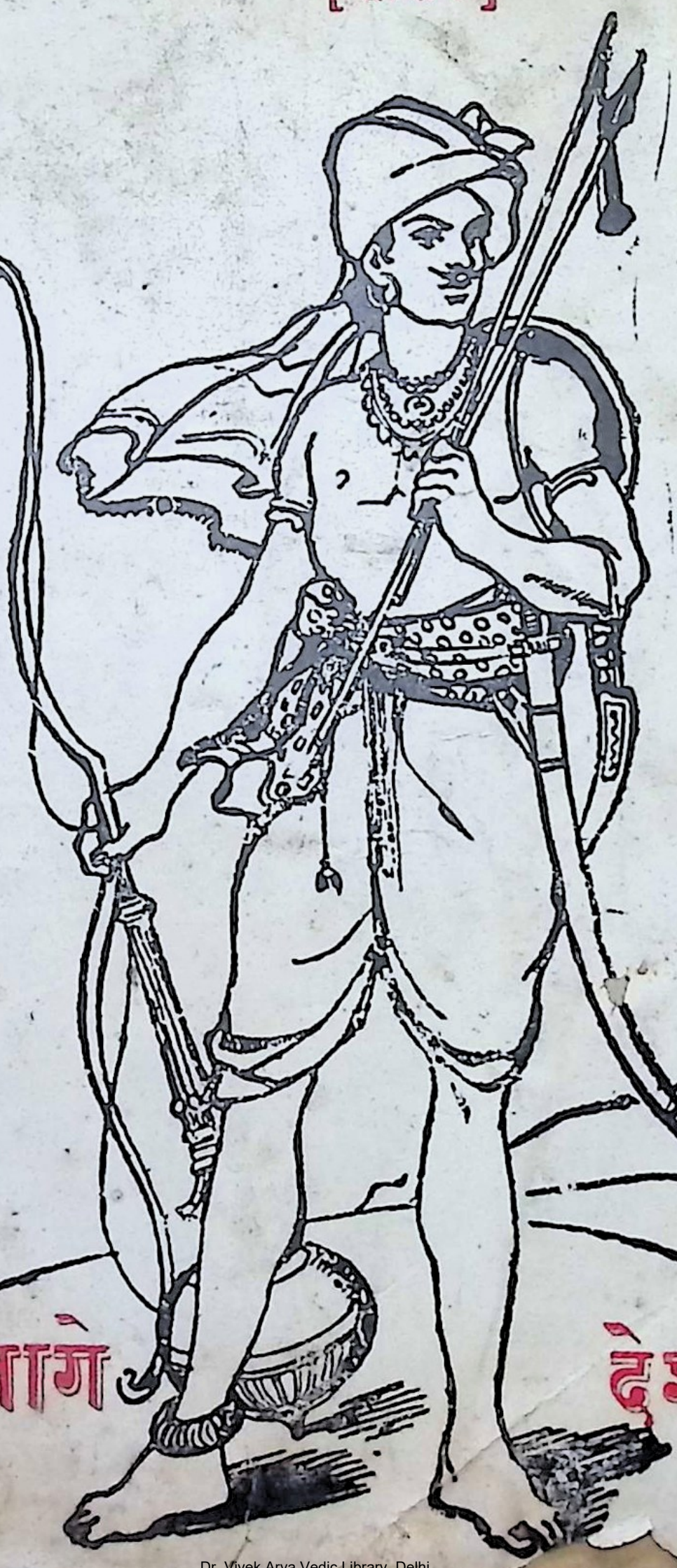

जा

ग

उठा

है

सारा

होन

देश

हिन्दू जागे देश बचाए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitized by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत को ईसालैंड बनाने का विदेशी पादरियों का षड़यन्त्र उन के द्वारा प्रकाशित नक्शों से स्पष्ट प्रमाणित हो रहा है ।

रेखांकित भागों को ईसालैंड १९८५ तक बनाने के लिए विदेशी पादरी कृत संकल्प है ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शहीद लेखराम का स्टेच्यू वेद मंदिर में लगेगा

अमर शहीद को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित की जाएगी

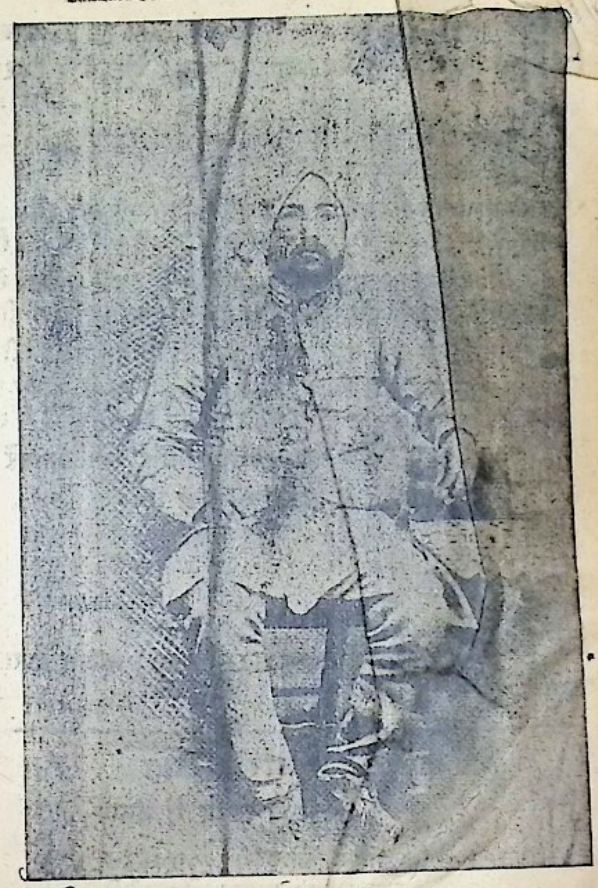

दयानन्द संस्थान ने राजधानी में बन रहे विशाल वेद मन्दिर में अमर शहीद लेखराम का ६॥ फुट ऊँचा पूर्ण आकार का स्टेच्यू लगाने का निश्चय किया है। यह कार्य आने वाले स्व. पं लेखराम के जन्मदिन ६ मार्च १९८१ तक पूरा हो जाएगा। आज के सन्दर्भ में हमारी वीर शहीद को यह सच्ची श्रद्धांजलि होगी। वेद मन्दिर जहां बन रहा है, उस स्थान का नाम शहीद लेखराम नगर रखा जा चुका है। शहीद का अंतिम आदेश कि विजय के लिए लेखनी चलती रहे, संस्थान का लक्ष्य है और उस के लिए वह सतत प्रयत्न कर रहा है।

स्टेच्यू पर ५० हजार रु. के लगभग व्यय आएगा।

— वेदभिक्षुः

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दूरभाष : ५६९८६१
५६२६३९

अखिल भारतीय

हिन्दू-रक्षा-समिति

संरक्षक :	अध्यक्ष :	महामन्त्री :	प्रधान कार्यालय
प्रो० रामसिंह	महात्मा वेदभिक्षुः	दिवाकर देशपांडे	१५९७, हरध्यान सिंह मार्ग नई दिल्ली-११०००५

मान्यवर !

सादर नमस्ते।

देश की ज्वलन्त समस्याओं से आप भली भांति परिचित हैं। हमने हिन्दूमात्र को जगाने के लिए अ० भा० हिन्दू रक्षा समिति की स्थापना की है।

हमारी आपसे प्रार्थना है कि आप यदि इसके उद्देश्यों से सहमत हैं तो इस के सदस्य बनें। सदस्यता पत्र साथ लगा है। इसे भरकर आज ही भेज द।

समिति ने कुछ साहित्य प्रकाशित किया है। उसे भारी संख्या में मंगायें।

मुझे विश्वास है कि आप इस कार्य को देश के जीवन व भविष्य का प्रश्न समझ जो कुछ भी सम्भव होगा करेंगे। स्वयं सदस्य बनेंगे व औरों को भी बनायेंगे।

अपने-अपने क्षेत्र में "हिन्दू रक्षा समिति" स्थापित करें।

आपका सहयोग ही हमारी शक्ति है।

विनीत

वेदभिक्षुः — अध्यक्ष

दिवाकर देशपांडे — महामंत्री

कृपया मनीआर्डर-ड्राफ्ट (M.O.-Draft) अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति के नाम का ही भेजें।

प्रचार साहित्य

भारी संख्या में मंगाएं

१.	हिन्दुओं को चेतावनी	४० पैसे
२.	इस्लामी साम्राज्यवाद की चुनौती	६० पैसे
३.	पोप की सेना का भारत पर हमला	६० ,,
४.	क्या ईसा खुदा का बेटा था ?	४० ,,
५.	ईसाई मत खण्डन	२० ,,
६.	पादरियों को चुनौती	२० ,,
७.	BIBLE IN THE BALANCE	६० ,,

एक हजार मंगाने पर ५० प्रतिशत की छूट

अ. भा. हिन्दू रक्षा समिति, वेद मन्दिर नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैं हवन-कुण्ड से लिख रहा हूँ

इस बार मैं आप से कुछ अधिक न कहूंगा, क्योंकि अब जीना तो कुछ करना होगा--या मरना होगा। आप स्वयं निर्णय कीजिए कि क्या चाहते हैं आप ?

१. देश के अनेक पक्षों के प्रमुख नेताओं ने मिलकर हिन्दू-रक्षा-समिति की स्थापना कर दी है। सदस्यता पत्र इसी अंक में है। आप उसे भर कर आज ही भेज दें।

२. प्रचार साहित्य भारी संख्या में मंगाए। कम से कम १००) का साहित्य प्रत्येक हिन्दू बांटे। समिति यह साहित्य आधे मूल्य में दे रही है।

३. जन-ज्ञान के आजीवन सदस्य बनिए। ३०१) के स्थान पर २१) में १५ अक्तूबर तक आप सदस्य बन सकते हैं।

४. जन-ज्ञान के वार्षिक सदस्य बनाइए।

५. हम भारत को ईसालैंड बनाने के प्रमाणस्वरूप ईसाइयों द्वारा प्रकाशित कुछ नक्शे छाप रहे हैं। क्या यह पर्याप्त नहीं कि हम अब भी जागें?

मुरादाबाद को नये मिनी पाकिस्तान का केन्द्र बनाने के प्रमाणस्वरूप तीन नक्शे प्रकाशित कर रहा हूं। इन्हें देख कर भी यदि हम नहीं जागते तो फिर प्रभु ही रक्षक हैं।

घर में आग लगी हो और आप सोते रहें, क्या यह बुद्धिमत्ता है ? क्या सब कुछ मिटने देंगे आप ? निर्णय तो आप को ही करना है।

हम बहुत शीघ्र एक अ. भा. हिन्दू सम्मेलन बुला रहे हैं। आप को उसमें भी आना है। छोटी-छोटी बातें भूलिए और एक ओ३म् के झंडे के नीचे खड़े हो उन सब को एकत्र कीजिए जो आर्य वंशज हैं। जिन्हें भारत से, भारत की माटी से प्यार है।

इस से पहले कि सांप काट ले और हम मर जाएं, सांप का फन कुचल देना ही बुद्धिमत्ता है। जहरीली सांप्रदायिकता मिटा कर एकता, प्यार और संगठन की गंगा हम बहाएंगे, इस के लिए आप को निमंत्रण दे रहा हूँ।

नक्कारे पै डंका बजा है,
तू शस्त्रों को अपने संभाल।
बुलाती है वीरों को तुरही,
तू उठ और पताका संभाल॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू रक्षा समिति क्यों ?

इस प्रश्न का उत्तर वैसे तो इस के उद्देश्यों में सभी को मिल जाएगा किन्तु फिर भी हम इतना स्पष्ट कर दें कि हिन्दू रक्षा समिति विशुद्ध सांस्कृतिक संगठन है।

जो भारत में रहता है, भारत के महापुरुषों को अपना समझता है, भारत को मां कहता है, वह हिन्दू है। भारत को मातृभूमि मानने वाला हिन्दू है। जिसे वेद-शास्त्र उपनिषद्-गीता पर अभिमान है वह हिन्दू है। इस तरह वस्तुतः भारत राष्ट्र एक हिन्दू राष्ट्र है।

जब पकिस्तान से युद्ध हुआ तो हमारी आकाशवाणी प्रताप-शिवा की गाथाएं गाती थी। अकबर औरंगजेब की नहीं, क्योंकि वे हमलावर थे।

इसलिए हिन्दू की रक्षा भारत की रक्षा है। जिस दिन इस देश में हिन्दू दुर्बल होगा, उस दिन न गांधी होगा, न नेहरू, न श्रीमती इन्दिरा गांधी प्रधान मंत्री ही बन पाएंगे।

भारत का प्राण—आत्मा—जीवन हिन्दू है। यह तथ्य देश के राजनीतिज्ञ जितनी जल्दी समझ लें, उतना ही कल्याण है।

देश के नागरिकों को समान स्तर देने के लिए संघर्ष हमारा प्रथम कार्यक्रम है। हम अल्पसंख्यकों के तुष्टीकरण की नीति का सबल स्वर में—पूरी शक्ति से विरोध करेंगे।

हम चाहते है कि सांप्रदायिकता का फुंकारता फन कुचल दिया जाए और कोई भी किसी वर्गविशेष का होने के नाते अधिकार न मांगे।

हिन्दू-रक्षा-समिति का अभी जन्म हुआ है। इसके पास न साधन हैं न व्यक्ति केवल सत्य इस के साथ है और उसी सत्य के भरोसे मैं कहता हूं कि विजय हमारी होगी।

इस से पहले कि सांप काट ले और हम मर जाएं, हम साँप का सिर कुचलने के पक्ष में हैं। हम किसी देशद्रोही से वार्ता करने को तैयार नहीं।

भारत सरकार हमारी विधि द्वारा निर्मित सरकार है। हम उस की नीतियों का विरोध कर सकते हैं किन्तु राष्ट्र की रक्षा के लिए प्रत्येक हिन्दू उस के साथ है।

जीवन-मरण के संघर्ष में हम कूद पड़े हैं। हिन्दू-रक्षा-समिति ने राष्ट्र के जीवन का जागरण नाद गुंजाने का संकल्प लिया है।

हमें विश्वास है कि हम जीतेंगे, सफल होंगे और सारे हिन्दुओं को एक मंच पर लाकर हिन्दू को सशक्त बनाने का हमारा अभियान आप सभी का आशीर्वाद पा सकेगा।

—वेदभिक्षुः

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

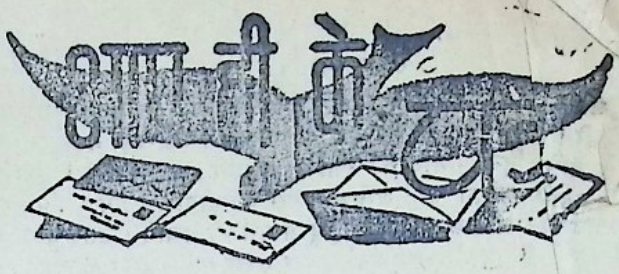

अमूल्य राखी

पूजनीय बहिन,

सादर चरण वन्दन। आपका पत्र एवं रक्षा बंधन पाकर अतीव हर्ष हुआ। मैं ४५ वर्ष की आयु पूरी कर रहा हूं, परन्तु इस बार मैं अपने को सौभाग्यशाली मानता हूँ कि किसी बहिन से राष्ट्र भाव से परिपूर्ण रक्षाबंधन मिला है। मेरा हृदयभर आया कि आप जैसी बहिन ने अपनी इतनी व्यस्तता में भी स्मरण कर अपने 'लल्ला' को राखी भेजी।

यह राखी मेरे जीवन में अनोखी है, अद्वितीय है, क्यों कि अबतक रंग-बिरंगी सजी हुई राखियाँ तो आईं, साथ ही विविध उपहार एवं मिठाइयाँ भी लाईं, किन्तु धर्म, संस्कृति एवं स्वतन्त्रता पर मंडरा रहे संकट से सावधान करने वाली एवं राम-कृष्ण वेद-शास्त्र के लिए कुछ सोचने का संकल्प कराने वाली यह प्रथम किन्तु अमूल्य राखी है। मैंने एकान्त में बड़े श्रद्धाभाव से योगेश्वर भगवान् कृष्ण के जन्म दिन के पावन पर्व पर इस राखी को बड़े मनोयोग से पहिना है—स्वीकारा है, आप जैसी तपस्विनी कर्मयोगी बहिन द्वारा दिलाया गया संकल्प सदा-सर्वदा स्मरण रखूंगा।

राखी के साथ जो मंगल कामनायें आपने की हैं, वे हमारे लिए पाथेय तुल्य हैं, जिनके सहारे हम कर्तव्य मार्ग पर विश्वासपूर्वक अग्रसर हो सकेंगे।

आपका पत्र पढ़ते-पढ़ते लगता है कि आप स्वयं ही मेरे हाथ में राखी बांधती हुई अपनी ममतायी वाणी से मुझे आशीर्वाद दे रही हैं।

अंत में परमपिता परमात्मा से यही प्रार्थना है कि वह आप जैसी स्नेहमयी बहिन को दीर्घजीवी बनाये और ऐसी बहिनें राष्ट्र में एक नहीं अनेकानेक हों, ताकि हम हिन्दू मात्र को एक झन्डे के नीचे संगठित कर विदेशी षड्यन्त्रों को समाप्त करने के अपने लक्ष्य तक शीघ्र और निश्चयपूर्वक पहुँचने में समर्थ हो सकें।

पिछोर (शिवपुरी)

स्नेहाकांक्षी
मुन्नालाल गुप्त
अधिवक्ता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

tization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पहले हिन्दुओं को बचाओ

आदरणीय बहिन राकेशरानी,

सादर नमस्ते।

आपका १८ अगस्त का पत्र मिला। एक ओर जहां मन प्रसन्न हुआ, वहां दूसरी ओर दुःखी। दुःख इस बात का कि आप के विचार में बड़े-बड़े नगरों में भव्य वेद भवन बनाने से ही हिन्दू समाज की रक्षा हो जायेगी। मेरे विचार में कदापि नहीं। वेदभवन बनाने की अपेक्षा कहीं अधिक अच्छा यह होगा कि हम महर्षि दयानन्द के बताये मार्ग पर चलें और सबसे पहले हिन्दू समाज को बचायें। उसके बाद विधर्मियों को वैदिक धर्म में लायें। यह कार्य इतना सरल नहीं। मेरा निवेदन है कि एक हिन्दू मिशन गठित किया जाये, जिस में हिन्दुओं की सब संस्थाएं सम्मिलित हों। यह मिशन पहले भारत में और फिर सारे संसार में अपने विचारों का प्रचार करे।

आजकल तो हम सुनते हैं कि अमुक स्थान पर इतने आदिवासी हिन्दू ईसाई हो गये। क्या इन लोगों को ईसाई होने से नहीं बचाया जा सकता? जब हिन्दू ही नहीं रहेंगे, तब वेद भवनों और वेद मन्दिरों का क्या होगा?

आपका हिन्दूप्रेमी भाई
काशीराम

विवेक विहार (शाहदरा-दिल्ली)

हिन्दू शब्द का अर्थ

श्रीमान् जी,

सप्रेम नमस्ते।

'हिन्दूमात्र से अपील—जीवन-मरण का प्रश्न' शीर्षक आपकी विज्ञप्ति मिली। आपने लिखा है कि दयानन्द संस्थान २५ हजार घरों में प्रभु की अमर वाणी वेद पहुंचा कर ऐतिहासिक कार्य कर चुका है। मुझे आश्चर्य है कि इस सन्दर्भ में आप हिन्दू शब्द का इस्तेमाल कैसे कर रहे हैं! क्या आपको हिन्दू शब्द का अर्थ पता नहीं? क्या आपने सत्यार्थ प्रकाश नहीं पढ़ा? हिन्दू नाम विदेशी है, जिसका अर्थ है चोर, डाकू और काफिर। मुसलमान मूर्तिपूजक काफिरों के अर्थ में हिन्दू शब्द का इस्तेमाल करते हैं। हम आर्य हैं—वैदिक धर्मी हैं। हिन्दुओं की अधिकतर पद्धतियां और परम्परायें असत्य पर आधारित हैं। हिन्दू शब्द को अपना कर आप महर्षि दयानन्द के उद्देश्यों की मिट्टी पलीद कर रहे हैं। पाखंड का प्रश्रय ले रहे हैं—अवसर वादिता का परिचय दे रहे हैं।

दिल्ली

—विक्रम आर्य

अनार्यत्व को रोको

आदरणीय बहिन जी,

सादर नमस्ते।

आपका १८ अगस्त का पत्र और राखी मिली। मैं आपकी रक्षा क्या कर सकता हूँ! आप तो मुझ से भी अधिक शक्तिशाली हैं। अभी तो हम गोरक्षा भी पूरी तरह नहीं कर पाये। हमारे देश में गौएं कटती हैं—शराब के दौर चलते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य जगत् ने अनार्यत्व रोकने के लिए क्या किया है ? हमारा कर्मकाण्ड आर्य-समाज मन्दिरों तक सीमित हो कर रह गया है। बाहर भोगवाद का दूषित रूप देखने में आ रहा है। राजनैतिक क्षेत्र में कुछ भी होता रहे, हमें माला फेरने से ही फुरसत नहीं। राजसत्ता हमारे हाथ में न होने से हमारी कहीं सुनवाई नहीं। बची-खुची कसर हमारी फूट ने पूरी कर दी है। आप हिन्दूमात्र को एक मंच पर लायें। वर्त्तमान संकट के समय आर्यसमाजियों, सनातनधर्मियों, सिखों, जैनों, बौद्धों आदि (हिन्दू समाज के सब घटकों) को संगठित होना चाहिए। अनार्यों का शासन समाप्त होना चाहिए। आज की स्थिति में ब्राह्मणों से अधिक आवश्यकता क्षत्रियों की है। आप क्रांति का शंख फूंकें। हमारा सहयोग आप को मिलेगा।

पटियाला

रणधीरसिंह पुरी

बागडोर सही लोगों के हाथ में दो

प्रिय वेदभिक्षु जी,

नमस्ते। ५.९.'८० के पत्र में आपने लिखा कि "आजकल हिन्दू जनता को जगाने का उपक्रम है।" इस सम्बन्ध में मैं तैत्तिरीयोपनिषद् की वल्ली १, अनु. ११ के निम्नांकित भाग की ओर आपका ध्यान ले जाना चाहता हूँ—

अथ यदि ते कर्म विचिकित्सा वा वृत्तविचिकित्सा वा स्यात्। ये तत्र ब्राह्मणाः सम्मर्शिनः युक्ता आयुक्ताः अलूक्षा धर्मकामाः स्युः। यथा ते तत्र वर्त्तेरन्। तथा त्वं तत्र वर्त्तेथाः.....। एष आदेशः। एष उपदेशः। एषा वेदोपनिषद्। एतदनुशासनम्। एवमुपासितव्यम्। एवमु चैतदुपास्यम्।

ऐसे 'सम्मर्शिनः', 'अलूक्षाः', 'धर्मकामाः' पुरुष कहाँ हैं ? मतदान इस वर्ष हुआ जरूर, पर वही पुराने खिलाड़ी उम्मीदवार थे। मतदाता क्या करें ? जनता पार्टी को नहीं, तो कांग्रेस को। कैसी विडम्बना है कि जिनके खिलाफ इतनी बातें थीं, वही शासक बन गए।

खान अब्दुलगफ्फार खाँ ने भारत से जाते समय राजेन्द्र अवस्थी जी से भेंट-वार्त्ता की जो इस प्रकार है—

वोट मुस्तहिक आदमी को दो। हिन्दुस्तान में बहुत कम मुस्तहिक लोग हैं। मुस्तहिक लोग पैदा करो। ऐसे लोग पैदा करने होंगे। हिन्दुस्तान में ऐसे लोग नज़र नहीं आते। ऐसे लोग पैदा करो। (कादम्बिनी सित. '८० पृष्ठ ३३ देखिए।)

बात सही है। आशा है कि आप सहमत होंगे और अपने उपक्रम में इस को भी स्थान देंगे।

देश की सब समस्याएं इसी कारण हैं कि देश की बागडोर सही आदमियों के हाथ में नहीं है।

विदेशी पादरी इस तरह जन-ज्ञान में छापने मात्र से नहीं जायेंगे। जब तक अलूक्षाः और धर्मकामाः व्यक्ति सत्ता में नहीं आयेंगे, समस्या हल नहीं होगी।

'दो या तीन बच्चे—बस' की मनोवृत्ति छोड़ें

अगस्त १९८० के जन-ज्ञान में श्री के. सी. मिश्र ने अपने विद्वत्तापूर्ण लेख में भली भांति सिद्ध कर दिया कि हिन्दू जनसंख्या में ह्रास बड़ी तेजी से हो रहा है जिससे सम्भव है कि कुछ काल बाद हिन्दू अपने ही देश में अल्पसंख्यक हो जाएं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस हा[illegible] के लिए क्या करना चाहिए ? यजु वेद १९-७५ इस प्रकार है—

इदं हविः प्रजननं मेऽ अस्तु दशवीर ँ सर्वगण ँ स्वस्तये अर्थात् उस काल में प्रत्येक स्त्री दस वीर उत्पन्न करने की इच्छा रखती थी। परन्तु आजकल कौन स्त्री दस बच्चे पैदा करने की हिम्मत करेगी ? परिस्थितियां और आर्थिक संकट परिवार को संकुचित करने के लिए विवश करते हैं। आज कल तो दो पर जोर है। तीन के बाद तो बस ! बहुतों के हम एक ही बच्चा देखते हैं। अतः प्रचार करना चाहिए कि संकट की सम्भावना को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक हिन्दू का धर्म है कि सम्भव हो तो एक सन्तान तो और पैदा करें। दो पर बन्द न करें।

संख्या पर यह नियन्त्रण कि दो व तीन के बाद बस—परिवार नियोजन विधियों के पालन से सम्भव हो रहा है। सरकार द्वारा तो 'निरोध' और 'टयूबेक्टॉमी' का ही प्रचार है। कितनी ही खाने की औषधियां भी प्रयोग में आ रही हैं। इनमें बिल्कुल विश्वसनीय तो 'टयूबेक्टॉमी' है। इस प्रक्रिया के बाद फिर अपने हाथ में कुछ नहीं रहता। निरोध तथा दवाइयाँ बन्द करने के बाद गर्भ फिर रह सकता है।

परिवार नियोजन के जो नियम सरकार बनाए उन्हें पालन करना मुसलमानों पर भी लागू होना चाहिए। धर्म की आड़ में छूट देना गलत है। सरकार को बाध्य करना चाहिए कि वह इन नियमों को मुसलमानों पर भी उसी कठोरता से लागू करे जैसे हिन्दुओं पर। जो धर्म की आड़ में छूट चाहें, उनके लिए पाकिस्तान है—वहां जाएं। यह भारत है।

सरकार अपने कर्मचारियों को प्रलोभनों द्वारा मजबूर करती है। परन्तु सरकारी कर्मचारी बहुसंख्या में नहीं हैं। जो सरकारी कर्मचारी नहीं, वे ऐसे नियम पालन करने के लिए बाध्य नहीं किए जा सकते। वे उनका पालन न करें।

परिवार संकुचित—सीमित करने में जो क्रिया सबसे अधिक सहायक हो रही है वह 'एबॉर्शन'—गभपात—है। जहां तीसरा गर्भ रहा 'एबॉर्शन' करा दिया। इसमें सरकार का दख्ल नहीं। आर्थिक समस्याएं—परिस्थितियां मजबूर करती हैं कि गर्भपात कराके निश्चिन्त हो जाएं। अतः इसके विरुद्ध प्रचार करना होगा।

एक और महत्त्वपूर्ण परिस्थिति, जो जन संख्या वृद्धि पर रोक लगाए है, वह 'देर से शादी होना' है। हम देखते हैं कि अब लड़कियाँ पढ़-लिख कर बीस से ऊपर की आयु प्राप्त करने पर भी कुंआरी हैं। शादी नहीं हो रही। कुछ तो आजीवन कुंआरी हैं। बीस-पच्चीस के बीच शादी हुई तो प्रजननशक्ति घट जाती हैं। फिर शादी के तुरन्त बाद कौन चाहता है कि बच्चा हो जाए। परिवार नियोजन के साधनों से काम लिया जाता है। शारदा एक्ट से जो काम नहीं हुआ वह आजकल की समस्याओं ने सम्भव कर दिया है। इस समस्या का हाल नहीं दिखता।

ये लड़कियां पढ़-लिखकर प्रायः नौकरी करने लगती हैं, क्योंकि शादी हो नहीं पाती। सेवारत होते शादी होने पर कोई गर्भ धारण करना पसन्द नहीं करता, एक दो की बात दूसरी है। वर्ना बांझ न कहलाएं! एक दो-बच्चे तो चाहिएं। इसके बाद गर्भपात करा कर परेशानी से बच जाती हैं।

देवदत्त अरोड़ा

कानपुर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रतिशोध कैसे लिया जाये ?

—वीर सावरकर

प्रस्तुत लेख स्वातन्त्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर ने २५ सितम्बर १९४७ के "मराठा" में लिखा था। पाठक देखेंगे कि सावरकर जी की अनेक भविष्यवाणियां सच निकलीं और यदि उनकी चेतावनियों पर ध्यान दिया जाता तो साम्प्रदायिक दंगों की नौबत न आती।

(लेख का उतना ही अंश दिया जा रहा है, जितना वर्तमान परिस्थितियों में प्रासंगिक है।)

हिन्दू समाज के महत्त्वपूर्ण हितों का तकाज़ा है कि कांग्रेसी मन्त्री, नेता और समाचारपत्र जिन सिद्धान्तों और तर्कों पर समवेत स्वर में ज़ोर दे रहे हैं, उनमें से कुछ का तुरन्त प्रतिवाद किया जाये। उदाहरणार्थ पिछले कुछ दिनों से पंडित नेहरू इस बात पर जोर दे रहे हैं कि प्रतिशोध अथवा दंड का अधिकार केवल राज्य को है और जनता को (वर्तमान सन्दर्भ में हिन्दुओं और सिखों को) यह अधिकार नहीं कि वे इस मामले में पहल करें या इसका उत्तरदायित्व अपने ऊपर लें। यह प्रसन्नता की बात है कि इस सिद्धान्त का प्रतिपादन करते समय पंडित जी ने गान्धीवादी नैतिकता के शरारतभरे वाग्जाल का सहारा नहीं लिया। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि वह इस प्रश्न के नैतिक पहलू की चर्चा नहीं कर रहे, अपितु केवल इसके व्यावहारिक पहलुओं को स्पर्श कर रहे हैं। इतना तो अच्छा हुआ। लेकिन उन्हें इस प्रश्न के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण और व्यावहारिक पहलू का स्पर्श न करना सुविधाजनक लगा। प्रश्न यह है कि जब राज्य या तो इतना अनिच्छुक हो या इतना डरपोक हो कि अपनी जनता की रक्षा भी न कर सके (उन की धन-सम्पत्ति और सम्मान पर किये गये आक्रमणों का प्रतिशोध लेने की तो बात ही क्या !) तब जनता क्या करे ?

कानून ने प्रत्येक व्यक्ति को आत्मरक्षा का अधिकार दे रखा है, कम-से-कम उस स्थिति में जब यह हिंसक आक्रमणकारी के विरुद्ध आत्मरक्षा के हथियार के तौर पर इस्तेमाल किया जा रहा हो, जब पुलिस कहीं दिखाई न दे अथवा इससे भी बुरी इस हालत में हो कि आक्रान्ता की नाराजगी के डर से उसका मुकाबला करने को अनिच्छुक हो। प्रत्येक व्यक्ति को यह मौलिक अधिकार तो अवश्य मिलना चाहिए। यह तो प्रत्येक नागरिक का अधिकार है।

जब हजारों हिन्दुओं और सिखों के समक्ष यह तात्कालिक खतरा उपस्थित हो कि एक संगठित और खतरनाक तौर पर हथियारबन्द ही नहीं, अपितु मतान्ध

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विरोधी शत्रु द्वारा उनकी योजनाबद्ध ढंग से हत्या कर दी जायेगी, उन्हें लूट लिया जायेगा, 'जीवित जला दिया जायेगा', बलपूर्वक धर्मान्तरित कर लिया जायेगा, संक्षेप में एक नस्ल और राष्ट्रीय व्यक्ति के रूप में जड़ से उखाड़ फैंका जायेगा, तब वे क्या करें ? यह प्रश्न विशेष रूप से तब उत्पन्न होता है, जब राज्य इतनी कुशलता से एक राज्य के रूप में कहीं दिखाई नहीं देता कि वह पीड़ित जनता की रक्षा के लिए आसपास कहीं भी उपलब्ध हो।

एक ओर पाकिस्तान में इस बात की इजाजत है कि सारे पश्चिमी पंजाब में मुस्लिम जनता को आग्नेयास्त्र और विस्फोटक पदार्थ बांटे जायें, लीगी नेता अपनी जनता को खुल्लमखुल्ला भड़का रहे हैं कि पाकिस्तान हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने का स्प्रिंग बोर्ड है और मुसलमान हजारों की संख्या में सड़कों पर परेड कर रहे हैं व शहरों और कस्बों में खतरनाक हथियारों के साथ ये नारे लगाते हुए आतंक फैला रहे हैं कि "हंस के लिया है पाकिस्तान—मार के लेंगे हिन्दुस्तान।" जबकि मुस्लिम देश इस बुद्धिमत्तापूर्ण और प्रबल अभियान के दौरान यह योजना बना रहा है कि पूर्वी पंजाब पर आक्रमण कर दिया जाये और दिल्ली पर अधिकार कर लिया जाये, ताकि पाकिस्तान का समारम्भ इसी रूप में हो, दिल्ली में बैठी भारतीय राज्य की सरकार हमारे शत्रुओं द्वारा संचालित इन गतिविधियों का मुकाबला करने के लिए क्या कर रही है ? कांग्रेसी मन्त्रियों ने पहला पग तो यह उठाया है कि इस बात का प्रबल शब्दों में खंडन किया है कि दोनों देशों में किसी प्रकार की कोई शत्रुता है, उन्होंने हमारी मातृभूमि का विभाजन करके रक्तहीन क्रान्ति करने में सफलता प्राप्त की है, ताकि रक्तपात न हो और अब हमारा तात्कालिक कर्त्तव्य यह है कि हम अपने भारतीय राज्य के समारम्भ का उत्सव मनाने के लिए सार्वजनिक हर्ष दिवस की तारीख निर्धारित कर दें। दिल्ली में ही उन्होंने ५० हजार मेवों औरअनेक खाकसारों को जमा होने दिया। इन लोगों के पास आग्नेयास्त्रों और विस्फोटक पदार्थों के गुप्त भण्डार थे और इनका गन्दा मन्शा यह था कि राजधानी पर कब्जा कर लिया जाये, जहां मुस्लिम कमिश्नर के अधीन पुलिस में पचास प्रतिशत मुसलमानों की भरती होने दी गई। भारत में हिन्दू संघटनवादी घरों की छत से चिल्ला-चिल्ला कर कहते रहे कि 'आगे खतरा है!' यह समय हर्षोल्लास का नहीं, जबकि आप ऐसे ज्वालामुखी पर बैठे हैं, जो फट रहा है। लेकिन उन लोगों को गद्दार और फिरका-परस्त ठहराया गया और उन्हें एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त को निष्कासित किया गया। और जेलों में डाला गया। पूर्वी पंजाब की सीमाओं को अरक्षित छोड़ दिया गया परिणाम यह हुआ कि १५ अगस्त के सूर्योदय से दो दिन पूर्व हिन्दुओं और सिखों का नरमेध प्रारम्भ हो गया। इतना ही नहीं, अवर्णनीय भयानक घटनाएं आये दिन की बात हो गई। जब उस मुस्लिम प्रान्त में हजारों हिन्दू-सिख महिलाओं की चीखें गूंज रही थीं, पुरुषों और बच्चों के साथ बलात्कार किया जा रहा था, उनकी हत्या की जा रही थी, उन्हें जीवित ही आग की लपटों में झोंका जा रहा था और वहां वे हिन्दुओं और सिखों के रक्त में रक्तिम स्नान कर रहे थे, यहां दिल्ली में भारतीय राज्य के मन्त्री अपनी रक्तहीन क्रान्ति का समारोह मनाने के लिए सचमुच ही सहभोज कर रहे थे और चैनकी बंसी बजा रहे थे।

नेहरू अर्थात् नीरो

इन परिस्थितियों में क्या आश्चर्य, जो पूर्वी पंजाब, भरतपुर, अलवर, पटियाला और स्वयं दिल्ली में लाखों हिन्दुओं और सिखों ने आत्मरक्षा की सहज भावना और विश्व हिन्दू संगठन की भावना से प्रेरित होकर कमर कस ली और अधिकाधिक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शक्ति व साधनों के साथ मैदान में उतर पड़े—इतने रोषपूर्ण और प्रभावशाली रूप में कि उन्होंने मुस्लिम गिरोहों को पूर्वी पंजाब पर आक्रमण का प्रयत्न करने से रोक दिया, उन्हें रक्षात्मक मुद्रा अपनाने पर बाध्य कर दिया और जत्थेबन्द मुसलमानों को दिल्ली पर कब्जा न करने दिया। यदि आज पंडित जी और उनके कांग्रेसी साथी सुरक्षित और सकुशल गद्दियों पर बैठे हैं, तो यह उस वीरतापूर्ण संघर्ष के कारण है, जो इन हिन्दू संघटनवादियों और सिखों ने ऐन वक्त पर किया। इसके बावजूद पंडित जी शर्म महसूस किये बिना आगे आते हैं और इस आशय का उपदेश देते हैं कि प्रतिशोध का अधिकार केवल राज्य को है!

यदि आज शिवाजी अथवा रणजीत सिंह देश के शासक होते तो वे मांग कर सकते थे कि जनता प्रतिशोध का अधिकार केवल उन्हीं के पास रहने दे। उनकी यह मांग उचित भी होती। लेकिन जब शक्तिहीन पंडित जी शिवाजी के स्वर में यह मांग करने का प्रयत्न करते हैं, तब यह उतना ही उपहासास्पद लगता है, जितना तब लगेगा, जब कोई बौना अपने पंजों पर खड़ा होकर ऊंचाई में दैत्य के समान खड़े किसी व्यक्ति का मुकाबला करते समय लगे।

इन सब के बावजूद मैं एक बार फिर पूरी सदाशयता से कांग्रेस और मन्त्रि-मंडल में बैठे अपने हिन्दू भाइयों से कहूंगा कि वे कम से कम अब अपनी पुरानी भूलों से शिक्षा लें, कोरे आदर्श न बघारें और हाल ही की घटनाओं से सामने आई वास्तविकताओं का मुकाबला करने के लिए हिन्दू संघटनवादियों के साथ मिलकर एक हो जायें। मुंह बाये खड़ी वास्तविकताएं मुख्य रूप से ये हैं—

१. यह कि मुसलमानों ने ध्वनितार्थ से हिन्दुस्थान पर युद्ध की घोषणा कर दी है, ताकि इसे राजनैतिक, मजहबी और सांस्कृतिक दृष्टि से मुस्लिमस्थान में परिवर्तित किया जा सके।

२. आधुनिकतम हथियारों और हवाई सेना से हिन्दुस्थान पर आक्रमण करने के लिए तीव्र गति से तैयारियाँ प्रारम्भ हो गई हैं और सीमा पार पठानों और बलूचियों की सहायता से व सम्भवतः अफगानिस्तान के अमीर के नेतृत्व में उनका इरादा मुख्यतः दो विस्तृत मोर्चे खोलने का है—एक कशमीर से जूनागढ़ तक (दोनों को मिलाकर) और दूसरा निजाम के नेतृत्व में दक्षिण भारत में, जिससे एक ओर मछलीपट्टम से गोआ और दूसरी ओर मध्य प्रान्त व बरार खतरे में पड़ जायेंगे।

३. यह कि भारत के मुसलमान इस बाहरी आक्रमण के साथ ही हमारे राज्य में अन्दर से तोड़फोड़ करने और उसकी पीठ में छुरा घोंपने के लिए विद्रोह के लिए उठ खड़े होंगे।

४. यह कि इस इस्लामी खतरे को प्रारम्भ न होने देने और इसका मुकाबला करने के लिए हमारी सरकार को केवल हिन्दुओं की एक शक्तिशाली सेना गठित करनी चाहिए, केवल हिन्दुओं द्वारा संचालित हथियारों और गोलाबारूद के कारखाने खोलने चाहिए और यह सारा काम युद्ध स्तर पर करना चाहिए।

५. यह कि हमें यह बात बिलकुल स्पष्ट कर देनी चाहिए कि प्रतिनिधित्व, नौकरियों और नागरिकता के अधिकारों आदि के मामले में हिन्दुस्थान के अल्प-

(शेष पृष्ठ १६ पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सामयिक विचार

संकलन : सत्यपाल शास्त्री

माउंटबैटन की असलियत

२१ सितम्बर के धर्मयुग में निशीथकुमार राय लिखते हैं कि "मार्च १९४७ में जब लार्ड माउंटबैटन भारत के अन्तिम वाइसराय बनकर आये, तब भारतवासियों ने बहुत स्नेह और प्रेम से उनका स्वागत किया, लेकिन उन्होंने (माउंटबैटन ने) विश्वासघात किय। यह अलग बात है कि दैवयोग से उनका षड्यन्त्र सफल न हो सका।

जून १९४७ में जब माउंटबैटन ने स्वीकार कर लिया कि वह स्वाधीन भारत के गवर्नर-जनरल बने रहेंगे, तब भी वह भारतविरोधी कार्रवाइयों में लगे हुए थे। २३ जून को वह चार दिन के लिए कशमीर गये थे। उन्होंने महाराजा हरिसिंह पर प्रबल दबाव डाला कि वह पाकिस्तान की सहायता करें। उन्होंने इसी इरादे से महात्मा गान्धी और श्री जवाहरलाल नेहरू को कशमीर न जाने की सलाह दी थी कि कहीं वे महाराजा और शेख अबदुल्ला को भारत के पक्ष में न कर लें। इस बात का भी प्रमाण मिला है कि महाराजा जानबूझ कर माउंटबैटन से बात नहीं कर रहे थे, क्योंकि वह (माउंटबैटन) पाकिस्तान की सहायता करने के लिए दबाव डाल रहे थे।

कशमीर के तत्कालीन प्रधान मन्त्री डॉक्टर मेहरचन्द महाजन ने लिखा है कि महाराजा से उनकी बातें हुई थीं। "बातचीत से मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि माउंटबैटन की सम्मति में कशमीर नरेश के लिए पाकिस्तान के साथ मिलने के सिवा अन्य कोई विकल्प नहीं रह गया था।"

"फ्रीडम ऐट मिडनाइट" के लेखकद्वय कालिस और लापियरे ने माउंटबैटन से भेंटवार्ता के आधार पर लिखा है कि "माउंटबैटन ने इरादतन महाराजा हरिसिंह के श्रीनगर का दौरा किया था, ताकि कशमीर के बारे में उन पर दबाव डालकर इस मामले का फैसला करवा सकें। वह कशमीर का सेब सरदार पटेल की झोली में नहीं डालना चाहते थे।"

अन्त में निशीथ कुमार राय लिखते हैं कि "माउंटबैटन ऊपर से भारत हितैषी बनते थे, लेकिन उन्हें विश्वास भाजन बनकर भारतीयों से विश्वासघात करने में तनिक भी दुविधा न हुई।"

भारत में अवैध पाकिस्तानी

धर्मयुग के इसी अंक में साम्प्रदायिक हिंसा के विस्फोट पर एक परिचर्चा आयोजित की गई है। इसके अन्तर्गत सुशील सिलवानो लिखते हैं कि "यह तथ्य उभर कर सामने आया है कि इस समय भारत में हजारों-लाखों पाकिस्तानी अवैध रूप से रह रहे हैं। सरकारी आंकड़ों के अनुसार १९७७ से १९८० के प्रारम्भिक छह महीनों तक पाकिस्तान से भारत आने वाले मेहमानों में से ७६, ५८९ पाक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नागरिक अपने देश न लौट कर भारत में ही रह गये। भारत सरकार के पास सम्भवतः इस महत्त्वपूर्ण प्रश्न का कोई उत्तर नहीं कि आखिर ये लोग यहां क्या कर रहे हैं? अन्यथा इन अवांछित मेहमानों को अब तक सरलता से उनके देश वापस भेज दिया गया होता।

हमारे देश में इन पाक नागरिकों में से कुछ प्रत्यक्ष और कुछ अप्रत्यक्ष रूप से खुफिया कार्रवाइयों में भाग लेते हैं। परोक्ष रूप से कार्य करने वाले जासूस द्विपक्षीय और अन्तर्राष्ट्रीय मसलों पर (विशेषतः जो इस्लाम से सम्बन्ध हैं) पाकिस्तानी नजरिये का प्रचार करते हैं। कुछ अन्य अनुभवी पाक जासूस हमारे रक्षासम्बधी गुप्त रहस्यों की जानकारी एकत्र करते हैं और उन्हें अपने देश भेजते हैं, भारत में साम्प्रदायिक द्वेष का बीज बोते हैं और कुछ लोगों को ख्वाब दिखाते हैं कि पाकिस्तान में उनका जीवन बेहतर होगा।

इस प्रकार की गतिविधियों के लिए ढेर सारे पैसों की आवश्यकता होती है। प्रश्न उठता है कि पाकिसतनी जासूस यह पैसा कैसे और कहां से प्राप्त करते हैं? इस बारे में अब तक हुई जाँचों से पता चला है कि यह अपार धन राशि चोरी-छिपे या गुपचुप नहीं आती, बल्कि सब-कुछ वैधानिक तरीके से होता है।

ये विरोधी एजेंट अन्दर ही अन्दर चुपचाप हमारे राष्ट्रीय हितों को कितनी चोट पहुँचा रहे हैं, हमें इसका पूरा पता नहीं है। लेकिन हाल में जिस योजनाबद्ध ढंग से पूरे देश में साम्प्रदायिक दंगे भड़के हैं, उससे यह अनुमान लगाना कठिन नहीं कि इनके पीछे देश के हितों को क्षति पहुंचाने वाले विदेशी एजेंट सक्रिय हैं।

प्रधान मन्त्री इसे षड्यन्त्र बताती हैं तो गृह मन्त्री को इसमें 'विदेशी हाथ' नजर आते हैं। प्रश्न उठता है कि भारत के ये गुप्त शत्रु आखिर हैं कौन?

साम्प्रदायिकता का जहर कैसे रुके?

भूतपूर्व सूचना व प्रसारण मन्त्री एवं भारतीय जनता पार्टी के महामन्त्री श्री लालकृष्ण आडवाणी का एक लेख पिछले दिनों इस स्तम्भ के लेखक के देखने में आया। आडवाणी जी शान्त प्रकृति के सज्जन हैं और उनके विचार सुलझे हुए होते हैं। "साम्प्रदायिकता का जहर कैसे रुके?" इस विषय पर अपने विचार प्रकट करते हुए आडवाणी जी लिखते हैं कि "दिल्ली, अलीगढ़, इलाहाबाद, पीलीभीत, रामपुर, मेरठ, सम्भल, बरेली आदि स्थानों पर जो घटनाएं हुईं, वे साम्प्रदायिक विद्वेष और अविश्वास की ही परिचायक हैं। रोग का सही निदान करने के लिए इस तथ्य को स्वीकार करना उचित होगा।

३१ अगस्त को मुरादाबाद ईदगाह पर जो कांड हुआ, उसमें १०० से अधिक लोगों ने अपनी जानें गंवाईं। सैकड़ों परिवार, जो सजधज कर उल्लासभरे हृदयों से ईद मनाने गये थे, मातम मनाते हुए घर लौटे। कुछ लोगों के विचार में यह पुलिस की बर्बरता का परिणाम था। कुछ ऐसे भी हैं, जो मुस्लिम सम्प्रदाय के आक्रामक रवैये को दोष देते हैं। प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि हिंसा का आरम्भ ईदगाह की ओर से पुलिस पर भारी पथराव से हुआ।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर हर दंगे का दोष लगाना एक आदत-सी बन गई है। कुछ मास पूर्व डॉक्टर जाकिर हुसैन स्मारक व्याख्यानमाला के अन्तर्गत सेकुलरिज्म पर बोलते हुए प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री और अल्पसंख्यक आयोग के भूतपूर्व सदस्य डॉ०वी०वी०जॉन ने कहा था कि "आज की राजनीति में फिरकापरस्त दलों से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सांठगांठ करते हुए भी मजहबी कठमुल्लों से समर्थन प्राप्त करते हुए भी अपने सेकुलरिज्म को कायम रखने का सहज मार्ग है राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भर्त्सना करना।"

खेद इस बात का है कि राजनीतिक दलों ने विगत तीन दशाब्दियों में सेकुलरिज्म की ऐसी ही कुछ विकृत धारणाओं का पोषण किया है। भारत के मुसलमानों की उग्रतम समस्याएं वे ही हैं, जो हिन्दुओं की हैं—रोटी की, रोजी की, मकान की, पढ़ाई की, दवा-दारू की, अर्थात् इंसानी समस्याएं, किन्तु अधिकतर दलों की नजरों में भारत का मुसलमान इंसान नहीं प्रमुख रूप से वोटर है। यही विकृत मनोवृत्ति है, अस्वस्थ दृष्टिकोण है, जिसे छोड़े बिना साम्प्रदायिक विद्वेष की इस समस्या का हल निकालना सम्भव नहीं।

(पृष्ठ १३ का शेष)

संख्यकों से अच्छा-बुरा वैसा ही बरताव होगा, जैसा (प्रकार और मात्रा दोनों में) मुस्लिम सरकार हिन्दू और सिख अल्पसंख्यकों के साथ करेगी।

६. क्योंकि जैसा स्वाभाविक था और जैसा वे स्वयं मानते हैं, न तो गांधीवादी विचारधारा और न कांग्रेस की झूठी राष्ट्रवादी विचारधारा इस इस्लामी आक्रमण का मुकाबला कर सकती है और क्योंकि केवल हिन्दू संघटनवादी विचारधारा ही इस खतरे का सफलतापूर्वक मुकाबला कर सकती है और करेगी, सरकार में केवल ऐसे मन्त्री लिये जायें, जो केवल हिन्दू संघटनवादी विचारधारा से प्रतिबद्ध हों। यदि कांग्रेसी मन्त्री इस अपरिहार्य कार्यक्रम को स्वीकारने को अनिच्छुक हैं, तो कम से कम उनमें इतनी देशभक्ति तो होनी ही चाहिए कि वे इस्तीफा दे दें और सरकार हिन्दू संघटनवादियों के हवाले कर दें।

राष्ट्रविरोधी कार्यों में संलग्न

ओ३म्

सत्य ज्ञान का सूर्य उगा है
उदय हुआ है स्वर्ण विहान,
रह न सकेगा आर्य देश में
ईसाई मत का अज्ञान॥

विदेशी पादरियो भारत छोड़ो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

॥ ओ३म ॥

अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति

प्रधान कार्यालय : १५९७, हरध्यान सिंह मार्ग,

नई दिल्ली-११०००५

सदस्यता पत्र

मैंने हिन्दू रक्षा समिति के उद्देश्यों को भली भांति समझ लिया है। मैं इसके लक्ष्य से सहमत होकर इसका सदस्य बनना स्वीकार करता हूं।

सदस्यता शुल्क रु० दे रहा हूं। मुझसे इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए जो भी संभव होगा करता रहूंगा।

हस्ताक्षर.....

नाम व पूरा पता.....

.....

हिन्दू रक्षा समिति के उद्देश्य

१. भारत राष्ट्र की स्वतन्त्रता, सुरक्षा, एकता और संस्कृति को हानि पहुंचाने वाले तत्वों का -

२. मजहब के आधार पर आरक्षण, विशेष अधिकार व विधि नियम मांगने की विघटनकारी प्रवृत्ति का -

३. विदेशी देशद्रोही शक्तियों के राष्ट्रघातक षडयंत्रों का -

४. भारत के नागरिकों के लिए प्रथक प्रथक राज्य नियम और अधिकार का

५. सांप्रदायिकता, जातीयता, प्रान्तीयता व विदेशी चरित्र भ्रष्ट करने वाली विचार धाराओं का –

संगठित विरोध कर भारत की रक्षा करना "हिन्दू रक्षा समिति" का उद्देश्य है।

सदस्यता :

१-५००१) वार्षिक देने वाले "संचालक सदस्य" होंगे।

२-१००१) वार्षिक देने वाले "संरक्षण सदस्य" होंगे।

३-५०१) वार्षिक देने वाले "सहायक सदस्य" होंगे।

४-२५१) वार्षिक देने वाले "दाता सदस्य" होंगे।

५-१०१) वार्षिक देने वाले "पोषक सदस्य" होंगे।

६-५१) वार्षिक देने वाले "विशिष्ट सदस्य" होंगे।

७-२५) वार्षिक देने वाले "सहयोगी सदस्य" होंगे।

८-१२) वार्षिक देने वाले "साधारण सदस्य" होंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत अन्तर्राष्ट्रीय षड्यंत्रों के घेरे में

—धर्मपाल शर्मा

स्वतंत्रता का स्वर्ण विहान होकर अभी इसका सुखद प्रकाश करोड़ों देशवासियों की झोंपड़ियों तक पहुंचा भी नहीं था, सैकड़ों वर्ष की दासता के अंधेरे बन्धनों से अभी उन्होंने मुक्ति पाई भी नहीं थी कि इस स्वतंत्रता सूर्य को निगलने वाली काली आंधी चारों ओर से मंडरा उठी। हजारों देशभक्तों के असीम बलिदान से प्राप्त आजादी की रक्षा करने का दायित्व संभालने वाले देशभक्त राष्ट्रवादी भारतीय इस स्वर्ण विहान काल से ही ऐसी गहन निद्रा में सोये रहे कि भारत माता को पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ने वाले चोर-लुटेरों ने अपना जाल द्रुतगति से फैलाना शुरू कर दिया। इन विदेशी लुटेरों ने अपने क्रीतदास हस्तकों के बल पर देश के स्वतंत्र उपवन की सीमाओं पर और कशमीर से कन्याकुमारी तथा कच्छ से कामरूप (असम) तक षड्यंत्रों की आग लगानी शुरू कर दी और देशभक्त भारतीय समाज इन सब लपटों से अनजान बनकर शुतुरमुर्ग की तरह रेत में गर्दन गड़ाकर खतरे से अनभिज्ञ बनने का नाटक करता रहा। किन्तु खतरे से आँखें मूंदने से क्या कभी खतरा टला है ?

यद्यपि साम्राज्यवादी शक्तियों का यह खतरा विश्वव्यापी है, किन्तु भारत उनकी षड्यंत्रकारी योजना का मुख्य केन्द्र है। ईसाइयत, इस्लाम और कम्युनिज्म की इन शक्तियों ने समूचे विश्व को अपने खूनी पंजे में समेटने का षड्यंत्र व्यापक पैमाने पर शुरू कर रखा है, किन्तु भारत इन सबको एक ऐसा आकर्षक केन्द्र नजर आ रहा है, जिस पर सबकी गिद्धदृष्टि एक साथ केन्द्रित है। इसका कारण है भारत की भौगोलिक स्थिति और प्राकृतिक संपदाओं से भरपूर इसकी वसुन्धरा। पश्चिमी राष्ट्रों की बहुराष्ट्रीय व्यापार कम्पनियों ने पिछले दिनों लन्दन में हुए सम्मेलन में कहा था कि अतुल खनिज संपदा और कच्चे माल के भंडार के कारण भारत ही एक ऐसा देश है, जहां बहुराष्ट्रीय निगमों के व्यापार की सर्वाधिक संभावनाएं है। उनके अनुसार यह आज भी सोने की चिड़िया है, जिसके पास तकनीक और दोहन शक्ति का अभाव है और इसलिए बहुराष्ट्रीय निगम इस देश में अपने व्यापार की जड़ें गहरी जमा सकते हैं।

पाश्चात्य राष्ट्रों के बहुराष्ट्रीय निगमों के उक्त चिंतन से स्पष्ट है कि भारत आज भी उनकी दृष्टि में सोने की चिड़िया है जिस पर उनकी दृष्टि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गड़ी हुई है। इन्हीं औद्योगिक चिंतकों के अनुसार भारत का नेतृत्व इन अपार साधनों का उपयोग नहीं कर पाया। इसका कारण देश के कुशल तकनीक और दोहन शक्ति की क्षमता में कमी ही रहा है। लेकिन इन तथ्यों के कारण यह निर्विवाद है कि साम्राज्यवादी शक्तियों ने अपना उपनिवेश बनाने के लिए भारत को उपर्युक्त कारणों से ही सर्वाधिक उपयुक्त समझा और इसे अपने विश्व साम्राज्य की रणभूमि बनाने का संकल्प किया।

पश्चिमी राष्ट्रों का षड्यंत्र

महान् अफ्रीकी स्वातंत्र्य योद्धा जोमो केन्याता ने ईसाई मिशनरियों के षड्यंत्रों का पर्दाफाश करते हुए कहा था, "जब ईसाई मिशनरी इस देश (अफ्रीका) में आए तब अफ्रीकियों के पास जमीन थी और मिशनरियों के पास बाइबिल। उन्होंने हमें आंखें बन्द करके प्रार्थना करना सिखाया। जब हमने आँखें खोलीं, तब देखा कि उनके पास जमीन है और हमारे पास बाइबिल।" जोमो केन्याता के इस मार्मिक कथन से स्पष्ट है कि ईसाई मिशनरियों का विश्वभर में धर्म प्रचार की आड़ में कितने घृणित साम्राज्यवादी विस्तार का उद्देश्य रहा है। मानवता की सेवा के नाम पर फेंके गये जाल में किस प्रकार इन्होंने संसार भर के लोगों को पराधीनता की जंजीरों में जकड़ा है।

मिशनरियों द्वारा पूर्वांचल में षड्यंत्र

भारत का समस्त पूर्वांचल आज ईसाई मिशनरियों के षड्यंत्रों की लपटों में झुलस रहा है। मिजोरम, नागालैंड, मणिपुर, बिहार, मध्यप्रदेश तथा पश्चिमी बंगाल के आदिवासी क्षेत्रों में मिशनरी षड्यंत्रों के राष्ट्रविरोधी कारनामे अब जगजाहिर हो चुके हैं। इन तीनों राज्यों के १८ जिलों को पृथक् झारखंड राज्य बनाने की मांग ने हिंसात्मक और भूमिगत रूप ले लिया है। इन क्षेत्रों के मकानों की दीवारों पर 'भारतीय कुत्तो, वापिस जाओ' जैसे नारे अंकित किए गए हैं। यह सारी समस्या इन क्षेत्रों को धर्मान्तरण द्वारा ईसाई-बहुल बनाने के बाद ही शुरू हुई है। त्रिपुरा के नरसंहार के पीछे भी ईसाई मिशनरियों के अपार धन और षड्यंत्र का हाथ स्पष्ट हो चुका है। पश्चिम बंगाल में मिशनरियों द्वारा पृथक्ता की ज्वाला भड़काने के तथ्य को गृह राज्य-मंत्री योगेन्द्र मकवाना ने भी स्वीकार किया है। पश्चिम बंगाल सरकार ने विगत २६ अगस्त को मिशनरियों द्वारा संचालित अनेक संस्थाओंको राष्ट्र-पाश्चात्य राष्ट्रों का उपनिवेश बनाने का इनका गम्भीर षड्यंत्र इस समय चरम बिन्दु पर है।

षड्यंत्र की साक्षियां

ईसाई मिशनरियों द्वारा पूर्वांचल में भड़काई गई देशद्रोह की ज्वाला अचानक नहीं भड़क उठी। भारत में ब्रिटिश शासन के काल से ही इनके षड्यंत्र जारी रहे हैं। स्वतंत्रता के बाद निरन्तर अनेक जांच रिपोर्टों और चेतावनियों द्वारा ये सामने आते रहे हैं, लेकिन भारतीय जनमत की चिर-निद्रा और राष्ट्र के कर्णधार शासकों की उपेक्षा के कारण षड्यंत्र की लपटें आज अनियंत्रित होती दीख रही हैं। मिशनरियों के षड्यंत्रों की जांच के लिए नियुक्त बहुचर्चित नियोगी समिति के सदस्यों ने अपनी रिपोर्ट में इन षड्यंत्रों का रहस्योद्घाटन करते हुए कहा था कि "जब हम जांच के लिए दौरे पर जसपुर क्षेत्र में थे तो वहाँ हमारे सामने यह आम शिकायत सुनी गई

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कि ईसाई प्रचारक गाँव वालों को कहते फिरते हैं कि जब से जवाहर राज्य स्थापित हुआ है, सुख का नाम-निशान नहीं है। लेकिन हम विश्वास दिलाते हैं कि जवाहर राज्य अब समाप्त होने वाला है और ईसाई राज्य आने वाला है।" इसी प्रकार 'घर बन्धु' नामक-पत्र के जून १९५२ अंक में एक लेख 'निराला राज्य और उसके कर्मचारी' में देशद्रोहपूर्ण सामग्री इस प्रकार छपी थी—"आज हमारे सामने सरगुजा का विस्तृत राज्य है जिसे मसीह के साम्राज्य में मिलाना है।" मसीह साम्राज्य से इनका तात्पर्य पाश्चात्य ईसाई राष्ट्रों से ही है। २४ मई १९७९ को भारत के राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री को भेजे ज्ञापन में नागारानी गाइडिलो ने अपील करते हुए लिखा था—"आपसे मेरी यह साग्रह अपील है कि पाश्चात्य देशों से आ रही अपार धन राशि को, जो हमारी संस्कृति तथा जीवन दर्शन का गला दबोच रही है, कृपा कर कोई कड़ा प्रशासनिक कदम उठाकर शीघ्र बन्द करें।" देशभक्त रानी ने आगे लिखा था—'हम लोग आए दिन यह सुन रहे हैं तथा ईसाई पत्र-पत्रिकाओं में पढ़ रहे हैं कि भारतवर्ष पश्चिमी देशों का ईसाई मिशन फील्ड है और वह हमेशा खुले रूप में यह घोषणा करते हैं कि चाहे जैसे भी हो, भारतवर्ष को ईसा की भूमि में परिवर्तन करना है।"

धर्मप्रचार की आड़ में जासूसी

धर्मप्रचार की आड़ में राष्ट्रविरोधी प्रचार से बड़ा अपराध कुछ ईसाई मिशनरियों द्वारा सीधे जासूसी जैसा जघन्य देशद्रोहपूर्ण कृत्य किया जाना है। नई दिल्ली से प्रकाशित टाइम्स आफ इंडिया के १७ दिसम्बर १९७५ के अंक में प्रकाशित समाचार के अनुसार "सी. आई. ए. द्वारा ईसाई मिशनरियों का जासूसी के घृणित कार्य के लिए उपयोग किया जाना अत्यधिक चौंका देने वाली बात है। लेकिन इससे भी अधिक चिंताजनक बात यह है कि चर्च स्वयं इस अनुचित कृत्य में लिप्त है। सी. आई. ए. के अध्यक्ष (तत्कालीन) मि. विलियम कोल्बे ने इस तथ्य को गुप्त नहीं रखा कि किस प्रकार कुछ ईसाई पादरी उनके संगठन (सी. आई. ए.) के लिए योजनाबद्ध रूप से अनेक वर्षों तक काम करते रहे हैं।

इतना ही नहीं कि सी. आई. ए. ने विदेशों में इन ईसाई मिशनरियों का उपयोग किया हो, विलियम कोल्बे के कथनानुसार इन तथाकथित प्रभुसेवकों में से अनेक महत्त्वपूर्ण गुप्त जानकारियां स्वयं ही देते रहते हैं।

अमरीकी मिशनरी अनेक विकासशील देशों में कार्य कर रहे हैं। वे इन देशों में योजनाबद्ध रूप से अमरीका समर्थक राजनीतिक वातावरण बनाने का लक्ष्य अपनाकर कार्य कर रहे हैं, लेकिन कांग्रेस में सी. आई. ए. के इन हस्तकों का पर्दाफाश हो जाने के बाद यह संभावना बढ़ गई है कि इन देशों की जनता इनके कार्यों पर सन्देह करे और अधिक देशों की सरकारें इनकी गतिविधियों पर कठोर निगरानी रखें।"

भारत सरकार की धार्मिक सहिष्णुता और धर्मनिरपेक्षता का दुरुपयोग करते हुए ईसाई मिशनरियों ने देश की स्वतंत्रता के विरुद्ध जो षड्यंत्र शुरू किये हुए हैं, उन्हें कोई भी जागरूक सरकार नजर अन्दाज नहीं कर सकती। १७ सितम्बर १९७६ को प्रकाशित 'ब्लिट्ज' साप्ताहिक के एक समाचार के अनुसार "ब्लिट्ज द्वारा इस क्षेत्र का लगभग एक सप्ताह तक गहन सर्वेक्षण करने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के दौरान बहुत-से भारतीय मिशनरियों की भारतविरोधी गतिविधियों का पता चला है। इस कार्य के लिए इन्हें राजनयिक माध्यमों से अपार धन दिया जाता है। पीड़ितों और निर्धनों की मदद के नाम पर यहाँ (हिमालय के तराई क्षेत्र में) मुख्य केन्द्रों पर रंगारंग महफिलें आयोजित की जाती हैं, जिनमें सैनिक अधिकारियों को मनोरंजन के लिए आमंत्रित किया जाता है।"

ये कुछ सीमित उदाहरण हैं, जिनसे पता चलता है कि राष्ट्रविरोधी षड्यंत्रों के अतिरिक्त किस प्रकार ईसाई मिशनरी इस देश में पाश्चात्य राष्ट्रों के लिए जासूसी करने जैसे जघन्य अपराध करने में लिप्त हैं।

इस्लामी सांस्कृतिक आक्रमण का खतरा

मुरादाबाद और देश भर में हुए मुस्लिम लीगी मनोवृत्ति के खुले विद्रोह और पुलिस पर आक्रमण के माध्यम से राज्य के विरुद्ध बगावत ने सामान्य जनता को स्पष्ट कर दिया है कि ये सांप्रदायिक दंगे नहीं अपितु राष्ट्रविरोधी सुनियोजित षड्यंत्र है। एक ही समय पर एक साथ मस्जिद से आग्नेयास्त्रों का अपार भंडार पाया जाना और उसका खुलकर प्रयोग करना साजिश को स्पष्ट कर देता है। लेकिन देश में हुई इस प्रकार की खूनी साजिशों के कुछ अध्यायों को उलटने से स्पष्ट हो जाता है कि इन वारदातों के पीछे सामयिक उत्तेजना या कोई छोटी-मोटी मांगें नहीं, अपितु एक विस्तृत विभाजन की दूसरी योजना ही है। दुर्भाग्य से मुस्लिम संघर्ष की इस सुनियोजित चाल को देश का नेतृत्व और राष्ट्रवादी जनता या तो शायद समझती नहीं है या जानबूझकर इसकी उपेक्षा की जाती है।

देखने में आया है कि मक्का में अलअक्सा मस्जिद पर किसी सशस्त्र मुस्लिम गिरोह द्वारा आक्रमण किया गया हो, लन्दन में कुछ ईरानी छापामारों को बंधक बनाया गया हो अथवा विश्व में कहीं कोई भी ऐसी मुस्लिम गड़बड़ रही हो, भारत के मुस्लिम लीगी यहां दंगे प्रारंभ कर देते हैं और हिन्दू मन्दिरों और मूर्तियों को तोड़कर तथा उनकी हत्या करके अपना रोष प्रकट करते हैं। प्रश्न यह उठता है कि इन घटनाओं का भारत में हिन्दुओं से विरोध का क्या अर्थ है ? क्या हिन्दुओं के कहने से ये घटनाएं विश्व में घटित होती हैं ? स्पष्ट है कि समय-समय पर मुस्लिम सशस्त्र शक्ति के प्रयोग का बहाना ढूंढकर ये तत्त्व विभाजन का पूर्वाभ्यास किया करते हैं और देखा करते हैं कि यह तैयारी किस मात्रा में देश में फैली और बढ़ी है।

भारत में एक पृथक् पाकिस्तान बनाने का यह इस्लामी षड्यंत्र १९४७ के विभाजन के बाद से ही प्रारंभ हो चुका है। अतीत में मुरादाबाद में हुए दंगों में इस प्रकार के नक्शे भी ऐसे तत्त्वों से प्राप्त हुए हैं, जिनमें भारत के मुस्लिमबहुल भाग विशेषकर उत्तर प्रदेश के कुछ जिलों को, जिनमें बिजनौर, मुरादाबाद, रामपुर, मेरठ आदि हैं, पाकिस्तान के नक्शे में दिखाया गया है। इस बृहत् योजना का उद्देश्य यह है कि अन्ततोगत्वा पश्चिमी पाकिस्तान से असम तक के क्षेत्र को जोड़ने वाले क्षेत्र को पाकिस्तान में मिला लिया जाये, ताकि शेष भारत में निर्बाध राष्ट्रविरोधी षड्यंत्र करने के लिए पाकिस्तानी संपर्क सड़क मार्ग से अटूट बना रह सके। फिर समस्त भारत पर हरा परचम लहराया जा सके। इस योजना को मूर्त्तरूप देने के लिए देश में लगभग ७६ हजार पाक एजेन्ट कार्यरत हैं, जिनमें से लगभग ५ हजार मुरादाबाद जिले में हैं। मुरादाबाद जिले को इस सारी योजना का विशेष कार्य संचालन केन्द्र

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बनाया गया है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अरब राष्ट्रों के धन की मदद से एक मुस्लिम नेता ने मुरादाबाद के चारों ओर १० मील क्षेत्र में भूमि खरीदी है, जिसमें अपार धन से १० मुस्लिम बस्तियों का निर्माण शुरू हो गया है। बंगलादेश से आए बिहारी मुसलमानों और पाक एजेन्टों को वहां बसाने की योजना प्रारंभ हो गई है। विशेष गतिविधियों का सशक्त केन्द्र बनाने के लिए इस सीमित क्षेत्र में दो अरबी मुस्लिम विश्वविद्यालयों का निर्माण भी शुरू है, ताकि अलीगढ़ की भांति इस क्षेत्र को विद्वेष और सांप्रदायिकता के प्रशिक्षण का बड़ा केन्द्र बनाया जा सके। यह सब कुछ दिन के खुले प्रकाश में भारत सरकार की जानकारी में हो रहा है और मातृभूमि के इस पुनर्विभाजन के खेल को हम नग्न सत्य के रूप में देखने के लिए विवश हो रहे हैं। अपनी शक्ति और भारतीय जनता तथा सरकार के प्रतिरोध को नापने के लिए व्यापक कुचक्र एक साथ दिखाई दे रहा है। भारत में स्थान-स्थान पर राष्ट्रध्वज फाड़कर पैरों तले रौंदा जाता है। पाकिस्तान जिंदाबाद के नारे लगाए जाते हैं और उसी समय सुनियोजित ढंग से पाक जासूसों द्वारा मुरादाबाद के दंगों की ली गई फिल्में पाकिस्तान टेलीविजन पर प्रदर्शित की जाती हैं तथा पाक समाचारपत्रों में तीखे लेख लिखकर इस षड्यंत्रकारी मनोवृत्ति को मदद पहुंचाई जाती है। इस सारे षड्यंत्र को राजनीतिक नेता, सत्ताधारी दल और भारतीय जनता तरह-तरह के नाम देकर लीपापोती करना चाहते हैं, जब कि वास्तविकता स्पष्ट है कि मातृभूमि के विभाजन का सुनियोजित षड्यंत्र अपनी जड़ें फैला रहा है, जिन्हें समय से पूर्व न उखाड़ा गया, तो मुस्लिम पृथक्ता के इस विषवृक्ष के विषमय परिणाम हमें शीघ्र ही भोगने पड़ेंगे।

षड्यंत्र अन्तर्राष्ट्रीय है

भारत में इस्लामी पृथक्तावाद और नया पाकिस्तान बनाने के षड्यंत्र की जड़ें सामान्य धरातल से कहीं नीचे बहुत गहरी हैं। यह षड्यंत्र अन्तर्राष्ट्रीय है। इसकी वास्तविकता को समझ कर ही इस खतरे की गम्भारता को समझा जा सकता है। गत वर्ष लन्दन में सम्पन्न मुस्लिम देशों के सम्मेलन में यह फैसला किया गया था कि गैर-मुस्लिम सरकारों के कब्जे से मुस्लिम भूभागों को मुक्त कराने के लिए अभियान छेड़ा जाये और उक्त निर्णय के अन्तर्गत यह मांग भी की गई कि जम्मू-कशमीर के मामले में निष्पक्ष जनमत-संग्रह कराया जाये। इस सम्मेलन में २७ मुस्लिम राष्ट्रों के करीब एक सौ प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। मुस्लिम देशों के उक्त सम्मेलन में लिए गए निर्णयों तथा पारित किए गए प्रस्तावों से यह बात साफ हो गई है कि अन्तर-राष्ट्रीय क्षेत्र में इस्लाम के नाम पर एक नई सांप्रदायिक और जहरीली शक्ति खड़ी करने का प्रयास किया जा रहा है। मुस्लिम देशों के मुल्ला-मौलवियों का यह षड्यंत्र यदि सफल हो जाता है, तो सारे विश्व में सांप्रदायिकता की आग भड़कने की संभावना हो सकती है, जिसके दूरगामी परिणाम विश्व की सभ्यता और संस्कृति के लिए बड़े खतरनाक होंगे।

यह एक विडंबना है कि जब अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में मानवता और बन्धुत्व के प्रयास किये जा रहे हैं, संयुक्त राष्ट्र संघ की अनेक संस्थाएं विश्व को एक सूत्र में बाँधने के लिए प्रयत्नशील हैं, उसी समय अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में मुस्लिम साम्राज्यवाद की बात की जा रही है। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में जब

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सौहार्द का वातावरण बनाने के प्रयत्न जारी हैं, तब इस प्रकार के इस्लामी सम्मेलनों का आयोजन और इनके प्रस्तावों द्वारा घृणा और हिंसा का वातावरण बनाने की पृष्ठभूमि तैयार की जा रही है।

इस्लामी राष्ट्रों की साजिश है कि मुस्लिम जनसंख्या के दबाव वाले देशों के इस्लामीकरण के लिए द्रुत गति से सुनियोजित उपाय किए जाएं, ताकि उन्हें स्वतंत्र इस्लामी राज्य बनाया जा सके। इस कार्य के लिए दक्षिण एशिया में इस्लामीकरण के लिए मुस्लिम राष्ट्रों ने २० अरब रुपये की राशि तय की है। इस धन के द्वारा दक्षिण-पूर्व एशिया के इन देशों में मुसलमानों को सैनिक आधार पर संगठित करने की योजना बनाई गई है, ताकि वे अल्पसंख्यक होने के बावजूद अपने संगठित शस्त्र बल के आधार पर उन देशों में अपनी अधिकतम मांगें मनवाकर इस्लामीकरण की पृष्ठभूमि बनाने के कार्य को आगे बढ़ा सकें। अपनी शक्ति का परिचय देने के लिए समय-समय पर दंगे और सशस्त्र संघर्ष भी इसी योजना का अंग हैं। पाकिस्तान इस इस्लामी योजना का नेतृत्व करने की कोशिश कर रहा है। पाकिस्तान की भौगोलिक स्थिति, विस्तार तथा जनसंख्या इस नेतृत्व के लिए प्रमुख प्रेरक कारण हैं। इसलिए इस्लामी राष्ट्रों द्वारा इस्लामी अणुबम बनाने के लिए पाकिस्तान को हर प्रकार की मदद दी जा रही है। इस उद्देश्य के लिए इस्लामिक इन्स्टीट्यूट आफ डिफेन्स टैक्नॉलॉजी की स्थापना भी की गई है। इस्लामी राष्ट्रों की योजना है कि मुस्लिम राष्ट्रों की तीसरी सैन्यशक्ति के केन्द्र के रूप में पाकिस्तान को विकसित किया जाये। इस प्रकार पाकिस्तान न केवल भारत विभाजन के स्वप्न देखता है, अपितु इस्लामी राष्ट्रों की शह से यह विश्व के इस्लामीकरण का नेतृत्व करना चाह रहा है। बहर हाल इस पृष्ठभूमि में अन्तर्राष्ट्रीय षड्यंत्रों की पूर्ति के लिए काफी बड़ी जनसंख्या वाले, सुरम्य भारत पर मुस्लिम राष्ट्रों की दृष्टि केन्द्रित है और वे सर्वप्रथम किसी न किसी प्रकार इस विशाल साधनसंपन्न और विशिष्ट देश को इस्लामी देश बनाने का स्वप्न पूरा कर लेना चाहते हैं।

इस्लामी सभ्यता का रूप

विश्व के इस्लामीकरण की योजना बनाने वाली यह इस्लामी व्यवस्था संसार को सुख-शान्ति और प्रगति का सन्देश देने वाली नहीं है, अपितु भयानक विनाश के नरक में झोंकने वाली है। इस्लामी राष्ट्रों के आपसी नरसंहार और क्रूरता के परिप्रेक्ष्य में इसे देखा जा सकता है। पाकिस्तान का इतिहास हमारे सामने है, जहाँ कभी जनतंत्र का नामो-निशान नहीं रहा, जिसके शासकों का दुःखद अन्त क्रमशः निर्वासन और हत्याओं के रूप में होता रहा है। पाकिस्तानी जन्नत का हश्र भी स्पष्ट ही है। वहां आर्थिक ढांचा चरमरा रहा है। सामान्य नागरिक कराह रहा है। ईरान में शाह के सत्ता से हटने के बाद आयतुल्ला खुमैनी के मतान्ध नेतृत्व में हजारों लोगों को मौत के घाट उतारा जा रहा है। क्रान्ति अपनी ही सन्तानों का भक्षण कर रही है। ईरान को फिर १३वीं शताब्दी के गहरे अंधेरे में ढकेलने की कोशिश हो रही है। यही कोशिश पाकिस्तान और अन्य इस्लामी राष्ट्रों में भी जारी है। नतीजा यह है कि नई सभ्यता और बीसवीं शताब्दी की जागृत परम्पराओं में उड़ान भरने वाली नई पीढ़ी १३वीं सदी के अंधेरे और दकियानूसी माहौल में लौटने को तैयार नहीं है। इसलिए इन इस्लामी देशों में ज्वालामुखी सुलग रहा है, जो सैनिक और निरंकुश तानाशाही शासकों की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बन्दूक तले कुछ समय के लिए भले ही दब जाये, लेकिन अन्ततोगत्वा इन्हें भी उखाड़ फेंकेगा। इस्लामी स्वर्ग के ये फरिश्ते दुनिया को अपना अंधेरा बांटने चले हैं। इस अंधेरे और जहालत में पनप रहे अपराधों की कोई सीमा नहीं। इन्हें दबाने के लिए बर्बर युग के दंडविधान कोड़ों, पत्थरों से मार-मार-कर संगसार करना और हाथ-पैर काटना आदि सजाओं का प्रयोग किया जा रहा है, लेकिन अपराध बढ़ते ही जा रहे हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय कुचक्रों के तहत इस प्रकार ईसाई मिशनरियों और मुस्लिम देशों के षड्यंत्र देश की सीमाओं और आन्तरिक शान्ति-व्यवस्था के लिए भयंकर खतरा बन चुके हैं। सांस्कृतिक आक्रमण, धर्म परिवर्तन और फिर सीधी कार्रवाई के द्वारा स्थिति को विस्फोटक बनाकर न केवल भारतीय सभ्यता, संस्कृति और जीवन मूल्यों के लिए खतरा पैदा किया जा रहा है, अपितु इस देश के हिन्दू समाज का अस्तित्व ही संकटग्रस्त बनाया जा रहा है।

यह ऐतिहासिक सत्य है कि धर्मान्तरण और विदेशी घुसपैठ द्वारा जहां-जहां हिन्दू समाज अल्पमत में हुआ और ईसाई या इस्लाम मतावलम्बी समाज बहुसंख्या में हुआ, उन भागों में भारत-विरोधी भावनाएं पनपीं और वहां से पृथक्ता के स्वर उभरे हैं। भारत-विभाजन द्वारा इसी आधार पर पाकिस्तान की स्थापना के बाद सीमावर्ती क्षेत्रों को सुनियोजित ढंग से मुस्लिम और ईसाई-बहुल बनाने के ये अन्तर्राष्ट्रीय षड्यंत्र चलते रहे हैं। जनसंख्या के दबाव के जोर पर पृथक् राज्यों की मांग और उसके बाद इन सीमावर्ती क्षेत्रों में विदेशी अड्डे बनाकर देश की स्वतंत्रता पर आघात करने का सीधा मार्ग खोजना इन शक्तियों का उद्देश्य है। यह भी एक कटु सत्य है कि ऐसे विधर्मी क्षेत्रों से हिन्दू समाज का सदैव क्रूरतापूर्वक निष्कासन होता रहा है और वह अपने ही घर में पराया बनकर या तो मौत के घाट उतारा गया है अथवा द्वितीय श्रेणी का नागरिक बनकर रह गया है। पाकिस्तान में बच रहे ३ करोड़ हिन्दुओं की संख्या घटकर एक करोड़ से भी कम रह जाना और भारत के ४ करोड़ मुसलमानों की संख्या बढ़कर ६ करोड़ तक हो जाना इसी तथ्य का परिचायक है। अतः सारे भारत में विदेशी घुसपैठ और आक्रमणों के बाद हिन्दू जीवन मूल्यों और इस समाज के लिए हिन्द महासागर के सिवा कहीं स्थान शेष नहीं रह जाता। विश्व के अन्य देशों में भी हिन्दू प्रवासियों की उपेक्षा और दुर्दशा इस तथ्य का द्योतक है। इसलिए भारत पर हो रहे वर्तमान सांस्कृतिक आक्रमण न केवल भारत की भौगोलिक सुरक्षा के लिए खतरे का संकेत करते हैं, अपितु ये हिन्दू समाज के अस्तित्व के लिए भी गम्भीर खतरा हैं।

संपूर्ण विश्लेषण के परिप्रेक्ष्य में यह स्पष्ट है कि यदि भारत और हिन्दू समाज का अस्तित्व सम्भव है, तो वह केवल राष्ट्रीय चेतना के जागरण से ही संभव है। धर्मनिरपेक्षता की आड़ में द्रुत गति से मजहबी राज्य समर्थक शक्तियां पनप रही हैं और ये ऐसी सांप्रदायिक व मजहबी शक्तियां हैं, जिनकी निष्ठा भारत के बाहर है तथा जिनकी असहिष्णुतापूर्ण मनोरचना में धर्मनिरपेक्षता के लिए कोई स्थान नहीं हैं। अतः भारतीय जीवन मूल्यों, राष्ट्रीय सुरक्षा और गौरवमयी संस्कृति की रक्षा के मार्ग में वर्तमान संकट राष्ट्रवादी तत्त्वों के लिए एक गम्भीर चुनौती है। यदि समय रहते इस संकट की चुनौती को स्वीकार कर राष्ट्रीय जनमत जागृत न किया गया, तो षड्यंत्रकारी शक्तियां स्वतन्त्रता के अरुणोदय काल में ही देश के स्वातन्त्र्य सूर्य को ग्रस्त कर लेंगी, इसमें सन्देह नहीं है।

● ● ●

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति की स्थापना

(हमारे विशेष प्रतिनिधि से)

१४ सितम्बर, १९८०। करोल बाग (नई दिल्ली) के हरध्यान सिंह मार्ग पर स्थित वेद मन्दिर के कार्यालय में ३० से अधिक प्रतिष्ठित सज्जन और देवियां उपस्थित थे, जब हिन्दू हितों की रक्षा और तदर्थ जनजागरण के लिए हिन्दू रक्षा समिति की स्थापना की गई।

इस अवसर पर अखिल भारत हिन्दू महा सभा के प्रधान प्रोफ़ैसर रामसिंह, दिल्ली के भूतपूर्व डिप्टी मेयर और आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री देसराज चौधरी, हिन्दू महा सभा के मन्त्री श्री दिवाकर देशपांडे, सनातनधर्मियों के मान्य नेता डॉक्टर गोस्वामी गिरिधारी लाल, दयानन्द संस्थान के आचार्य महात्म वेदभिक्षुः, संस्थान की अध्यक्ष पंडिता राकेश रानी, दयानन्द कालेज, अजमेर के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष प्रोफ़ैसर धर्मवीर, प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् पंडित अभिविनय भारथी, हिन्दू रक्षा दल के प्रधान श्री इन्द्रसेन शर्मा, युगवार्त्ता के सम्पादक श्री धर्मपाल शर्मा, श्री मती भाग्यवती प्रभाकर, श्रीमती कल्पना देशपांडे, दैनिक वीर अर्जुन के समाचार सम्पादक श्री बनारसी सिंह, दैनिक नव भारत टाइम्स के वरिष्ठ उपसम्पादक श्री रत्नसिंह शांडिल्य, गुरुकुल प्रभात आश्रम के श्री सोमदेव शतांशु, भाई मतिदास स्मारक समिति के मन्त्री डॉ० परसराम छिब्बर श्री अशोक कुमार छिब्बर, करोल बाग के प्रसिद्ध समाजसेवी श्री विशन दास पटवारी, रामजस कॉलेज के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष श्री रघुवीर वेदालंकार, श्री देवकी नन्दन शर्मा एडवोकेट, 'जनज्ञान' के सुपरिचित स्तम्भ लेखक श्री सत्यपाल शास्त्री इत्यादि उपस्थित थे।

सबसे पहले महात्मा वेदभिक्षुः के प्रस्ताव पर श्रीमती भाग्यवती प्रभाकर ने सभानेत्री का आसन ग्रहण किया। विधिवत् कार्रवाई प्रारम्भ होने पर महात्मा वेदभिक्षुः ने बताया कि इस सभा को बुलाने की आवश्यकता क्यों पड़ी। महात्माजी ने बताया कि किस प्रकार राष्ट्रविरोधी शक्तियां एक नये पाकिस्तान और ईसालैंड की स्थापना के लिए प्रयत्नशील हैं। हिन्दू-मुस्लिम दंगे भड़काये जा रहे हैं। अल्पसंख्यकों को संरक्षण देने के नाम पर तुष्टीकरण की नीति चल रही है। उन्होंने घोषणा की कि अब तक हम भारत रक्षा समिति के नाम से कार्य करते रहे हैं, लेकिन अब प्रो. रामसिंह के सुझाव पर समिति का नाम बदल कर हिन्दू रक्षा समिति कर दिया गया है।

काफी देर तक नाम को लेकर गरमा-गरम बहस होती रही। पं० अभिविनय भारथी बार-बार जोर देकर कहते थे कि इस संगठन का नाम हिन्दू रक्षा वाहिनी रखा जाये। अन्ततः सब इस बात पर सहमत हो गये कि हिन्दू रक्षा समिति नाम ही ठीक रहेगा।

प्रो० रामसिंह ने विस्तारपूर्वक सारी स्थिति पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि किस प्रकार 'इन्डियन एक्सप्रेस में प्रकाशित श्री कुलदीप नैयर के लेख पर श्री के० नरेन्द्र ने नैयर साहब को समझाना चाहा कि इस्लाम शान्ति का उपदेश नहीं देता और श्री नरेन्द्र नैयर साहब को लेकर जामा मस्जिद गये, ताकि मुल्ला-मौलवियों, मौलानाओं से उन आयतों की व्याख्या करने को कहा जाये, जिनमें काफिरों को कत्ल करने की बात कही गई है, लेकिन इस्लाम का पक्ष प्रस्तुत करने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के लिए कोई नहीं आया। अन्त में प्रोफेसर साहब ने कहा कि कट्टर हिन्दू बने बिना काम न चलेगा।

श्री देवकी नन्दन शर्मा एडवोकेट ने कहा कि साम्प्रदायिक दंगे वहीं होते हैं, जहाँ मुसलमानों का बहुमत है। (याद रहे कि मुरादाबाद में मुसलमानों की जन-संख्या ६० प्रतिशत है।) यह तथ्य स्पष्ट हो जाने पर भी दंगापीड़ित क्षेत्रों में सरकारी सहायता मुसलमानों को ही दी जाती है। उन्होंने यह भी कहा कि पुलिस पर आक्रमण राजद्रोह है। "पुलिस में मुसलमानों के लिए सीटें सुरक्षित करना अनुचित है।"

श्री इन्द्रसेन शर्मा का यह सुझाव स्वीकृत हुआ कि राजधानी के टाउन हाल में एक सार्वजनिक सभा आयोजित की जाये, ताकि जनता सारी स्थिति से परिचित हो।

श्री रघुवीर वेदालंकार का मत था कि विशाल पैमाने पर युवकों का सशक्त संगठन स्थापित किया जाये।

डा० परसराम छिब्बर एक पेपर लिखकर लाये थे, जिसमें काबा की मस्जिद पर हुए कब्जे की घटना के फलस्वरूप भारत में हुए उपद्रवों से लेकर अब तक के दंगों का विश्लेषण था। उनका एक सुझाव यह भी था कि हिन्दुओं का पक्ष सरकारी नेताओं के समक्ष प्रस्तुत किया जाये।

श्री दिवाकर देशपांडे ने कहा कि मुसलनमानों ने पुलिस पर आक्रमण इस लिए किये हैं, ताकि जब पुलिस आत्मरक्षार्थ गोली चलाये, तब यह मांग करने का अवसर मिल जाये कि पुलिस में मुसलमानों की संख्या कम होने के कारण मुसलमानों पर अत्याचार होते हैं, इसलिए पुलिस में मुसलमानों की संख्या बढ़ाई जाये। उन्होंने कहा कि हमारे सामने पहला काम यह है कि हम डेपुटेशन बना कर दंगापीड़ित नगरों का दौरा करें, स्थिति की जांच करें और पीड़ित हिन्दुओं की सहायता करें। यह कार्य तुरन्त प्रारम्भ कर दिया जाना चाहिए।

श्री बनारसी सिंह ने कहा कि इस बात से चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं कि एक ही उद्देश्य की पूर्ति के लिये इतने सारे संगठन क्यों ? हां, ये सब संगठन मिलकर काम करें। हमारी जो सभाएँ हों, उनमें सिखों, जैनियों आदि उन सभी मतावलम्बियों को निमन्त्रित किया जाये, जिनके मतों का प्रारम्भ भारत में हुआ। (इस स्थल पर डा० गोस्वामी गिरिधारी लाल ने कहा कि सरकार सिखों को भी अल्पसंख्यक के रूप में पेश करना चाहती है। पाकिस्तान में भी सिखों को मुसलमानों के समीप लाने का प्रयास चल रहा है। सिख धर्म स्थानों की यात्रा के लिए सिखों को जितनी सुविधाएँ दी जाती हैं, हिन्दुओं को उतनी भी सुलभ नहीं। श्री बनारसी सिंह का सुझाव था कि भविष्य में जो सार्वजनिक सभा हो, उस में सिख और जैन प्रतिनिधि भी निमन्त्रित किये जायें।

इसके बाद समिति के पदाधिकारियों और कार्यकारिणी का चुनाव हुआ। प्रो० रामसिंह संरक्षक, महात्मा वेदभिक्षु : प्रधान और श्री दिवाकर देशपांडे मन्त्री चुने गये। सर्व श्री देवकीनन्दन शर्मा, इन्द्रसेन शर्मा, रघुवीर वेदालंकार, धर्मपाल शर्मा, डा० परसराम छिब्बर, प्रो० धर्मवीर, स्वामी विवेकानन्द, पं० अभिविनय भारथी, बनारसी सिंह, शिवदत्त शर्मा, चमनलाल क्षत्रिय और सुन्दरदास कार्य-कारिणी के सदस्य निर्वाचित हुए। शेष अधिकारियों के चयन का अधिकार अध्यक्ष को दिया गया।

अल्पाहार के बाद शान्तिपाठ हुआ और सभा विसर्जित हुई।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेद और पुराण

—विद्यासागर शास्त्री

लेखक की मान्यता है कि बड़ी मात्रा में प्रक्षेपों के बावजूद पुराण सर्वथा अनुपयोगी नहीं और उनसे वेदार्थ करने में सहायता मिल सकती है। सब बातों से सहमति न होते हुए भी यह खोजपूर्ण और पठनीय लेख इसलिए प्रकाशित किया जा रहा है, ताकि इस विषय पर गम्भीर अनुसन्धान करके सत्य तक पहुँचा जा सके।

कुछ विद्वान् पुराणों को बेकार कहते हैं, जनसाधारण उनका कथामय आकार समझते हैं, कुछ पाश्चात्य तथा पौरस्त्य विद्वान् इन्हें इतिहास का आकर मानते हैं, कथावाचक इन्हें अपनी जीविका का आधार जानते हैं, इस प्रकार पुराणों के विषय में 'मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्ना' है। इनमें से किसी ने भी इस दृष्टि से पुराणों का अध्ययन नहीं किया कि वेदों से भी इनका कुछ सम्बन्ध है। यदि है तो वह कैसा है ? अनुकूलात्मक या प्रतिकूलात्मक। पुराण तथा वेदों का सम्बन्ध है और वह अनुकूलात्मक है यही दर्शाना इस लेख का उद्देश्य है। वेद प्रसिद्ध हैं चार ऋक् यजुः साम तथा अथर्व। पुराण भी अनेक हैं, कम से कम १८ पुराण तो कहे ही जाते हैं। इनमें क्या है ? इनकी रचना कैसे हुई ? इस विषय को बताने वाला एक श्लोक विष्णुपुराण में आता है—

व्याख्यानैश्चाप्युपाख्यानैर्गाथाभिः कल्पशुद्धिभिः।
पुराणसंहितां चक्रे पुराणार्थविशारदः॥

विष्णु. ३-६-१५

आशय यह है कि पुराणार्थ विशारद अर्थात् पुराण के उपयोग को समझने वाले ऋषि ने आख्यान-उपाख्यान-गाथा तथा कल्पशुद्धि से पुराण की रचना की। अर्थात् पुराण में इन विषयों का प्रतिपादन है। यहां आख्यान से आशय उन कथाओं से है जिनका स्वार्थ में कोई तात्पर्य नहीं होता। अर्थात् इदमित्थंरूपेण यह घटना घटी है यह प्रतिपादन करना आख्यान का उद्देश्य नहीं होता अपितु उसके द्वारा सिद्धान्त विशेष का प्रतिपादन या अप्रतिपादन ही उसका कार्य होता है। इन आख्यानों की शास्त्रीय संज्ञा है 'अर्थवादवाक्य'। वेदार्थ को समझने-समझाने में इनकी आवश्यकता है ऐसा 'ऋषेर्दृष्टार्थस्य प्रीतिर्भवत्याख्यानसंयुक्ता'। (निरु. १.४.४४) लिखकर प्रतिपादन किया है। पुराण तथा महाभारत में आख्यानों द्वारा वेदार्थ का विशदीकरण किया गया है। उपाख्यान से इतिहास अपेक्षित है। किसी विषय के समर्थन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

या निषेध के लिये उपात्त प्राचीन वचन कहाते हैं 'गाथा'। ये वचन पद्यमय होते हैं। ब्राह्मण ग्रन्थों में अनेक गाथायें उपलब्ध हैं। कल्पशुद्धि का सम्बन्ध यज्ञ से है।

वेद यतः ईश्वरवचन थे अतः उनकी सुरक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया। परिणामतः उनमें उनके पाठ में उनकी अनुपूर्वी में थोड़ा सा भी परिवर्तन एवं परिवर्धन नहीं हुआ। पुराणों के प्रवचन तथा इनकी सुरक्षा का भार सूतों को सौंपा गया जिन्होंने इसमें सामयिक इतिहासादि का सम्मिश्रण कर इनके कलेवर में वृद्धि की। इसके अतिरिक्त इनके पाठादि की सुरक्षा पर कोई दृष्टि नहीं रखी गई। इसका परिणाम यह हुआ कि पुराण पूरे गड़बड़झाले बन गये। फिर भी एक कुशल अन्वेषक के लिये इनमें बहुत कुछ उपादेय सामग्री विद्यमान हैं।

इस प्रकार संक्षेप में वेद तथा पुराणों पर विचार करने के पश्चात् इनके पारस्परिक सम्बन्ध की ओर ध्यान देने पर महर्षि व्यास का यह वचन सामने आता है—

पुराणपूर्णचन्द्रेण श्रुतिज्योत्स्नाः प्रकाशिताः।
नृबुद्धिकैरवाणां च कृतमेतत् प्रसादनम्॥

अर्थात् पुराणरूपी पूर्णचन्द्र की ज्योत्स्ना (चांदनी) से श्रुति प्रकाशित हुई श्रौतार्थ का विशदीकरण हुआ और उससे मानवों के मनः कैरव खिल गये। इसी प्रकार इन्होंने अन्यत्र भी कहा है—

इतिहासपुराणाभ्यां वेदार्थमुपबृंहयेत्।
बिभेत्यल्पश्रुतात् वेदो मामयं प्रहरिष्यति॥

आशय यह कि इतिहास तथा पुराण की सहायता से वेदार्थ का उपबृंहण स्पष्टीकरण करना चाहिये। वेद अल्पश्रुत से डरता है कि यह मेरी मट्टी पलीत करेगा। इस प्रकार इन महर्षि व्यास के वचनों से स्पष्ट है कि पुराण भी वेदार्थ के ज्ञापक हैं। इनमें भी वेदार्थ का विशदीकरण हुआ है।

पुराणकारों ने वेदार्थ का विशदीकरण तीन प्रकार से किया है—

१. आख्यानोपाख्यान द्वारा।

२. शब्दपरिवर्तन अथवा शब्द का पारिभाषिक रूप देकर।

३. विषय के स्पष्टीकरण द्वारा।

अब क्रमशः इनका विस्तृत उल्लेख किया जाता है।

आख्यानोपाख्यान द्वारा।

वेद में विभिन्न स्थलों पर निम्न मन्त्र आते हैं—

(क) द्वादशप्रधयश्चक्रमेकं त्रीणिनभ्यानि क उ तच्चिकेत।
तत्राहुतास्त्रीणि शतानि शङ्कवः षष्ठिश्च खीला अविचा चलसः॥

अथ. १०.८.४

द्वादशारं नहि तज्जराय वर्वर्ति चक्रं परिद्यामृतस्य।
आ पुत्रा अग्ने मिथुनासोअत्र सप्तशतानि विंशतिश्च तस्थुः॥
पञ्चपादं पितरं द्वादशाकृतिं दिव आहुः परे अर्धेपुरीषिणम्।
अथेमे अन्य उपरे विचक्षणं सप्तचक्रे षडर आहुरर्पितम्॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पञ्चारे चक्रे परिवर्तमाने तस्मिन् ह तस्थु भुवनानि विश्वा ।
तस्य नाक्षस्तप्यते भूरिभारः सनादेव न शीर्यते सनाभिः ॥

ऋक् १.१६४. ११-१३,४८

यह चक्र क्या है इसका स्पष्टीकरण एक उपाख्यान द्वारा किया गया ।

महाभारत में एक उपाख्यान आता है कि आयोद धौम्य कुलपति के तीन शिष्य थे उपसन्यु, आरुणि और वेद । इनमें से वेद ने विद्याध्ययन के पश्चात् पृथक् अपने गुरुकुल की स्थापना की । उसके पास भी विद्यार्थी आने लगे । इन अध्येता शिष्यों में एक शिष्य उत्तङ्क भी था। जब उत्तंक विद्या समाप्त कर गुरुकुल से समावर्तित होने लगा तो उसने गुरुजी से गुरुदक्षिणा के लिये पूछा । गुरुजी ने उत्तर दिया मैं तुम्हारी गुरुभक्ति से ही अत्यन्त प्रसन्न हूं अतः किसी अन्य गुरुदक्षिणा की आवश्यकता नहीं । शिष्य ने जब पुनः पुनः पूछा तो गुरुजी बोले जाओ अपनी गुरु-माता से जाकर पूछो । उत्तंक गुरुपत्नी के पास गये और उनसे अपना अभिप्राय स्पष्ट किया । गुरु पत्नी बोलीं वत्स यदि मेरा अभीष्ट करना चाहते हो तो राजा पौष्य की पत्नी के कुण्डलों को मांग लाओ । उत्तंक चले गये । जब वे कुण्डल लेकर लौट रहे थे कि मार्ग में ही वे कुण्डल उनसे खो गये । इस पर उत्तंक घबराये । तभी उन्होंने सामने देखा—"स्त्रियौ तन्त्रे अधिरोप्य सुवेमे पटं वयन्त्यौ । तस्मिंश्च तन्त्रे कृष्णाः सिताश्च तन्तवः चक्रं चापश्यत् द्वादशारं षड्भिः कुमारैः परिवर्त्यमानम् । पुरुषं चापश्यदम्वं च ददर्श ।" कि दो स्त्रियां खड्डी पर कपड़ा बुन रही हैं तथा एक बारह अरों वाला चक्र है छह कुमार उसे घुमा रहे हैं । यह देखकर वह घर लौटा । लौटने पर उपाध्याय ने देरी का कारण पूछा । प्रथम तो शिष्य ने आपबीती सुनाई अनन्तर उस दृष्य के विषय में जिज्ञासा की गुरुजी ने उत्तर दिया 'ये ते स्त्रियौ धाता विधाता च, ये ते कृष्णाः सिताश्च तन्तवः ते रात्र्यहनी यदपि यच्चक्रं द्वादशारं षड् वै कुमाराः परिवर्तयन्ति तेपि षड्ऋतवः संवत्सरचक्रम् ।"

इस उपाख्यान को दृष्टि में रखकर उल्लिखित मन्त्रसमुदाय के सुसङ्गत अर्थ करने की कुञ्जी हाथ लग जाती है और हस समझ लेते हैं कि यह वर्णन 'संवत्सर चक्र' का है ।

(ख) अथर्ववेद का एक मन्त्र है।

तन्त्रमेके युवती विरूपे अभ्यक्रामं वहतः षण्मयूखम् ।
अन्यातन्तूंस्तिरते धत्ते अन्या नापवृञ्जाते न गमातो अन्तम् ॥

(अथर्व १०.७.४२)

इसका शब्दार्थ है परस्पर विरूप अर्थात् विरुद्धरूपवाली दो युवतियाँ, सर्व-सम्बद्ध ६ रंगों वाले वस्त्र को बुनती हैं । एक ताना तनती है दूसरी बाना; न तो उनके कपड़ा बुनने का कार्य ही समाप्त होता है और न कपड़ा ही समाप्त होता है ।

उक्त उपाख्यान को दृष्टि में रखकर इस मन्त्र पर विचार किया जाय तो सुसंगत मन्त्रार्थ सामने आता है—

विरूपे-विरुद्धरूपोंवाली एके=स्व स्वकार्य में प्रधान, युवती—सुकृति, दुष्कृति रूप दो युवतियां षण्मयूखम्=रागद्वेषादि ६ रंग वाले अभ्यक्रामम्—सर्व-सम्बद्ध तन्त्रम्—जीवन रूपी वस्त्र को वयत—बुनती हैं अन्या तन्तूं स्तिरते अन्या धत्ते एक ताना बनाती है दूसरी बाना नापवृञ्जते न गमातो अन्तम्—न कपड़े का ही अन्त होता है और न बुनने का ही कार्य समाप्त होता है । योगभाष्यकार व्यास-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देव ने सुकृति दुष्कृति द्वारा बुने जाने वाले इस जीवन वस्त्र का वर्णन निम्न शब्दों में किया है 'तस्माज्जन्मप्रायणान्तरे कृतः पुण्यापुण्य कर्माशय प्रचयो विचित्रप्रधानोपसर्जनभावेनावस्थितः प्रायणाभिव्यक्तः एक प्रघट्टकेन मरणं प्रसाध्य सम्मूर्छित एकमेव जन्मकरोति। (यो.द. २.१३) यह सुकृति तथा दुष्कृति ही पुण्यापुण्य कर्माशय का निर्माण करती हैं। यह जीवन वस्त्र को बुनती हैं। जब तक पुण्यापुण्य का संचय है जीवनरूपी वस्त्र का वयन होता ही रहेगा। निरुक्तकारने भी विश्वामित्र तथा चोरों के आख्यान द्वारा नई सूक्ति का स्पष्टीकरण किया है। इसी प्रकार पुराणों ने अनेक आख्यानोपाख्यानों द्वारा वेदार्थ को हृदयंगम करने कराने का मार्ग प्रदर्शन किया है।

२. (क) शब्दपरिवर्तन द्वारा।

परिवर्तन से आशय है एक शब्द के स्थान हर दूसरा शब्द रख देना जो स्वाभिमात को बोधित कर सके। पुराणों में इस प्रकार का अवलम्बन कर अनेक मन्त्रों का स्पष्टीकरण हुआ है जिनमें से दो का निदर्शन कराया जाता है—

१. (अ) शाखान्तर का मन्त्र है—

न सन्दृशे तिष्ठति रूपमस्य न चक्षुषा पश्यति कश्चनैनम्।
हृदा हृदिस्थं मनसा य एनमेवं विदुरमृतास्ते भवन्ति।

महाभारत में यही मन्त्र दो प्रकार से पढ़ा गया है—

न दर्शने तिष्ठति रूपमस्य पश्यन्ति चैतं सुविशुद्धसत्त्वाः।
हितो मनीषी मनसा न तय्यते ये प्रव्रजेयुरमृतास्ते भवन्ति॥

उद्योग. ४६.२०

यहां 'सन्दृशे' एकपद मानकर उसके स्थान में 'दर्शने' पद रख दिया है बात एक ही है 'दृशे न सन्तिष्ठित' कहिये या 'दर्शने न तिष्ठति' दूसरे स्थान पर—

न सादृश्ये तिष्ठति रूपमस्य न चक्षुषा पश्यति कश्चनैनम्।
मनीषया ये मनसा हृदा च एवं विदुरमृता स्ते भवन्ति।

उद्योग. ४६.६

यहां 'सदृशे' का स्पष्टीकरण 'सादृश्ये' पद से किया है।

आशय यह है कि इनके रूप का सादृश्य कहीं नहीं है। ये अनुपमेय हैं। है भी ठीक वेद कहता है 'न तस्य प्रतिमा अस्ति' (यजुः ३२.३) उनका कोई उपमान है ही नहीं। अर्थात् परमेश्वर के सदृश अन्य दूसरा कोई नहीं है। इस प्रकार इस मन्त्र के पूर्वांश से भगवान् का निरुपमेयत्व सिद्ध हो गया। पहले परिवर्तन से नीरूपत्व और निराकाकात्य सिद्ध होता है।

(ब) ऋग्वेद में पुरुषसूक्तका प्रारम्भ इस प्रकार होता है—

सहस्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतोवृत्वात्यतिष्ठद्दशांगुलम्।
पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्चभाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥ ऋक् १०.९०.१.३

भागवतकाने इन मन्त्रों का स्पष्टीकरण इन दोनों मन्त्रों में से द्वितीय मन्त्र के पूर्वार्ध तथा प्रथम मन्त्र के उत्तरार्ध को निम्न रूप से पढ़कर किया है—

'सर्वं पुरुष एवेदं भूतं भव्यं भवच्च यत्।'
'तेनेदमावृतं विश्वं वितस्तिमधितिष्ठति।'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इसके आग 'उतामृतत्वस्येशानो···' का व्याख्यान 'सोऽमृतस्याभयस्येशो मर्त्यमन्नं यदत्यगात्' (भाग २.६.१६) कहकर किया जा चुका है तथा 'सहस्रशीर्षा' आदि के विषय में 'सहस्रोर्वाङ्घ्रिबाह्वक्षः सहस्राननशीर्षवान्' लिखा जा चुका है) यदि भागवत के इस लेख को मन्त्रानुसारी रख दिया जाय तो निम्न स्वरूप होगा—

सहस्रोर्वङ्घ्रिबाह्वक्षः सहस्राननशीर्षवान् ।
तेनेदमावृतेविश्वं वितस्तिमधितिष्ठति ॥
सर्वं पुरुष एवेदं भूतं भव्यं भवच्च यत् ।
सोऽमृतस्याभयस्येशो मर्त्यमन्त्रंयदत्यगात् ॥

यहां 'स भूमिं विश्वतो वृत्वा' का स्पष्टीकरण 'तेनेदमावृतं विश्वम्' से किया गया है। अर्थात् भूमिपद उपलक्षण है जगत् का। 'अत्यतिष्ठद्दशांगुलम्' का व्याख्यान 'वितस्तिमधितिष्ठत कर रहा है। मन्त्र में केवल भूत भविष्यत् का ही उल्लेख है श्लोक में 'भूतं भव्यं भवच्च यत्' कहकर तीनों कालों का स्पष्ट कथन कर दिया है। 'उत्तामृतत्वस्येशानः' को 'सोऽमृतस्याभयस्येशः' कहकर खोला गया है।

इस प्रकार दोनों मन्त्रों का सरल अर्थ हमारे सामने आ गया।

२ (ख) शब्द विशेष का पारिभाषिक अर्थ बताकर।

कहीं कहीं पुराणकारों ने ऐसा भी किया है कि शब्दविशेष किस अर्थविशेष में पारिभाषिक है इतना बताकर छोड़ दिया है तथा इस प्रकार विशिष्ट वेदमन्त्रों के सुसंङ्गत अर्थ ज्ञान का मार्ग खोल दिया है। ऋग्वेद तथा अथर्व वेद में निम्न मन्त्र आते हैं—

'मातुर्दिधिषुमब्रवं स्वसुर्जारः शृणोतु नः'।
'उत्तानयोश्चम्वोर्योनिरन्तरवा पिता दुहितुः गर्भमाधात्'

इन मन्त्रों में आये 'माता' 'स्वसा' 'दुहिता' शब्दों से क्या ग्रहण करना चाहिये। इस विषय में पुराणकार कहते हैं—

चतुर्धा प्रकृतिर्देवी गुणभिन्ना गुणात्मिका।
एका मा प्रकृतिर्माता गुणसाम्यात् सनातनी ॥
सत्वभूता च 'भगिनी', रजोभूता च 'गेहिनी'।
तमोभूता च या 'कन्या', तस्मै देव्यै नमोनमः ॥

(भविष्य. खं. ४. अ. १२)

आशय यह है कि मूलप्रकृति गुणसाम्य तथा गुणवैषम्य भेद से चार प्रकार की है। साम्यावस्थापन्न प्रकृति 'माता' कहाती है। वैषम्यावस्था में सत्वप्रधान प्रकृति का नाम होता है 'भगिनी' 'स्वसा'। वही रजः प्रधान होकर 'गेहिनी' या 'पत्नी' कही जाती है। तथा तमः प्रधान प्रकृतिकों 'कन्या' या 'दुहिता कहते हैं। इस प्रकार पुराणकारने किसी मन्त्र विशेष के अर्थ को न खोलकर भी विशेष शब्दों के पारिभाषिक अर्थ बताकर मन्त्रों के विशिष्टार्थ ज्ञान का मार्ग विस्तृत कर दिया।

३. विषय के स्पष्टकीरण द्वारा।

विषय के स्पष्टीकरण से आशय है

मन्त्रार्थको अपने शब्दों में इस प्रकार कहना कि जिससे भाव स्पष्ट हो जाय। ऋग्वेद का एक मन्त्र है—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विशोनुं कं वीर्याणि प्रवोचं यः पार्थिवानि विममे रजांसि ।
योऽस्कभायदुत्तरंसधस्थ विचक्रकाणरत्रे धोरुगायः ॥
(ऋक् १.२५४.१)

भागवतकार इस मन्त्र में निदर्शनालङ्कार मानकर इसका स्पष्टीकरण करते हैं । निदर्शनाका लक्षण है

'अभवन्वस्तु सम्बन्ध उपमापरिकल्पितः'

आशय यह कि वस्तुओं का सम्बन्ध न बन सकने पर यदि उपमा की कल्पना करनी पड़े तो निदर्शनालङ्कार होता है । जैसे

दोर्भ्यां तितीर्षति तरङ्गवतीभुजङ्गम्
यस्ते गुणान् गदितुमुद्यमादधाति ।

आशय यह कि जो आपके गुणों का वर्णन करना चाहता है वह समुद्र को तैरकर पारकरना चाहता है । परिणाम यह कि तुम्हारे गुणों का वर्णन करना भुजाओं से समुद्र तरण के सदृश असम्भव है । भागवत में इस मन्त्र का स्पष्टीकरण विभिन्न तीन स्थलों पर आया है किन्तु सर्वत्र दृष्टि एक ही है। एक स्थल पर लिखा है

विष्णोर्नु वीर्यगणनां कतमोऽर्हतीह यः पार्थिवान्यपि कविर्विममे रजांसि ।
चस्कम्भ यन् स्व रहसा स्खलता त्रिपृष्ठं यस्मात् त्रिसाम्यसदनादुरुकम्पमानम्
भाग.२.७.४० ।

आशय यह कि इह कतमः विष्णोः वीर्यगणना महंति=यहां कौन ऐसा है जो भगवान् की शक्ति का उनके बलकावर्णन कर सके ? उत्तर है यः कविः पार्थिवानि रजांसि विममे=जो क्रान्तदर्शी पृथ्वी के परमाणुओं का परिगणन कर सकता है। अर्थात् भगवान् के सामर्थ्य का इयत्तया वर्णन करना वैसा ही असम्भव है जैसाकि पार्थिव यह माणुओं का परिगणन करना ।

एक दूसरे स्थलपर यही बात दूसरे प्रकार से कही है

'भौमान् रेणून् स विममे यो विष्णोर्वर्णयेद्गुणान् ।'

बात वह कि पार्थिवपरमाणुओं के परिगणन के सदृश भगवान् के गुणों का वर्णन करना असम्भव है ।

एक तीसरे स्थल पर निदर्शनाके साथ विरोधाभास का पुट देकर इसी तत्त्व का निरुपण किया है—

गुणात्मनस्तेऽपि गुणान् विमातुं हितावतीर्णस्य क ईशिरेऽस्य ।
कालेन यैर्वा विमिताः सुकल्पैः भूयांसवः खेनिहिता द्युभासा ॥
(भाग. १०.१४.७)

इस प्रकार यह मन्त्र निदर्शनालंकार का उत्तम उदाहरण है तथा अलंकृत मन्त्रार्थ का अपना ही एक सौन्दर्य है ।

एक दूसरा मन्त्र है—

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते ।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति ॥
ऋक्. १.१६४.२०.

इस मन्त्र में कथित दो सुपर्ण कौन हैं ? तथा यह वृक्ष कौन सा है इस पर वायु तथा भागवत ने प्रकाश डाला है । वायु की दृष्टि में ये दो सुपर्ण जीव तथा ईश्वर हैं और यह वृक्ष संसार रूपी वृक्ष है । वहां का लेख है—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अव्यक्तबीजप्रभवस्त्वनुग्रहात्त्रिधातः ।
बुद्धिस्कन्धमयश्चैव इन्द्रियांकुरकोटरः ।।
महाभूतप्रशाखश्च विशेषैः पत्रवांस्तथा ।
धर्माधर्मसुपुष्पस्तु सुखदुःखफलोदयः ।।
आजीव्यः सर्वभूतानामयं वृक्षः सनातनः ।।
दिव्यौ सुपर्णौ सयुजौ सखायौ श्रितविदुमौ ।
एकस्तु यो द्रुमं वेत्ति नान्यः सर्वात्मनस्ततः ।।

वायु. ६.१०६.७—११

भागवत की दृष्टि से ये दो मुक्त तथा बद्ध जीव हैं और यह शरीर रूपी वृक्ष है। मुक्त से आशय जीवन्मुक्त से है। वहां का लेख है—

अथ बद्धस्य मुक्तस्य वैलक्षण्यं वदामि ।
विरुद्धधर्मिणोस्तात स्थितयोरेकधर्मणि ।।

सुपर्णवेतौ सदृशौ सखायौ यदृच्छयैतौ कृतनीडौ च वृक्षे ।
एकस्योः खादति पिप्पलान्नमन्यो निरन्नोऽपि बलेन भ्यान् ।।

(भाग. ११.१२.५-६)

आशय कि शोक तथा आनन्द अथवा बन्ध तथा मोक्ष रूपी दो विरुद्ध धर्मवाले इन दोनों की विलक्षण समानता का वर्णन करता हूं। ये दोनों बद्ध और मुक्त सुपर्ण हैं, सदृश हैं क्योंकि दोनों चिद्रूप हैं, समानसंज्ञा वाले हैं क्योंकि दोनों ही आत्मा कहाते हैं, दोनों का आश्रय यही वृक्ष है। इनमें से एक बद्ध स्वकृत कर्म के फल का भोग करता है दूसरा किसी भी फल का भोग नहीं करता है तथा अपनी ज्ञानादि-शक्तियों से महान् है। सन्त कवि दीनदयाय ने इस वृक्ष का मनोहर वर्णन इन शब्दों में किया है—

देखो पथी उद्यारिकै नीके नयर विवेक
अचरजमय यह बाग में राजत है तहु एक ।
राजत है तरु एक मूल ऊरध अध शाखा
द्वै खग तहां अचर एव इक बहुफल चाखा ।
वरनै दीनदयाल खाय जो निबल विशेखो
जो न खाय सो पीव रहै अति अद्भुत देखो ।।

इस प्रकार संक्षेप में यह दिखाने का प्रयत्न किया गया कि पुराणों में भी वेदार्थ की चर्चा है और वह उपादेय है कुछ अनुपादेय नहीं क्योंकि उसमें किसी वेद मन्त्रार्थ को बिगाड़ा नहीं गया है। अब अन्त में केवल दो प्रसिद्ध मन्त्रों की वैज्ञानिक व्याख्या देकर इस लेख को समाप्त किया जाता है। निम्न मन्त्र का पाठ हम सन्ध्या में नित्य प्रति करते हैं—

उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः ।
दृशे विश्वाय सूर्यम् । (ऋक् १.५०.१)

इस मंत्र में प्रकाश के विचलन (Refraction) के सिद्धान्त के आधार पर सूर्योदय सम्बन्धी मनोहर वर्णन किया है।

प्रकाश के सम्बन्धमें दो सिद्धान्त प्रसिद्ध हैं एक प्रतिक्षेप (Reflection) का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेदोपदेश

—स्व० गंगाप्रसाद उपाध्याय

इसी लोक को स्वर्ग बनाओ

मा शूने अग्ने निषदाम नृणां माशेष सोऽवीरता परित्वा।
प्रजावतीषु दुर्यासु दुर्य।

(ऋग्वेद मंडल ७, सूक्त १, मंत्र ११)

अन्वय : हे अग्ने दुर्य ! (वयं) शूने (गृहे) मा निषदाम। नृणां (अन्येषां मनुष्याणां गृहे च) मा निषदाम। अशेषसः (अपुत्राः) अवीरतया परित्वा मा निषदाम। प्रजावतीषु दुर्यासु (गृहेषु) निषदाम।

अर्थ : हे (दुर्य अग्ने) घरों में (विज्ञानपूर्व) स्थापित होमाग्नि। (शूने) हम सूने घर में (परित्वा) तेरे इर्द-गिर्द (मा निषदाम) न बैठें। (नृणां) दूसरे लोगों के घरों में भी न बैठें। (अशेषसः) बिना पुत्र-पौत्रों के (अवीरता-अवीरतया) वीरता से शून्य घरों में भी न बैठें। (प्रजावतीषु दुर्यासु) सन्तान वाले घरों में बैठें।

व्याख्या:— इस वेद मंत्र में मुख्य बात यह बताई गई है कि जगत् के प्रति क्या भावना होनी चाहिए। कुछ लोग सृष्टि को दुःखों का घर समझते हैं और सृष्टि कर्त्ता को मनुष्यों का शत्रु। उन्हें शिकायत है कि परमात्मा ने जगत् को रच के मनुष्य के लिए इतने दुःख उत्पन्न कर दिये। सत्यार्थप्रकाश के ८वें समुल्लास में स्वामी दयानंद ने यह प्रश्नोत्तरी दी है—

(प्रश्न) जगत् के बनाने में परमेश्वर का क्या प्रयोजन है ?
(उत्तर) नहीं बनाने में क्या प्रयोजन है ?

(प्रश्न) जो न बनाता तो आनन्द में बना रहता। और जीवों को भी सुख दुःख प्राप्त न होता।

(उत्तर) यह आलसी और दरिद्र लोगों की बातें हैं। पुरुषार्थी की नहीं और जीवों को प्रलय में क्या सुख और दुःख है ? जो सृष्टि के सुख दुःख की तुलना की जाय तो सुख कई गुणा अधिक होता और बहुत से पवित्रात्मा जीव मुक्ति के साधन कर मोक्ष के क्षानन्द को भी प्राप्त होते हैं।

जीवन के वैदिक दृष्टि-कोण को यहां ऋषि दयानंद ने संक्षेप से वर्णन कर दिया। यह दृष्टि-कोण उन धर्म ग्रन्थों और धर्म आचार्यों के दृष्टि-कोण से सर्वथा भिन्न हैं जो सृष्टि को या तो अविद्या या माया मानते हैं और सब प्रकार के कर्म-कांड को अविद्याजन्य समझते हैं। अथवा सृष्टि को केवल आकस्मिक या जुआरी का जुआ-घर मानते हैं। अथवा जो मानते हैं कि सृष्टि एक नाटक-घर है। लोग अपना-अपना भाग दिखाकर चले जाते हैं। इसमें वास्तविकता कुछ नहीं। मनुष्य जैसा विचारता है वैसा ही आचरण करता है, जो नाट्यकार बज़ाज़ नहीं है परन्तु बज़ाज़ का नाट्य करता है वह अपने काम में वही उत्साह नहीं दिखा सकता, जो वास्तविक बज़ाज़ दिखाता है। जो गुड़ियों का खेल खेलता है वह समझता है कि यह तो जी बहलाने के लिए खेल मात्र है। झूठ-मूठ पीड़ा का बहाना करने वाला डाक्टर को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

फीस तो न देगा। इसी प्रकार हम देखते हैं कि जब भारत में मायावाद का प्राबल्य हुआ तो ऐहिक विषयों में लोगों की रुचि कम हो गई। बड़े लोग "ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या" की रटन्त लगाते रहे और सर्व साधारण केवल निर्वाह मात्र के लिये उतना करते रहे जिसके बिना बन नहीं सकती थी। यह वह युग था जब भारत में दर्शन शास्त्र और परतंत्रता दोनों साथ-साथ समुन्नत होती रहीं। एक ओर बाल की खाल निकालने वाले दार्शनिक धुरन्धर उत्पन्न हुए, दूसरी ओर अशिक्षित और अर्द्ध-शिक्षित लोग भारत पर धावा बोलते रहे। क्योंकि जो अपने को ज्ञानी और दर्शनकार समझते थे उनको जगत् की वास्तविकता पर विश्वास न था और जो अशिक्षित थे उनमें एक गुण तो था ही अर्थात् जगत् को वास्तविक समझ कर उसकी चीजों को लेने का यत्न करना। फारसी की एक लोकोक्तिः—

ए रोशनीए तबअ तो बर मन बलाशुदी।

हे अन्तःकरण के प्रकाश, तू ने मुझे बला में डाल दिया। वस्तुतः यह प्रकाश नहीं था अपितु चकाचौंध थी जिसने आंखों को चौंधिया दिया था। वैदिक दर्शन ऐसे प्रकाश का प्रचार नहीं करता जिसमें अंधेरे से भी अधिक अंधेरगर्दी हो। स्वामी दयानंद ने इन दार्शनिक गुत्थियों को सुलझाकर वैदिक सिद्धान्तों को मनुष्यों के लिए सुकर और सुलभ बना दिया है। सब धार्मिक गुरु कहते हैं कि दुनिया में क्या रक्खा है। यह दुःखों का घर है। इसे छोड़ो। स्वामी दयानन्द कहते हैं कि दुनिया में दुःख की अपेक्षा सुख अधिक है और जो कुछ दुःख है भी वह साधनों के उपयोग से कम या दूर हो सकता है। मोक्ष का मार्ग यहीं है। मोक्ष से पहले जीवन्मुक्ति और जीवन्मुक्ति से पहले मुमुक्षुत्व भी तो इसी जगत् की चीजें हैं। मुमुक्षुत्व के लिए भी तो वर्णाश्रम धर्म का पालन करना पड़ेगा। संसार से भाग कर जाओगे कहां? क्या नदी में डूब मरने या विष खा लेने या वन में भाग जाने से मुक्ति के निकट हो सकोगे? बुभुक्षा स्वयं भाग नहीं जायेगी और मुमुक्षा स्वयं आ नहीं जायेगी। हां, बुभुक्षा को नियमित करने से ही मुमुक्षा भी आ जाती है।

वेद मंत्र में आदेश है कि जब त्याग और समर्पण की भावना से प्रेरित और प्रोत्साहित होकर गृहस्थी घर में यज्ञ करने बैठता है और अग्नि का आधान करता है तो प्रार्थना करता है कि अग्नि देव, मैं सूने घर में न बैठूं, न पराये घर में। जिसके पास घर नहीं वह गृहस्थी कैसा? चिड़िया भी अपने लिए घोंसला बनाती है। चूहा भी परिश्रम करके बिल खोद लेता है। परिश्रमी मनुष्य को अपना घर स्वयं बनाना चाहिए। तभी उसको पंचयज्ञ करने का अधिकार होगा। फिर वह घर सूना न हो। "अवशेषः" न हो। 'शेष' नाम है सन्तान का। "तोक्म शेषः" इति पुत्रनामसु पठितम्: गृहस्थी का सन्तान की इच्छा करना उसका धर्म है। ऋग्वेद के नीचे लिखे मंत्र में स्पष्ट कहा है।

परिषद्यं ह्यरणस्य रेक्णो नित्यस्य रायः पतयः स्याम।
न शेषो अग्ने अन्यजातमस्त्यचेतानस्य मा पथो वि दुक्षः।

(ऋग्वेद ७-४-७)

(अरणस्य) पितृ ऋण चुका दिया गया है जिससे ऐसे पुरुष का ही (रेक्णः) धन (परिषद्यं) पर्याप्त या उचित होता है। इस लिए, हे अग्नि देव, हम (नित्यस्य) रायः पतयः स्याम) बहुत देर तक ठहरने वाले धनों के स्वामी होवें। हे अग्नि देव, (अन्यजात) दूसरों की सन्तान (न शेषः अस्ति) शेषों अर्थात् अपनी सन्तान में गिनी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नहीं जा सकती। हे प्रभो, हम (अचेतानस्य पथः) मूर्ख लोगों के मार्ग में (मा विदुक्षः) न भटकें।

यहां शेष का अर्थ सन्तान। अपनी सन्तान औरस सन्तान,

"शेष इत्यपत्यनाम शिष्यते प्रयतः"

अपत्य (सन्तान) का नाम शेष है क्योंकि पिता के मरने के पश्चात् बच रहती है। इसको अपत्य कहते हैं क्योंकि अपत्यं कस्मादपततं भवति नानेन पततीति वा।

अर्थात् पुत्र के कारण पिता का पतन नहीं होता। इसलिए वह पुत्र अपत्य है।

यहां स्मरण रखना चाहिए कि वैदिक काल में 'शेष' शब्द से लड़का और लड़की दोनों का अर्थ लिया जाता था और दाय भाग भी दोनों को ही मिलता था। निरुक्तकार यास्क मुनि ने अपत्य वाचक निघण्टु के १५ नामों की व्याख्या करते हुए लिखा है कि

अविशेषेण मिथुनाः पुत्रा दायादा इति।

अर्थात् लड़का और लड़की दोनों की विना किसी विशेषता के 'पुत्र' संज्ञा है। और दोनों दाय भाग के अधिकारी हैं। यास्क ने अपने मत की इस पुष्टि में लिखा है।

तदेतद् ऋक्-श्लोकाभ्यां अभ्ययुक्तम्।

अर्थात् इसकी पुष्टि एक ऋचा और एक श्लोक दो से होती है। ऋचा जो निरुक्तकार ने उद्धृत की है यह है:—

अंगादंगात् सम्भवसि हृदयादधि जायसे।
आत्मा वै पुत्र नामासि सजीव शरदः शतम्।

लड़का और लड़की दोनों अंग-अंग से उत्पन्न होते हैं अतः दोनों ही पुत्र हैं—

श्लोक यह दिया है :—

अविशेषेण पुत्राणां दायो भवति धर्मतः।
मिथुनानां निसर्गादौ मनुः स्वायम्भुवोऽब्रवीत्॥

अर्थात् सृष्टि की आदि में स्वायम्भुव मनु ने ऐसा कहा था कि लड़के और लड़की दोनों दाय भाग के अधिकारी हैं।

यह श्लोक आजकल की मनुस्मृति में नहीं। संभव है कि यास्क के समय में जो मनुस्मृति विद्यमान था उसमें यह श्लोक रहा होगा। लड़की को दाय भाग से वंचित करना या या लड़की को दायभाग देने की प्रथा को मुसलमानी अथवा अवैदिक बताना यह पौराणिक काल की अवैदिक भावना है जब स्त्री जाति को शूद्र समझकर उससे बहुत से अधिकार ले लिये गए।

यहां कुछ बातें बिना प्रसंग के भी आ गईं। क्योंकि आजकल आर्यसमाजियों के समक्ष यह प्रश्न उठा करते हैं कि क्या पौराणिक प्रथाओं को भारतीय मान कर आंखें बन्द करके मान लिया जाये या प्राचीन वैदिक प्रथाओं की खोज भी की जाये।

वेद मंत्र में प्रार्थना है कि जब मैं यज्ञ करने बैठूंगा तो अकेला, पुत्र-पुत्री रहित होकर न बैठूं। पुत्रपुत्रियां पौत्रपौत्रियां परिवार सहित यज्ञ करें। मेरे घर प्रजा-भक्त हों। मेरा परिवार फूले-फले।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यज्ञ की इस प्रकार की कामना से प्रकट होता है कि यज्ञ केवल वैयक्तिक स्वर्ग प्राप्ति के लिए नहीं हैं। "स्वर्गकामो यजेत" जिसको स्वर्ग की कामना हो वह यज्ञ करे। इस आदेश में स्वर्ग को स्पष्ट नहीं किया। स्वर्ग क्या चीज है ? प्रायः याज्ञिकों में यह भावना पाई जाती है कि स्वर्ग एक स्थानविशेष है। जो यज्ञ करेगा उसको मृत्यु के पश्चात् ऐसे स्थान विशेष में पहुंचा दिया जाएगा जहां कोई दुःख नहीं। कहीं-कहीं तो ऐसा भी संकेत है कि यज्ञ का फल सीमित होने के कारण स्वर्ग में थोड़े ही दिन रहने को मिलेगा। पुण्य के क्षीण होने पर स्वर्ग-लोक का निवास भी क्षीण हो जायेगा। वेद मंत्र की भावना भिन्न है। यहां हमको बने बनाये स्वर्ग में नहीं जाना है अपितु इसी लोक को स्वर्ग बनाना है। हम स्वर्ग के निर्माता हैं। यज्ञ स्वर्ग निर्माण की कला है। यदि हम अकेले यज्ञ करेंगे, तो यज्ञ की प्रथा हमारे साथ ही नष्ट हो जायेगी। यदि हमारी सन्तान भी यज्ञ में सम्मिलित होगी, तो यज्ञ की संतति (सिलसिला, परम्परा) बढ़ेगी। हमारे जीवन यज्ञ-मय होने से यही भूमि, यही जगत्, यही संसार जो दुर्गन्ध और दुःख से भरा है, सुगंध और स्वर्ग हो जायेगा। आधुनिक युग में लोगों में सन्तान की इच्छा कम होती जाती है। मध्यकालीन लोग संसार को असार समझकर गृहस्थ के झंझटों से बचना चाहते थे। कुछ ईसाई प्रचारकों का उपदेश था कि विवाह मत करो। सन्तान उत्पन्न मत-करो ! सन्तान होगी तो पाप बढ़ेगा और दोजख (नरक) की आबादी बढ़ जायेगी। आज का भौतिकवादी नरक और स्वर्ग की परवाह तो नहीं करता परन्तु अध्यात्म भावना के अभाव में इन्द्रिय-लोलप होता जाता है। नव-शिक्षित स्त्री–पुरुष इन्द्रिय-दमन तो नहीं करना चाहते परन्तु संतानोत्पत्ति के झंझट से अलग रहना चाहते हैं। खाना चाहते हैं खिलाना नहीं चाहते, पीना चाहते हैं पिलाना नहीं चाहते, खुश रहना चाहते हैं खुश रखना नहीं चाहते। अतः नर-नारियों के परस्पर सम्बन्ध भी दूषित हो गये हैं। प्रेम अभौतिक वस्तु है। काम शारीरिक है। कामी पुरुष प्रेमी नहीं होता। अत्यन्त स्वार्थी और प्रेमशून्य होता है। यज्ञ का अधिकारी स्वार्थी मनुष्य तो हो ही नहीं सकता। विश्व-प्रेम का आरम्भ सन्तान प्रेम से होना चाहिए। यही वेद मंत्र का उपदेश है।

भारी संख्या में मंगाएं

१. चुनौती : इस्लामी साम्राज्यवाद की	: ६० पैसे
२. हिन्दुओं को चेतावनी	: ४० पसे
३. पादरियों को चुनौती	: २० पैसे
४. ईसाई मत खंडन	: २० पैसे
५. पोप की सेना का भारत पर हमला	: ४० पैसे
६. Bible in the Balance	: 60 Paise
७. A Challenge to the Christian Faith	: 20 Paise

सभी पुस्तकें मिलाकर १,००० मंगाने पर

५० प्रतिशत कमीशन

दयानंद संस्थान, नई दिल्ली-११०००५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रेरक प्रसंग

पं० बुद्धदेव विद्यालंकार (स्वा० समर्पणानन्द सरस्वती) का नाम विद्वन्मण्डली में श्रद्धा एवं सम्मान के साथ लिया जाता है। वह मां सरस्वती के वरद पुत्र थे। वह हमारे दादा जी लगते थे। उनकी विलक्षण वाक्शक्ति से सम्मोहन मन्त्र की भाँति जनता आकर्षित हो जाती थी। "भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधिवाचि—लक्ष्मी विद्वानों की वाणी में निवास करती है" महर्षि पतंजलि के इस कथन की सत्यता उनकी वाणी में सदैव परिलक्षित होती थी। एक बार पण्डित जी ने जयपुर में अपने एक व्याख्यान में वेदों के शोध कार्य के लिए धन की अपील की। व्याख्यान में अनेक गण्यमान्य व्यक्तियों के साथ तत्कालीन राजपरिवार के भी कुछ व्यक्ति बैठे थे। परिणामस्वरूप उसी समय उन्हें ४०-५० हजार रुपये प्राप्त हो गये। १०-१२ दिन के पश्चात् किसी सज्जन से दादा जी की मुलाकात हुई, जो उनके स्वभाव से सुपरिचित थे। उन्होंने पूछा—"पण्डित जी ! वेद-शोध-कार्य के लिए कोई कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ या नहीं ?" दादा जी ने वही अपना पुराना उत्तर दिया—"भाई ! क्या करूं ! संसारी लोग आते हैं, अपना दुखड़ा सुनाकर रुपये ले जाते हैं; लौटाने का कोई नाम नहीं लेता। अब तो मेरे पास जो भी रुपये थे, सब समाप्त हो गये। लोगों का दुःख दूर हो जाये, इसी में मैं अपने को कृतकृत्य मानता हूं।"

इसी उदारता के कारण कभी-कभी उनके सामने भोजन की भी समस्या आ जाती थी। एक दिन की घटना मुझे याद आती है। तब वह अपनी दो पुत्रियों के साथ देहरादून में रहते थे। सन्ध्या का समय था। वर्षा होने लगी। दादा जी को गाना बहुत अच्छा आता था। वह अपना कमरा बन्दकर गा-गाकर नाचने में मस्त हो गये। घण्टा-डेढ़ घण्टा बीता लेकिन वह बेखबर रहे। उधर लड़कियां चिन्तित हो हो रही थीं। बड़ी पुत्री आकर कहने लगी, "पिताजी ! आप अपने गाने नाचने में मस्त हैं ! घर में पकाने के लिए कुछ भी नहीं है—न आटा न दाल न चावल। उनके मुंह से तुरन्त निकला—"वाह दाल, चावल नहीं, तो मेरा नाचना गाना भी न हो ! दाल चावल नहीं—यह दूसरी बात है। मेरी मस्ती है। यह अलग बात है।" उन्होंने पुत्री से पूछा—क्या कोई करोड़पति मेरी तरह आनन्द विभोर होकर मस्ती ले सकता है ? आगे आश्वासन देते हुए उन्होंने कहा—मैं अपना काम कर रहा हूं—खिलाने वाला अपना काम करेगा, तू क्यों चिन्तित है ? पुत्री निरुत्तर होकर कमरे से चली गई।

इसके पश्चात् दादा जी ने कुछ पढ़ना चाहा। उन्होंने एक पुस्तक उठाई। पुस्तक खोली, तो पाया कि प्रथम पृष्ठ में ही सौ रु० का नोट रक्खा हुआ है। तभी उन्होंने अपनी लड़की को बुलाकर कहा 'लो भाई, अपना यह दाल चावल।'

बाद में ज्ञात हुआ कि एक सज्जन उनसे शंका-समाधान करने कुछ समय पूर्व आये थे। मेज पर रक्खी जिस पुस्तक को उन्होंने प्रमुख समझा, दादाजी के अनजाने में ही वे वह नोट रख गये थे।

—शतांशु

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पाकिस्तान की सैनिक शक्ति और भारत की सुरक्षा

—प्रो० बलराज मधोक

पाकिस्तान अपनी सैनिक शक्ति बहुत तेजी से बढ़ा रहा है। १९७० में जब बंगलादेश भी पाकिस्तान का अंग था—इसका वार्षिक सुरक्षा बजट लगभग ५०० करोड़ रु० का था। पूर्वी पाकिस्तान के कट जाने और स्वतंत्र बंगलादेश बन जाने के बाद पाकिस्तान का क्षेत्रफल और इसकी सुरक्षा की जिम्मेदारियों में काफी कमी आई और यह अपेक्षा थी कि इसका सुरक्षा बजट कुछ कम होगा, और यह अपनी आय का अधिक भाग विकास के कार्यों में लगायेगा। परंतु हुआ इसके विपरीत। पाकिस्तान का सुरक्षा बजट लगातार बढ़ता जा रहा है। इस वर्ष इसने अपने बजट में सुरक्षा के लिए १५०० करोड़ रु० के लगभग धनराशि निश्चित की है। यह राशि पाकिस्तान की कुल राष्ट्रीय आय का लगभग २६ प्रतिशत है। उसने गत ८ वर्षों में अपनी स्थल, वायु और जलसेना और शस्त्र-सज्जा पहले से लगभग दुगुनी कर ली है।

इसके अतिरिक्त पाकिस्तान के पास और सैनिक शक्ति भी है, जिसका खर्चा कुछ अरब देश वहन कर रहे हैं। यर्दन और सऊदी अरब की नभ सेना के लड़ाकू तथा बमवार विमानों के अधिकतर चालक पाकिस्तानी हैं। किसी भी आड़े समय पर ये विमान चालक और विमान पाकिस्तान की नभ सेना का अंग बन सकते हैं। इसके अतिरिक्त पाकिस्तान की दो डिवीजन सेना सऊदी अरब में स्थायी रूप में रखी जा रही है। इसकी साज-सज्जा और वेतन आदि का सारा खर्चा सऊदी अरब सरकार बर्दाश्त करेगी। स्पष्ट है कि किसी आड़े समय में यह सेना भी पाकिस्तान की स्थल सेना के अंग के रूप में काम करेगी।

इसके अतिरिक्त इस्लामी देशों ने जो अपना सांझा शस्त्र कोष (आर्म बैंक) बनाया है, उसमें भी पाकिस्तान का बहुत बड़ा हिस्सा है। पाकिस्तान को किसी भी आड़े समय इस सांझे इस्लामी शस्त्रागार से हर प्रकार का सहयोग मिल सकता है।

इन सबसे बढ़कर पाकिस्तान को कम्युनिस्ट चीन से बहुत बड़ी मात्रा में शस्त्रास्त्र और अन्य सैनिक सहायता मिल रही है। जानकार सूत्रों के अनुसार गत कुछ वर्षों में चीन ने ३ बिलियन डालर अर्थात् चौबीस सौ करोड़ रुपये के शस्त्रास्त्र, जिनमें पनडुब्बियां और जल पोत भी शामिल हैं, बिना किसी कीमत के पाकिस्तान को दिये हैं। अमरीकी हथियार तो पाकिस्तान को लगातार मिलते ही रहे हैं और गत वर्षों में सऊदी अरब, ईरान और यर्दन के माध्यम से पाकिस्तान पहुंच रहे हैं।

स्वाभाविक रूप से प्रश्न उठता है कि पाकिस्तान इतनी सैनिक शक्ति क्यों जुटा रहा है? अफगानिस्तान की समस्या तो अब खड़ी हुई है। वैसे भी पाकिस्तान का सैनिक प्रशासन यह बात भली प्रकार जानता है कि पाकिस्तान की यह सेना

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रूसी सेना के आगे टिक नहीं सकती, इसलिए वह अफगानिस्तान की समस्या का राजनैतिक हल ढूंढ़ने की बातें करने लगा है।

गत ३३ वर्षों के इतिहास और पाकिस्तान की राजनीति और राजनीतिज्ञों के दृष्टिकोण और चिन्तन की पृष्ठभूमि में यह स्पष्ट है कि यह सारी सैनिक शक्ति हिन्दुस्तान के विरुद्ध जुटाई जा रही है। क्षेत्रफल और जनसंख्या में पाकिस्तान हिन्दुस्तान से बहुत छोटा है, परन्तु सैनिक शक्ति की दृष्टि से वह हिन्दुस्तान की बराबरी करना चाहता है और उसकी स्थल और नभ सेना हिन्दुस्तान के लगभग बराबर है।

हिन्दुस्तान के कुछ राजनीतिज्ञ और राजनेता सोचते हैं कि पाकिस्तान हमारा क्या बिगाड़ सकता है, क्योंकि वह बहुत छोटा है। परन्तु वे इतिहास के इस सबक को भूलते हैं कि छोटे देश जो शस्त्रास्त्रों के मामले में सन्नद्ध हों और जिसके लोग किसी अंधभावना से प्रेरित हों, वे युद्ध में बड़े देशों और उनकी सेनाओं पर हावी हो जाते हैं। इस महायुद्ध में जर्मनी की उपलब्धियां और अरब इस्राईल युद्धों में इस्राईल की उपलब्धियां इस मामले में भारत के लिए चेतावनी हैं और मार्गदर्शक भी।

पाकिस्तान नकारात्मक आधार पर बना था। हिन्दुस्तान और हिन्दुओं से दुश्मनी ही उसके जीवन और अस्तित्व का आधार है। गत ३३ वर्षों में यह भारत पर चार आक्रमण कर चुका है और हर एक आक्रमण में इसे कुछ लाभ ही हुआ है। इसलिए भारत की जनता और सरकार पाकिस्तान की इस प्रकार बढ़ती सैनिक शक्ति की उपेक्षा नहीं कर सकतीं। पाकिस्तान से मित्रता के सम्बन्धों की बात मृगमरीचिका मात्र है। पाकिस्तान जब तक रहेगा, भारत का शत्रु रहेगा। इसलिये आवश्यक है कि भारत की जनता और सरकार पाकिस्तान की इस बढ़ती सैनिक शक्ति का ठीक मूल्यांकन करे और उसमें से भारत की रक्षा की दृष्टि से सही निष्कर्ष निकाले।

झनकूमल : कहिए आपको क्या तकलीफ है ?

रोगी : "झनकूमल, मेरी कमर में कभी-कभी अचानक दर्द होने लगता है।"

झनकूमल : "अच्छा, तो आपको मैं ये गोलियां दे देता हूं। दर्द शुरू होने के ठीक बीस मिनट पहले गोली खा लेना।"

° ° ° °

एक आदमी को फौजदारी वकील करना था। वह अपने मुहल्ले के सबसे वृद्ध व्यक्ति झनकूमल से मिलने गया। उसने झनकू से कहा : "क्या आप इस मुहल्ले के सब व्यक्तियों को जानते हैं ?"

"हां हां, क्यों नहीं ? मैं पचास साल से यहां रह रहा हूं।"

"इस मुहल्ले में कोई फौजदारी वकील भी है ?"

"क्यों नहीं, सब हैं।" झनकू बोला, "असल में जिस वकील को भी पूरी फीस नहीं मिलती, वही फौजदारी पर उतर आता है।"

"मेरा मतलब क्रिमिनल वकील से था।"

"ये तो वे सभी होते हैं," झनकू ने कहा, "लेकिन इसे सिद्ध करना जरा मुश्किल है।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

योग लेखमाला—४

योग का सातवां अंग : ध्यान

हरप्रकाश बन्धु, एम.ए., एल-एल.बी

यह शरीर एक जंगल है। इसमें प्रवृत्ति नाग की हथिनी रहती है। वह हर समय किसी न किसी चीज के लिए लालायित रहती है। इन्द्रियां इस हथिनी के बच्चे हैं। शुभ और अशुभ कार्य इसके दांत हैं और वासनाएं मद हैं। इस मदमाती हथिनी ने मन रूपी हाथी को नचा रखा है। जो शुद्ध संकल्पवान् होता है, वही इस संसार समरांगण में विजय प्राप्त कर सकता है। अशुद्ध संकल्पवान् तो अकाल ही कालग्रस्त हो जाता है। जिसे शान्ति की इच्छा हो, उसे निवृत्ति रूपी तलवार लेकर इस प्रवृत्ति हथिनी का वध कर डालना चाहिए।

यम, नियम, आसन, प्रणायाम, प्रत्याहार, धारणा हमें उसी निवृत्ति के मार्ग पर ले जा रहे हैं। ध्यान की मंजिल पर पहुच कर विक्षेप समाप्त हो जाते हैं। विचारों का प्रवाह एक दिशा में हो जाता है। धारणा के प्रभाव से हमने सब विक्षेपों को धीरे-धीरे मन से—अन्तःकरण से कम किया और समाप्त कर दिया। देह के भीतर या बाहर मन को कुछ समय तक स्थिर रखने की पुनः-पुनः चेष्टा करते रहने से उसकी उस दिशा में अविच्छिन्न गति से प्रवाहित होने की शक्ति प्राप्त हो जाती है। यही ध्यान है। मान लो, मन किसी एक विषय को सोचने का प्रयत्न कर रहा है, किसी एक विशेष स्थान में जैसे मस्तक के ऊपर अथवा हृदयादि में—अपने को वहीं तक सीमित करने का प्रयत्न कर रहा है। यदि मन शरीर के केवल उस अंश द्वारा संवेदनाओं को ग्रहण करने में समर्थ होता है, शरीर के शेष सब भागों को विषय ग्रहण से निवृत्त रख सकता है, तो उसका नाम धारणा है और जब वह अपने को कुछ समय तक उसी अवस्था में रखने में समर्थ होता है, तो उसका नाम है 'ध्यान'। इससे हमें पता चलता है कि धारणा और ध्यान में अन्तर है। धारणा में तो कभी विक्षेप आ जाते हैं, किन्तु ध्यान की अवस्था में मन में कोई विक्षेप नहीं आता।

विस्तार से विचार करने के लिए स्थान, प्रत्यय अर्थात् विचारणीय विषय का केन्द्र, अर्थात् विक्षेप न आना ही ध्यान है। इन सब को भली भांति समझना होगा। सूक्ष्मदर्शी यंत्र के द्वारा हम किसी वस्तु की परीक्षा करना चाहते हैं। हम उस वस्तु को जब यन्त्र में रख देते हैं और अपनी दृष्टि उस वस्तु पर डालते हैं, तो उसका क्षेत्र पहले से ही निश्चित हो जाता है। उस दायरे के अन्दर जो गतिविधि चल रही है, हम केवल उसी का निरीक्षण कर सकते हैं। उस दायरे में जो असंख्य गतिविधियां हो रही हैं, उन्हीं का हम निरीक्षण कर रहे हैं। उस दायरे से हम बाहर नहीं जा सकते। ध्यान के लिए पहले एक दायरा निश्चित हो जाता है, उसी के अन्दर ही हम अध्ययन करते हैं। लगातार उसी का निरीक्षण करते रहते हैं। इसी प्रकार यदि हम नदी के किनारे बैठे हुए नदी के जल पर ध्यान कर रहे हैं, तो हम देखते हैं कि नदी का जल दो किनारों के बीच में सीमित है, उसी में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बह रहा है। उससे बाहर नहीं जाता। हम भी केवल उसी जल की धारा को देख रहे हैं, उसका निरीक्षण कर रहे हैं, जो दोनों किनारों के बीच में बह रही है। यद्यपि जल आ रहा है और जा रहा है, किन्तु हम एक क्षेत्र के अन्दर रहकर ही अपना ध्यान कर रहे हैं।

इसी प्रकार से हम अपने अन्दर अन्तःकरण, ज्ञान इन्द्रियों, कर्म इन्द्रियों का अध्ययन कर सकते हैं। सीधे बैठकर अपनी नाक के ऊपरी भाग पर दृष्टि रखो। तुम देखोगे कि उससे मन की स्थिरता में विशेष रूप से सहायता मिलती है। आंख के दो स्नायुओं को वश में लाने से प्रतिक्रिया के केन्द्र स्थल को काफी वश में लाया जा सकता है। उससे इच्छा शक्ति भी आधीन हो जाती है। अब ध्यान के कुछ प्रकार कहे जाते हैं। सोचो, सिर के ऊर्ध्व देश में एक कमल है, धर्म उसका मूल देश है, ज्ञान उसकी नाल है, योगी की अष्टसिद्धियां उस कमल के आठ दलों के समान हैं। वैराग्य उसके अन्दर की कर्णिका है। जो योगी अष्टसिद्धियां आने पर भी छोड़ सकते हैं। वे ही मुक्ति प्राप्त करते हैं। इसलिए अष्टसिद्धियों का उस कमल के बाहर आठ दलों के रूप में तथा अन्दर की कर्णिका का वैराग्य के रूप में वर्णन किया गया। इस कमल के अन्दर हिरण्य, सर्वशक्तिमान्, अस्पृश्य, ओंकार-वाचन, अव्यक्त, किरणों से परिव्याप्त परम ज्योति का चिन्तन करो, उस पर ध्यान करो। सोचो कि तुम्हारे हृदय में एक आकाश है। उस आकाश के अन्दर अग्निशिखा के समान एक ज्योति उद्भासित हो रही है—उस ज्योतिशिखा का अपनी आत्मा के रूप में चिन्तन करो। परमात्मा सर्वरूप ईश्वर का मिलन करो। हृदय में उसका ध्यान करो। निरन्तर ध्यान करने से तुम्हें अन्दर के अन्तःकरण के रहस्य प्रकट होने लगेंगे। जैसे एक वैज्ञानिक सूक्ष्मदर्शी यन्त्र के द्वारा सूक्ष्म वस्तुओं का अध्ययन करता है, वैसे ही आप अपने मन द्वारा सूक्ष्म विषयों का ध्यान करें।

आपको एक निश्चित दायरे में अपने ध्यान को केन्द्रित रखना है। मन को एक देश में बांध देना ही धारणा है। एक विषय पर निश्चित कर देना है। उसे हर समय बदलते नहीं रहना है। एक देश में, एक विषय पर मन को रखने का प्रयास करना है।

एकान्तता ध्यान का दूसरा गुण है। जैसे सरिता निरंतर बहती है, इसी प्रकार से हमें लगातार चिन्तन करना है, विचार करना है, उसमें किसी प्रकार का विक्षेप नहीं आने देना है। धारणा में तो ये विक्षेप उपस्थित हो जाते हैं। यही गुण है जो धारणा और ध्यान में अंतर स्पष्ट करता है। इसकी तुलना एक पात्र से दूसरे पात्र में दूध को पलटते समय जो निरन्तर धारा बहती है, उससे की जा सकती है। समाधि तक पहुंचने के लिए ध्यान का अभ्यास क्यों आवश्यक है? एकान्तता क्यों आवश्यक है? क्योंकि यदि एकान्तता नहीं होगी, विक्षेप आते रहेंगे, तो इससे हमारा मन अनुशासित नहीं हो सकेगा। विक्षेप का अर्थ एकाग्रता का अभाव है। ध्यान की कमी है। यदि हमने एकान्तता का गुण मन में धारण नहीं किया, तो इसका अर्थ यही है कि उसमें विक्षेप आते रहेंगे। दूसरा विषय पहले विषय का स्थान ले लेगा। ध्यान का दायरा बदलता रहेगा। हमें तो निरुद्ध अवस्था तक पहुंचना है। इस एकान्तता को कायम रखना है। एक विषय से दूसरे विषय पर, एक स्थान से दूसरे स्थान पर मन उछल-कूद करता है, तब एकान्तता का गुण उसमें नहीं रह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जाता। मन को फिर पकड़ कर उसी विषय पर लाया जा सकता है। एक देश में फिर बांधा जा सकता है। किन्तु इससे मन का दोष हमारे सामने स्पष्ट हो जाता है। अभी वह धारणा की स्थिति में है, उसमें ध्यान की योग्यता उत्पन्न नहीं हुई। मन अनुशासन हीन है। मन को अनुशासित करने के लिए ही तो हम इतना अभ्यास कर रहे हैं। मन की तमोगुण, रजोगुण, स्थितियों को ही तुम हटाकर निरुद्ध अवस्था में लाने का प्रयास कर रहे हो। धारणा के विकास से हमें पता चलता है कि विक्षेप धीरे-धीरे समाप्त होते जाते हैं। ज्यों-ज्यों धारणा में विक्षेप समाप्त होते हैं, हमें ध्यान की अवस्था प्राप्त होने लगती है। इसलिए एकान्तता के गुण को ध्यान का दूसरा आधार समझना चाहिए। ध्यान की अवस्था पर पहुंचने पर हमारा मन अंतिम अवस्था समाधि—निरुद्ध अवस्था के लिए तैयार हो जाता है। जब तक ध्यान की अवस्था पक्की नहीं हो जाती, मन की एकाग्रता प्राप्त नहीं हो सकती।

दोनों गुण—एक देश में बांधना और एकान्तता का ध्यान—उसके दो पैर हैं, जिस पर ध्यान खड़ा रह सकता है।

मूढ़, क्षिप्त और विक्षिप्त मन की पहली तीन अवस्थाएं हैं। एकाग्रता और निरुद्ध अवस्था ही सर्वोच्च है। ध्यानावस्था चौथी अवस्था है। जब तक वासना रहती है, तब तक यथार्थ सुख नहीं आ सकता। अन्य प्राणी इन्द्रियों में सुख पाते हैं। मनुष्य बुद्धि में और देव, महापुरुष, ऋषि, मुनि ध्यान में। जो ऐसी ध्यान अवस्था को प्राप्त हो चुके हैं, उन्हें यह जगत् सचमुच अत्यन्त सुन्दर रूप में प्रतीयमान होता है। जिनकी वासना नहीं है, जो सर्व विषयों में निर्लिप्त हैं, उनके पास ये प्रकृति के विभिन्न परिवर्तन एक महा सौन्दर्य और उदात्त भाव की छवि-मात्र हैं।

यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा के अभ्यास से मन जब दृढ़ और संयत हो जाता है तथा सूक्ष्मतर अनुभव की शक्ति प्राप्त कर लेता है, तब उसे ध्यान में लगाना चाहिए। पहले-पहल स्थूल वस्तु को लेकर ध्यान करना चाहिये। फिर क्रमशः सूक्ष्म से सूक्ष्मतर वस्तु में हमारा ध्यान होगा। अन्त में हम निर्विकल्प ध्यान में सफल हो जाएंगे। जब आप मानसिक प्रतिक्रिया का उसके अपने स्वरूप में अनुभव करने में समर्थ होंगे, तब आप सर्व पदार्थों का ज्ञान प्राप्त कर लेंगे, क्योंकि इन्द्रियोगोचर प्रत्येक वस्तु, यहां तक कि प्रत्येक विचार भी, इस मानसिक प्रतिक्रिया का ही फल है। ऐसी अवस्था प्राप्त होने पर आप अपने मन की नींव तक का अनुभव कर लेते है। तब मन आपके सम्पूर्ण वश में आ सकता है। ध्यान अवस्था स्थापित हो जाती है।

एक बहुत बड़े विद्वान् एक पहुंचे हुए महात्मा के अनन्य भक्त थे। किसी मित्र ने उनसे पूछा—पण्डित जी! महात्मा जी महान् योगी और पहुंचे हुए महापुरुष थे, जिनके जीवन की बहुत-सी छिपी बातों को आप जानते हैं, फिर आप उनका जीवन चरित्र क्यों नहीं लिख देते? पण्डित जी ने बड़ी गम्भीरता से कहा—"मैं महात्मा जी का जीवन चरित्र लिखने के प्रयत्न में लग रहा हूं। मैंने कुछ आरम्भ भी कर दिया है।" उस मित्र ने फिर आतुरता के साथ पूछा—'जीवन चरित्र कब तक प्रकाशित हो जायेगा, पण्डित जी?' यह सुनकर पण्डित जी ने मुस्कराकर कहा—आपने शायद यह समझा होगा कि मैं महात्मा जी का जीवन चरित्र कागजों पर लिख रहा हूं। ऐसी बात नहीं है। आप भूलते हैं। मेरे विचार से तो महात्मा जी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का जीवन चरित्र मनुष्य के जीवन में लिखा जाना चाहिये। और मैं तो यथासाध्य उनके जीवन को अपने जीवन में उतारने की कोशिश कर रहा हूं।" आपका मन भी महान है। आप इसकी महात्ता को समझें और उसे ध्यान अवस्था तक ले जाने का प्रयास करें।

धारणा

गमले में एक फूल सजायें। फूल बनावटी अथवा असली कोई भी आप ले सकते हैं। आप इस सजे हुए फूल को अपने से पाँच फुट के फासले पर रखें। इसकी ऊंचाई इतनी होनी चाहिए कि चोटी आपके बैठने पर आपकी आंखों की सीध में पड़े।

अब आप सुखासन, पद्मासन अथवा स्वस्तिक आसन पर बैठ जायें। शरीर को सीधा रखें। कड़ा न करें। सिर, गर्दन और मेरुदण्ड एक सीध में रहें। सिर सीधा और स्थिर रहता हुआ आराम की स्थिति में रहे। स्वाभाविक गहरी सांस लेते रहें। अब आप धारणा के अभ्यास के लिए तैयार हैं। मन की वृत्तियों को रोकने की यह पहली सीढ़ी है।

अब आप फूल की पंखुड़ियों को देखें, लगभग दस सेकण्ड तक देखते रहें। यदि आपकी आंखों में दर्द हो तो कुछ कम समय तक ही देखें। किन्तु आंखों की पुतलियां न हिलायें। अब आप अपनी आंखें धीरे से बन्द कर लें। अब फूल के आकार को मन में देखने की कोशिश करें। इस स्थिति में फूल को देखते हुए दस सेकण्ड अपनी आंखें बन्द किये रहें। फिर आंखें खोलकर दस सेकण्ड तक देखने की क्रिया को दोहरायें। फिर बन्द करके देखने का प्रयास करें। बाहरी आंख से देखना, आंखें बन्द करना तथा भीतरी आंख से देखना—ये क्रियायें होती रहेंगी।

पहले सप्ताह में यह क्रिया केवल पांच बार और अगले सप्ताह दस बार, इस प्रकार से इस क्रिया को १५ मिनट तक बढ़ाया जा सकता है। इससे अधिक करने के लिए किसी गुरु की देखरेख में ही इस कार्य को करना चाहिये। अभ्यास समाप्त होने पर बैठे रहें। शरीर को ढीला करके आराम की स्थिति में दो मिनट रहें। इसके साथ ही आपका धारणा का अभ्यास पूरा होता है। स्वामी योगेश्वरानन्द जी ने धारणा के सम्बन्ध में लिखा है कि मन को किसी देश-विदेश में बांधना ही धारणा है। धारणा से वस्तु के बाह्य रूप का दर्शनमात्र होता है। क्योंकि धारणा में मन की वृत्ति शान्त नहीं होती। यह धारणा अन्तः तथा बाह्य दो प्रकार की होती है। बाह्य धारणा के भी मुख्य पांच भेद हैं—

(क) पार्थिव धारणा—जैसे ओ३म् अक्षर, काला बिन्दु, पुष्प अथवा किसी महापुरुष का चित्र एवं स्वर्ण, रजत, पाषाणादि से बनी देवमूर्ति को लक्ष्य करके मन को स्थिर करना।

(ख) जलीय धारणा—जैसे किसी नदी तीर पर, सरोवर कूल पर एवं समुद्र तट पर बैठकर तरंगरहित जल को निरन्तर स्थिर दृष्टि से देखते रहना।

(ग) आग्नेय धारणा—दीपक व मोमबत्ती की शिखा, लघु प्रकाश वाले हरे-नीले से बल्ब या हामकुण्ड की अग्नि जैसे पदार्थ पर दृष्टि स्थिर करना।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(घ) वायवीय धारणा—किसी वस्तु को निरन्तर स्पर्श करें अथवा श्वास-प्रश्वास की गति को अथवा वायु या प्राण को अथवा शीतोष्ण के निरन्तर स्पर्श को अनुभव करते हुए मन को स्थिर कर देना।

(ड़) शाब्दिक धारणा—जैसे उप व उपांशु जप के शब्द पर, गंगा आदि कल-कल निनाद पर अथवा भ्रामरी प्राणायाम के शब्द गुंजार व अनहद नाद पर मन को बाँधने या स्थिर कर देने पर धारणा बलवती होती है। ध्यान में प्रवेश करने के लिए धारणा का बलवती होना आवश्यक है।

मन को किसी विषय पर एकाग्र करने के लिए यम, नियम, आसन प्राणायाम और प्रत्याहार पहले पांच अंग आधार-शिला हैं। इनसे मन को विक्षिप्त करने वाले बाहरी अंग शांत हो जाते हैं। यम और नियम को जीवन में धारण करने से भावनायें शांत हो जाती हैं। मन की क्षिप्त और विक्षिप्त अवस्था नहीं रहती। आसन और प्राणायाम से शरीर स्वस्थ हो जाता है और उससे पैदा होने वाले विकार शांत हो जाते हैं। प्रत्याहार द्वारा मन इन्द्रियों से अलग हो जाता है। बाहरी मन पर पड़ने वाले दबाव समाप्त हो जाते हैं। मन के अन्दर के संस्कार शांत रहते हैं। मन बाहरी संसार से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर लेता है। जो गंगा अब तक बाहर की ओर बह रही थी, वह अन्दर की ओर बहने लगती है। जब हमारी ऐसी स्थिति हो जाती है, तभी धारणा, ध्यान और समाधि हमें स्वाभाविक रूप से सिद्ध होने लगते हैं। मन की अवस्था एकाग्र और निरुद्ध होने लगती है।

अब तक जिन अंगों की हमने चर्चा की है, वे हमें एक दूसरे पर निर्भर प्रतीत नहीं होते। आसन और प्राणायाम का अभ्यास करना सम्भव भी हो सकता है, दूसरे अंगों को हम छोड़ भी सकते हैं किन्तु हमें इस बात को ध्यान में अवश्य रखना चाहिए कि इन सब पर अधिकार प्राप्त करने के लिए हमें सबको मिलाकर जीवन में स्थान देना होगा। कई लोग मन को वश में करने का वर्षों प्रयास करते रहते हैं। किन्तु उन्हें सफलता प्राप्त नहीं होती। अन्त में निराश होकर वे इसे असम्भव समझकर छोड़ देते हैं। इसका कारण यही है कि उन्होंने पहले नींव ही अच्छी प्रकार से नहीं डाली। इसीलिए उन्हें धारणा का साधारण अभ्यास भी कठिन प्रतीत होता है। उनके लिए ध्यान और समाधि तक पहुंचना तो असम्भव ही है। सिद्धांत रूप में व्यक्ति मन से भी आराम कर सकता है। वह कुछ हद तक मन को वश में करने में सफलता भी प्राप्त कर लेगा, किन्तु वह बहुत उन्नति नहीं कर सकता। एक सीढ़ी ऐसी आ जाती है कि वह उससे आगे जा ही नहीं सकता। आखिरी मंजिल तक पहुंचने के लिए उसे एक-एक पग आगे बढ़ना होगा। हां, कुछ लोगों ने अपने जीवन को पहले से सुसंस्कृत किया होता है। यम, नियम उसके जीवन के स्वाभाविक अंग होते हैं। उन्हें अलग से इनके अभ्यास की आवश्यकता नहीं पड़ती। चरित्र में उपर्युक्त गुण होने चाहिए। कुछ लोगों में जन्म से वैराग्य के संस्कार होते हैं जैसे गुरु नानक, ऋषि दयानन्द, महात्मा गांधी, रवीन्द्रनाथ टैगोर सदृश महापुरुष बचपन में ही अपनी मूल प्रवृत्तियों पर काबू पा लेते हैं—उन पर अनुशासन कायम कर लेते हैं। यम, नियम उनके जीवन के अंग होते हैं। उन्हें साधारण व्यक्ति की तरह प्रयास नहीं करना पड़ता। जो व्यक्ति मन को अनुशासित करना चाहता है, धारणा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का अभ्यास करना चाहता है, उसके लिए पांच अंगों को भी जीवन में धारण करना आवश्यक है ।

अब हम धारणा शब्द पर विचार करेंगे । साधारण व्यक्ति एवं पाश्चात्य मनोवैज्ञानिक अभी उतनी गहराई तक नहीं जा पाये, जितनी गहराई तक भारतीय मनोवैज्ञानिक ने इसका विश्लेषण किया है । पाश्चात्य मनोवैज्ञानिक मन के गुण, कर्म, स्वभाव के सम्बन्ध में भिन्न दृष्टिकोण रखते हैं । मुख्य भेद यह है कि उनके विचार, में मन को एक स्थान पर स्थिर नहीं किया जा सकता । वह तो रजोगुण प्रधान है। एक स्थान से दूसरे स्थान, एक विषय से दूसरे विषय पर आता-जाता रहता है। एकाग्रता उनके विचार में एक निश्चित दायरे में रहती है । उनके विचार में एक विषय के विविध पहलुओं पर विचार करने का नाम ही एकाग्रता है । भारतीय दृष्टि-कोण के अनुसार एकाग्रता के लिए एक विषय पर ध्यान केन्द्रित करने का अभ्यास करना एकाग्रता के लिए आवश्यक तो है, किन्तु मन की एक स्थिति ऐसी आ जाती है, जब वह समाधिस्थ हो जाता है । तम, रज, सत्त्व तीनों गुणों के शांत हो जाने पर मन निरुद्ध हो जाता है, वह अपने ही स्वरूप में स्थित हो जाता है । जब मन विषय के साथ एकाकार हो जाता है, तब उसकी गति समाप्त हो जाती है । भारतीय मनो-विज्ञान भी पाश्चात्य दृष्टिकोण के पहले अंगों तक तो सहमत है, किन्तु उनकी खोज वहीं समाप्त नही हो गयी । वे उसके भी आगे जाते हैं ।

एकाग्रता में भारतीय मनोवैज्ञानिक भी दो दोष मानते हैं। पहला मन किसी वस्तु के बाहरी पहलुओं तक ही जानकारी प्राप्त कर सकता है । वह वस्तु के साथ तदाकार नहीं हो सकता । दूसरा इस अवगुण के कारण इस प्रकार की एकाग्रता में मन बुद्धि के दायरे तक सीमित रहता है । सूक्ष्म होकर उसके नीचे गहराई तक नहीं पहुंच पाता । वह हर समय एक स्थान से दूसरे स्थान, एक विषय से दूसरे विषय पर आता-जाता रहता है । इसलिए हमें पहले मन की उछल-कूद समाप्त कर उसे विषय के साथ तदाकार करना होगा ।

धारणा पहली सीढ़ी है । यहां तो मन को एक निश्चित दायरे में लाना पड़ता है । जिस विषय पर हमें इसे एकाग्र करना होता है, उसी तक रखना होता है। एक देश में बाँधना होता है । देश बंध का अर्थ है एक निश्चित दायरे में बांधना । हमने शुरू में एक फूल लिया । उस पर मन को केन्द्रित किया । आंखें बन्द कीं । फिर मन में उसका आकार देखने का प्रयास किया । मन को एक निश्चित देश में बांध दिया । हमने ऐसा क्यों किया ? हर एक विषय के विविध पहलू होते हैं । हमारा मन सभी पहलुओं को एक साथ नहीं देख सकता । उन पर विचार नहीं कर सकता । मन एक-एक करके अलग-अलग पहलुओं पर विचार कर सकता है । यद्यपि मन एक विषय पर चलकर उसके विविध पहलुओं पर विचार कर रहा है, किंतु वह एक ही विषय, एक ही देश में बंधा हुआ है । अभी हमने मन को एकाग्रता तक लाने के लिए यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार आदि पहलुओं पर विचार किया । किन्तु ये सब एक ही मन की एकाग्रता के साथ सम्बन्धित हैं । ये तो एक मंजिल तक पहुंचने की अलग-अलग सीढ़ियां हैं । यहां भी मन की गति तो है , किन्तु एक ही विषय के विविध अंगों पर । हां, जब मन अपने विषय से बाहर चला जाता है, ऐसे विषयों पर चला जाता है, जिनका मन की एकाग्रता से कोई सम्बन्ध नहीं, तो इसे विक्षेप माना जायेगा । इससे हमारा ध्यान टूट जायेगा । इसलिए धारणा का मूल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उद्देश्य बार-बार भटकते मन को जो एक विषय से दूसरे विषय पर और फिर तीसरे विषय पर चला जाता है, एक ही विषय पर रखने का दृढ़ संकल्प करना है। ज्यों ही मन के अन्दर विक्षेप पैदा होता है, हम वापिस उसे अपने विषय पर ले आते हैं। क्षिप्त और विक्षिप्त मन बार-बार विषय से हटने का प्रयास करते हैं, हम बार-बार उन्हें विषय के अन्दर बांधने, एक निश्चित दायरे में रखने की कोशिश करते हैं।

साधक को इन विक्षेपों कों धीरे-धीरे कम करते जाना चाहिए। एक स्थिति ऐसी आयेगी, जब मन एक विषय पर एकाग्र हो जायेगा। केवल विक्षेपों को ही कम नहीं करना, किंतु मन को मूल विषय पर लगाने का प्रयास भी करना है। धुंधले चित्रों को स्पष्ट चित्रों में बदलने का प्रयास करना है। जब मन किसी एक विषय···एक वस्तु पर एकाग्र हो, जहां हम विक्षेपों को कम करने का प्रयास करें, वहां अस्पष्ट की स्पष्ट करने का प्रयास करना चाहिए। आकाश में स्वाति नक्षत्र के रहते यदि पानी गिरे और उसकी एक बूंद किसी सीप में चली जाय, तो उसका मोती बन जाता है। सीपियों को यह मालूम है। अतएव जब वह नक्षत्र उदित होता है, तो सीपियां पानी की ऊपरी सतह पर आ जाती हैं और उस समय की एक अनमोल घड़ी की प्रतीक्षा करती रहती हैं। ज्यों ही एक बूंद पानी उनके पेट में जाता है, त्यों ही उस जलकण को लेकर मुंह बन्द करके वे समुद्र के अथाह गर्भ में चली जाती हैं और वहां बड़े धैर्य से उनसे मोती तैयार करने के प्रयत्न में लग जाती हैं। हमें भी उन्हीं सीपियों की तरह होना है। पहले सुनना होगा, फिर समझना होगा। अन्त में बाहरी संसार से बिलकुल दृष्टि हटाकर अन्तर्निहित सत्य तत्त्व के विकास के लिए प्रयत्न करना होगा।

प्रार्थना

कृपा करो हे जगदाधार।
कहाँ सच्चिदानन्द अमर तुम, कहाँ 'इन्दु' लाचार।
अनुपम, अजर, अभय, सर्वेश्वर ! करो ज्ञान संचार।
हे अनादि, हे अन्तर्यामी, व्यापक, सर्वाधार।
निर्विकार, शुचि, नित्य, शरण हूं, रखिये करुणागार।
भूल गया था राह तुम्हारी, रोया कितनी बार।
अब प्रभु नौका तेरे कर है, डूबे या हो पार॥

—महेश ललाट भूषण मिश्र 'इन्दु'

सर्वत्र हिन्दू रक्षा समिति
स्थापित कर राष्ट्र—धर्म—संस्कृति
की रक्षा करें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक विचार

नामों के विषय में नई प्रवृत्ति

—हरिश्चन्द्र

सौन्दर्य-बोध एक ऐसा उपहार है, जो मनुष्य को प्रकृति की ओर से प्रदान किया गया है। इसी देन के सहारे शायद वह अपने आस-पास के वातावरण को सजाने और स्वयं को भी अधिक सुन्दर प्रदर्शित करने की चेष्टा करता है। किन्तु बाह्य सज्जा से अधिक महत्त्व की वस्तु है अन्तस्सज्जा। अन्तस्सज्जा से तात्पर्य आन्तरिक या हृदय की सुन्दरता से है। हृदय के सौंदर्य का सम्बन्ध संस्कृति से है। अन्तस्सौन्दर्य से विभूषित करने अथवा मनुष्य को सुसंस्कृत करने के अभिप्राय से हमारे पूर्वजों ने जीवन में सोलह संस्कारों का विधान किया था। सम् उपसर्ग पूर्वक 'कृ' धातु से निर्मित संस्कार शब्द का अर्थ मेरी उक्ति को सत्य सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है। किन्तु खेद है कि पाश्चात्य प्रभाव के कारण आज हम संस्कारों के महत्त्व को भूलते जा रहे हैं।

इन संस्कारों में एक महत्त्वपूर्ण संस्कार है—नामकरण संस्कार। इस अवसर पर बच्चे को एक नाम दिया जाता है, जिसके द्वारा समाज उसे पहचानता है, किन्तु नाम का इतना ही महत्त्व नहीं समझना चाहिये, अपितु नाम से मानव कहलाने वाला प्राणी अपने में कुछ विशेषताएं अथवा गुण भी ग्रहण करता है, जो उसके चरित्र-निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिए नामकरण संस्कार के अवसर पर बच्चे को अच्छा, सार्थक और सुन्दर नाम दिया जाता है जिसका उच्चारण भी सुगमता से किया जा सके।

एक समय था जबकि नामकरण के समय अज्ञानवश और अविद्या के कारण बच्चों को निरर्थक वा अटपटी संज्ञाएं दी जाती थीं, जिनसे कुरुचि और बुद्धिहीनता प्रकट होती है। इस प्रकार के नाम आज भी पुरानी पीढ़ी के साथ सम्बद्ध हैं—जैसे घसीटाराम, खचेड़ूमल, फकीरचन्द, कूड़ेमल, गरीबदास, जालिमसिंह आदि। ये नाम व्यक्ति में हीन भाव (Inferiority complex) को जन्म देते हैं। इस क्षेत्र में आर्यसमाज ने दिशा-निर्देश करके क्रान्ति की। उसके प्रभाव से ओम्प्रकाश, वेदप्रकाश, धर्मपाल, रामपाल, प्रेमप्रकाश, सत्यप्रकाश, ओंकारनाथ, ओम्नारायण जैसे नामों का प्रचलन हुआ, जिनसे सांस्कृतिक और धार्मिक पेचि व्यक्त होती है। हरिश्चन्द्र, रामचन्द्र, कृष्णचन्द्र, रामकृष्ण, विष्णुस्वरूप, भगवान्दास, ब्रह्मस्वरूप, शिवनाथ आदि नाम हिन्दू देवों और महापुरुषों के नामों के अनुकरण पर प्रचलित हुए। प्रतापचन्द्र, हर्षवर्धन, दुर्गादास जैसे नाम ऐतिहासिक पुरुषों के नाम पर रखे गये। देवियों के नाम पर भी सरस्वतीप्रसाद, भगवतीप्रसाद, यशोदानन्दन, लक्ष्मीदत्त आदि नाम प्रचलित हुए। देवी-देवताओं की मनौती करने पर पुत्र प्राप्त होने पर देवदत्त, देवीदयाल जैसे नाम दिये जाते थे। स्त्रियों के नाम भी देवियों और प्रसिद्ध महिलाओं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के नाम पर रखे गये। इस विषय में बंगाल के प्रभाव को भी नहीं भुलाया जा सकता। अविनाश, आशुतोष, क्षेत्रेश, विवेक, सुभाष, शरद् आदि नाम श्रुति माधुर्य के लिए ही अपना महत्त्व नहीं रखते, अपितु उनकी सार्थकता और सम्प्रेषणशीलता का भी स्थान है। आज नाम रखते समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि वह सार्थक, मधुर और संक्षिप्त हो। अनिल, पीयूष, राकेश, राजीव, संजीव, संदीप आदि नाम सुनने में प्यारे लगते हैं; साथ ही अर्थ व्यंजक भी होते हैं। स्त्रीवाची नामों के विषय में भी यही बात है। अच्छे नाम के अर्थ को समझकर व्यक्ति वैसा ही बनने की चेष्टा करता है। यही तो नाम का उद्देश्य है। यदि कोई अपने नाम के अर्थ के विरुद्ध आचरण करता है, तो लोग उस पर व्यंग्य बाण छोड़ कर उसे लज्जित करते हैं। नामों के सम्बन्ध में यह भी उल्लेखनीय है कि रावण, कंस, दुर्योधन, जरासंध आदि के नाम पर कोई नाम नहीं रखा जाता। इसका कारण यही है कि रावण आदि अपने दुर्गुणों के कारण कुख्यात हैं।

बच्चों के नामों को प्यार से संक्षिप्त रूप देते समय इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि नाम बिगड़ने न पाये। उदाहरणस्वरूप 'गोवर्द्धन' को 'गौबर' रूप देना उचित नहीं।

इसी प्रसंग में आज की बढ़ती हुई एक प्रवृत्ति पर भी संक्षेप में विचार करना आवश्यक है। आज अधिकतर भारतीय पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति का अन्धानुकरण करने में गर्व अनुभव करते हैं। इसी प्रवृत्ति के कारण प्रायः नई पीढ़ी के बच्चों को पप्पू, बब्लू, बिट्टू, मिन्टू, डब्बू, गुड्डी, बोबी, लवली, जूली आदि नाम दिये जाते हैं। इस प्रकार के सम्बोधन के औचित्य पर हमें शान्त मन से विचार करना चाहिए। लिकन, रोबिन्सन, जॉन, जॉनी आदि नामों का प्रयोग हिन्दू समाज की दास मनोवृत्ति और हीनभावना से ग्रस्त होने का प्रमाण है। लोग अपनी कम्पनी, फैक्टरी या दूकान का नाम भी इसी आधार पर जॉनसन, रैमसन आदि रख लेते हैं। लड़कियों के नामों पर भी यह छाप दिखाई देती है—सिम्मी, रूबी, लूसी, सेमी, मिचको, निकिता आदि नाम इसी मनोवृत्ति के द्योतक हैं, जो हमारी आत्महीनता का ढिंढोरा पीटते हैं।

अच्छा हो कि हम इस बाहरी प्रभाव से मुक्त होकर अर्थव्यंजक नामों को अपनायें, जो हमारे सामाजिक वातावरण के अनुकूल और हमारी सांस्कृतिक भावना के द्योतक और पोषक हों और हमारे बच्चों के लिए प्रेरणास्रोत सिद्ध हों।

मुरारी और उसकी पत्नी दांत के डाक्टर की दूकान पर पहुंचे।

"मैं एक दांत उखड़वाना चाहता हूं," मुरारी ने कहा। "और देखिये, सुन्न करने की जरूरत नहीं है, क्योंकि हमें जरा जल्दी है। बस, जल्दी से दांत निकाल दीजिये।"

मुरारी की बहादुरी से डाक्टर चकित हुआ। उसने कहा, "आप बड़े हिम्मतवर हैं, कौन सा दांत है?"

मुरारी पीछे मुड़ा और पत्नी से बोला: "चलो, आगे बढ़कर दांत दिखा दो।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शान्त मस्तिष्क

जितनी कठिनाई से जो वस्तु प्राप्त होती है उसका उतना ही अधिक मूल्य होता है। जो वस्तु जितनी कम मात्रा में सुलभ होकर भी सर्वाधिक उपयोगी हो और बहुत ही कठिनाई से उपलब्ध हो सके उसका मूल्यांकन बढ़ जाता है। लेकिन जितनी सरलता से प्रभु को याद किया जा सकता है और फिर भी हम याद नहीं कर पाते इसके पीछे उस नाम का ही महत्त्व है कि उसकी उपयोगिता का लाभ सबको सुलभ होकर भी शायद ही कोई ले पाता होगा।

कितनी गहराई छिपी है प्रभु की इस चमत्कारमय लीला में। इसे समझना और जानना शायद मानव के ज्ञानव के परे की ही बात है।

इसी प्रकार स्वार्थ और परमार्थ ये जीवन की दो अलग अलग धारायें हैं। जैसे सूर्य के रहते रात नहीं दीखती वैसे ही स्वार्थ के रहते परमार्थ नहीं दीखता। भले ही मन को कितना भी सन्तोष दें लेकिन स्वार्थी अपनी स्वार्थ साधना में जुट ही जाता है। फिर भी जीवन को वास्तविकता को देखते हुए स्वार्थ का महत्त्व है। हमें पहले स्वार्थ का चिन्तन कर लेना चाहिए क्योंकि इसे समझना सरल है। जब स्वार्थ की पूरी परिभाषा समझ में आ जाय तभी परमार्थ की ओर सोचने का प्रयास होगा, नहीं तो किसी भी समय गिर जाने की सम्भावना है।

'जीवन सूत्र' में कहा है कि विज्ञान और दर्शन में जीवन का सम्पूर्ण सार समाहित है। एक वह सत्य है जिसकी पदार्थ द्वारा सत्यता सिद्ध होती है और दूसरा वह सत्य है जिसे ज्ञान द्वारा समझा जाता है। शरीर द्वारा किये गये सम्पूर्ण कार्य विज्ञान में समाहित हैं व विचार द्वारा किया गया चिन्तन ही दर्शन है। विज्ञान की कसौटी सरल है। उसे कहीं भी सिद्ध किया जा सकता है तो दर्शन कठिन है। वह विकसित मस्तिष्क द्वारा ही सिद्ध हो सकता है। विज्ञान स्थूल है तो दर्शन सूक्ष्म।

किन्तु मस्तिष्क शान्त होना चाहिए, क्योंकि तनावपूर्ण स्थिति से सरल स्थिति अधिक उपयोगी है। शांत मस्तिष्क चिन्तन की स्थिति में धीरे-धीरे निर्णय लेता जबकि तनावपूर्ण मस्तिष्क से भूल की सम्भावना अधिक हो जाती है। नियमित चिन्तन से मस्तिष्क की विचार शक्ति एवं ग्रहणशक्ति दोनों विकसित होती है। कठिन से कठिन सिद्धान्त बहुत सरलता के साथ मन में आते हैं और पढ़ने पर ऐसा लगता है कि यह बहुत कठिन विचारधारा है जो सरलता से उद्घोषित हो गयी है।

प्रभु आश्रित

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—कुमारी माधुरी

गायत्री प्राणरक्षा तथा बुद्धिप्राप्ति मन्त्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

यही गायत्री मन्त्र है, जो वेदों का प्रसिद्ध मन्त्र है। विद्वानों ने तो वेदों का सार भी इसी मन्त्र को माना है। इसलिये इसे महामन्त्र के नाम से भी जाना गया है। कुछ विद्वानों का विचार है कि इसके जाप व अनुष्ठान से परम पुण्य-महाकल्याण-भवसागर तरण प्राप्त होता है। अतः इसे 'तारक,मन्त्र' के नाम से भी विख्याति मिली। इसके अतिरिक्त इसे प्राण रक्षक क्यों कहा गया है? यह आप इस प्रकार से समझने में सफल हो सकेंगे।

गायत्री मन्त्र दो शब्दों के मेल से बना है—गायत्री तथा मन्त्र। गायत्री में पुनः दो शब्द हैं गय तथा त्राण।

यजुर्वेद का प्रसिद्ध भाष्य शतपथ ब्राह्मण माना गया है। उसमें गय शब्द का अर्थ प्राण माना है। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने लिखा है 'गय ही गाय' है और त्र (त्राण) का अर्थ है रक्षण; अतः गाय + त्राण = प्राण रक्षण। इसके अतिरिक्त मन्त्र का अर्थ होता है मनन, विज्ञान, विद्या या ज्ञान। तो स्पष्ट है कि गायत्री मन्त्र में वह विद्या छिपी है जो रक्षा-विद्या, जीवन-विज्ञान अथवा साइन्स आफ लाइफ के रूप से जानें तो ज्यादा अच्छा होगा, क्योंकि जीवन रक्षा एक विशाल कार्यक्रम है। हर प्राणी इसे जानने को पूर्णतः तत्पर रहता है। सबल, निर्बल, धनी निर्धन, मूर्ख विद्वान् हर स्तर के प्राणी को अपने प्राणों से मोह होता है और इसकी रक्षा के लिये मनुष्य न जाने क्या-क्या कुछ करता है। पर यदि मनुष्य को पूर्ण रूप से यह विश्वास हो सके कि इस मन्त्र के जाप व अनुष्ठान से उसकी प्राण रक्षा होती है तो मेरे विचार से मानव जाति हर बुरे कृत्य को छोड़कर गायत्री मन्त्र के अनुष्ठान में अपना ध्यान केन्द्रित करने की चेष्टा कर सकती है।

प्राणरक्षा तो इस मन्त्र का केवल एक पहलू है। यदि इसकी व्याख्या विस्तार से की जाये तो इसमें हमारे जीवन को सुखी एवं समृद्ध बनाने की भी रहस्यपूर्ण क्षमता है, क्योंकि जब जीवन यानि प्राण की रक्षा होती है, तो उसके साथ साथ हमें जीवन को समृद्ध बनाने के लिये एक शक्ति व तेज भी, चाहिये। साथ-साथ तीव्र बुद्धि भी चाहिये जिससे हम जीवन को मानव बनकर जीना सीखें। इस प्रकार सारे मन्त्रों में यही एक महान् मन्त्र है, जो हमारी प्राणरक्षा, तेजप्राप्ति एवं बुद्धिविकास का एक मात्र साधन है। इस महामन्त्र की व्याख्या इस प्रकार से स्पष्ट होगी—

भूः—परमात्मा को सम्बोधित किया है।
भुवः—दुःखों से अलग करता है।
स्वः—सुखों को देने वाला।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तत—उस
सवितुः—प्रेरक या उत्पादक या सूर्य
वरेण्यं—वरने योग्य यानि धारण करने योग्य
भर्गः—तेज को
देवस्य—देने वाले यानि देवता
धीमहि—ध्यान करते हैं, धारण करते हैं।
धियः—बुद्धि को (कर्मों को)
यः—जो (तेज हमने धारण किया है)
नः—हमारी
प्रचोदयात्—सदा सन्मार्ग पर प्रेरित करता है।

अर्थात् सारे संसार को प्रकाशित करने वाले प्रभो ! मुझे ऐसा तेज प्रदान करो, जिससे मेरी बुद्धि निर्मल व शुद्ध बने। मैं सन्मार्ग पर चलते हुए वरण करने योग्य तेरे नाम को वरण करूं। यानि तुझमें लीन होकर तेरा ही गुणगान करूं, क्योंकि तू ही हमारे सब दुःखों को दूर कर सब सुखों का देने वाला है।

गायत्री मन्त्र का अर्थ एवं महत्त्व जब भली प्रकार से समझ आ जाता है, तब मन में यह भाव आता है कि यह मन्त्र जो इतना महत्त्वपूर्ण है और जिसके ध्यान में रहने से हमें अपने जीवन की हर सहायक वस्तु प्राप्त हो सकती है, उसका हम अपने जीवन में कैसे अनुष्ठान करें।

यदि हम अपना प्राचीन धार्मिक इतिहास उठाकर देखें तो हमें पक्के प्रमाण मिलते हैं कि आज हम जिन महापुरुषों—राम व कृष्ण—को ईश्वर मान रहे हैं, वे भी अपने जीवन काल में नित्य कर्मों से निवृत्त होकर प्रतिदिन गायत्री जाप करते रहे हैं। महान् शक्ति के प्रतीक रखने वालेशिवजी ने भी इस मन्त्र के जाप को अपना उद्देश्य माना था, अतः स्पष्ट है कि अपनेपूर्वजों के प्रिय मन्त्र से हम भी कुछ प्राप्त करें।

इसके जाप के लिये वैसे तो बहुत ही कड़े नियम हैं, जैसे कि प्रातः काल ब्राह्म मुहूर्त में स्नानादि से निवृत्त होकर ध्यान केन्द्रित करके मन ही मन इसका जाप यदि किया जाये तो हमारे जीवन पर एक अटूट प्रभाव डालता है, परन्तु फिर भी विशेष-कर आम ईश-प्रेमियों से मैं कहना चाहूंगी कि वह यदि इतने संयम से इसका जाप करने में असमर्थ हैं तो भी अपना जीवन कार्य करते-करते उठते-बैठते, सोते-जागते, चलते-फिरते, घरेलू कार्यों में रत अपने मन में इस मन्त्र का उच्चारण करते रहें। इस मन्त्र का मन ही मन जाप करने वाला व्यक्ति स्वयं ही कुछ दिनों में यह अनुभव कर सकता है कि इसके जाप से उसकी बुद्धि तथा स्मरणशक्ति पर क्या प्रभाव पड़ेगा। "हाथ कंगन को आरसी क्या"। स्वयं इसका जाप कुछ महीने लगातार करते रहें और इसका अद्भुत फल प्राप्त करें।

कुछ मनोवैज्ञानिक भी अपने अनुसंधान द्वारा इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि २४ अक्षरों के संगठन से बना यह महामन्त्र अद्भुत है और इसके मानसिक जाप अथवा वाणी के उच्चारण से भिन्न-भिन्न तरह की दिव्य तरंगें उठती हैं जो बुद्धि-मण्डल, मूलाधार चक्र तथा अन्य मर्मस्थलों पर जाकर स्पन्दन (चोट) करती हैं अर्थात् ऐसा प्रभाव डालती हैं, जैसे वीणा का तार छेड़ने से अद्भुत स्वर उत्पन्न होते हैं। उसी प्रकार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इसके जाप से हमारे मस्तिष्क में जो तरंगें उत्पन्न होती हैं वे हमारी बुद्धि को तीव्र करती हैं। इसका अनुभव हम इस प्रकार कर सकते हैं। यदि हम अपने मुख के आगे कोई पतली-सी झिल्ली या कागज रखकर कुछ बोलें तो वह झिल्ली या कागज हमें ऊपर नीचे उठता हुआ, यानि तरंगित होता दृष्टिगत होता है और हर शब्द के उच्चारण से वह कागज या झिल्ली अलग तरह से हिलती है। इससे हमें यह संकेत मिल जाता है कि इसी प्रकार की गति इसके जाप से जब हमारे मस्तिष्क में होती हैं तब वह हमारे मानस पटल पर अलौकिक वैज्ञानिक प्रभाव डालती है, जो हमारी बुद्धि को कुशाग्र बनाने में तथा स्मरणशक्ति को बढ़ाने में मदद करती है।

बुद्धि तीव्र करने के साथ-साथ इस जाप से मानस पटल पर जो स्पदन या गति उत्पन्न होती है, उसका एक और भी कार्य होता है कि हमारे मस्तिष्क में जो मलिनता रूपी अड़चन आ जाती है वह भी इन तरंगों द्वारा इधर-उधर झड़ जाती है और बुद्धि निर्मल व स्वच्छ हो जाती है जो स्वयमेव अच्छे कार्यों की ओर लग जाती है। जैसे धन कमाना, सांसारिक वैभव प्राप्त करना दूसरों से कुशल व्यवहार करना, आलस्य, प्रमाद से दूर रहना, झूठ व चोरी से बचना, निर्मल बुद्धि ही हमें आत्म दर्शन की ओर भी प्रेरित करती है।

इस मनोवैज्ञानिक तथ्य के अतिरिक्त एक और भी रहस्य बुद्धि को तीक्ष्णतर करने का हो सकता है कि इस मन्त्र में बुद्धि भगवान् से मांगी गई है और यदि एक बात बारम्बार किसी से मांगा जाये तो कभी न कभी उपलब्ध हो ही जाती है, तो यदि उस सर्वव्यापक-सर्वशक्तिमान्-न्यायकारी व दयालु प्रभु से बार-बार इस मन्त्र द्वारा बुद्धि मांगी जाये तो वह हमें प्रभु अवश्य देगा। यह भी हम बुद्धिजीवियों की धारणा है।

अन्त में मैं अपने पाठकों को यह अवश्य ही बताना चाहूंगी कि आप यह न सोचते रहें कि पश्चिमें देशों में तो ऐसा कोई मन्त्र नहीं जपा जाता तो क्या वहां के लोग बुद्धिमान् नहीं हैं? वे बहुत बुद्धिमान् हैं, पर वहां बुद्धि का अन्तर है। गायत्री मन्त्र में जो बुद्धि मांगी गई है वह मेधा बुद्धि, प्रज्ञा बुद्धि है, सुबुद्धि, सात्त्विक व दिव्य बुद्धि है, जिसकी कमी प्रायः पश्चिमी देशों में है ही, यह मैं दावे के साथ कह सकती हूं। यही कारण है कि आज वे देश इतने वैभवशाली होने पर भी दुःखी हैं और वहां के निवासी नींद की गोलियां खाये बिना सोने में असमर्थ हैं। इसके विपरीत हमारे देश में अमन शान्ति है तथा प्रभु भक्ति के रंग में रंगे लोगों से शान्ति प्राप्त करने के लिये उन देशवासियों को सदा मदद लेनी पड़ती है।

लेख की समाप्ति पर पुनः आप सबको एक बार यह बताना अपना पुनीत कर्त्तव्य समझती हूं कि यदि आप अपनी प्राणरक्षा सही अर्थों में चाहते हैं, अपनी बुद्धि को मेधा व प्रज्ञा बनाना चाहते हैं, जीवन के साथ-साथ सुख चाहते हैं, हर दुःख का निवारण चाहते हैं, तो उठते-बैठते, चलते-फिरते इस प्यारे-से २४ अक्षरों के महामन्त्र का जाप मन में करते रहने का प्रयास करें व इसका जादू स्वयं देखें। ●

धर्म-संकृस्ति और राष्ट्र पर
अन्तर्राष्ट्रीय इस्लाम आक्रमण व विदेशी पादरी
षड्यन्त्रों को विफल करने के लिए
हिन्दू रक्षा समिति
बना कर कार्य प्रारम्भ करें।

—वेदभिक्षु :

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मेरी अमृतसर यात्रा

—कैलाश सत्यार्थी

२० जून की रात को हम लोग फ्रंटियर मेल से अमृतसर रवाना हुए। हम यानी मैं और मेरे साथ एक अन्य कार्यकर्त्ता श्री श्यामनंदन थे। सुबह लगभग ७ बजे तक अमृतसर पहुंचे। ठेठ पंजाबी और कहीं-कहीं हिन्दी-उर्दू मिश्रित पंजाबी में भीड़ का शोर सुनाई दे रहा था। रिक्शे से हम लोग सीधे आर्यसमाज मंदिर लारेंस रोड पहुंच गए। वहां का दैनिक सत्संग उसी समय समाप्त हुआ था। मंत्री श्री रामनाथ शर्मा बड़ी आत्मीयता से मिले। हमारे ठहरने की व्यवस्था अतिथि कक्ष में कर दी गई थी। पहले दिन हम समाज के प्रधान श्री सीताराम आनंद, अमृतसर की प्रमुख समाज सेवी महिला माता कौशल्यादेवी जी और अपने अत्यन्त आत्मीय परिजन श्री इन्द्रदत्त जायसवाल जी से मिले। सभी को हमारे पहुंचने की सूचना दे दी गई थी।

यूं तो नगर में बारह आर्यसमाजें हैं, किन्तु उपस्थिति, भवन, वार्षिक बजट आदि के हिसाब से लारेंस रोड, श्रद्धानन्द बाजार, शक्तिनगर और माडल टाउन प्रमुख हैं।

अमृतसर पंजाब के प्रमुख नगरों में से है। मुख्य नगर बहुत घनी आबादी वाला है। संकरे गली-कूचों की भरमार है। अब तो नगर के बाहरी क्षेत्रों में सम्पन्न और आधुनिक कालोनियां बन गई हैं। सारे शहर में पंजाब की मूल संस्कृति पर पाश्चात्य सभ्यता-संस्कृति हावी लगती है।

रविवार को प्रातः साप्ताहिक सत्संग में काफी उपस्थिति हो जाती है। यज्ञ के बाद मेरा व्याख्यान कराया गया। उपस्थित लोगों में अच्छे बौद्धिक स्तर के लोग थे और व्याख्यान के बाद कुछ सज्जनों ने मुझसे अनेक प्रश्न भी किये। चूंकि व्याख्यान के अंत में मैंने वेद व अन्य धार्मिक साहित्य के प्रकाशनार्थ धन संग्रह की अपील की थी, अतः तुरंत ही आर्यजनों ने मन्त्री जी के माध्यम से धन संग्रह कर लिया और मंत्री जी ने समाज की ओर से मुझे पांच सौ रुपये की राशि दे दी।

समाज के कार्यक्रम के पश्चात् हम पृथक्-पृथक् जन-ज्ञान व वेद भाष्य के अपने कुछ सदस्यों से संपर्क को निकले। रात्रि तक इसी हेतु घूमते रहे।

हमने महान् शहीदी स्मारक जलियांवाला बाग देखा। बाग में घुसते ही मेरी नसों का खून जम-सा गया। इस बाग की मिट्टी का कण-कण सैकड़ों स्वातंत्र्य प्रिय लोगों के खून से सना लगता है। मुझे अच्छी तरह याद है कि बचपन में मैंने श्री 'सरल' का महाकाव्य भगतसिंह बहुत रुचि से पढ़ा था। जलियांवाला बाग के नृशंस हत्याकाण्ड का वर्णन रोंगटे खड़े कर देता है। १३ अप्रैल १९१९ को वैसाखी के दिन इस बाग में गांधी जी के आह्वान पर हजारों लोग एक सभा कर रहे थे। शांतिपूर्ण ढंग से स्वाधीनता प्राप्त करने के प्रयास पर व्याख्यान चल रहे थे। अंग्रेज अफसरों ने मैदान के एकमात्र संकरे रास्ते से घुसकर निहत्थे लोगों पर अन्धाधुन्ध गोलियां बरसानी शुरू कर दीं। अतावधान भीड़ समझ तक न सकी कि यह सब क्या हुआ। भय से व्याकुल और गोलियों के शिकार लोगों के चीखने-चिल्लाने की आवाजों से सारा वातावरण गूंज उठा। बूढ़े, बच्चे, शिशु,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महिलाएं, जवान सभी (जो गोलियों से बचे) अपने प्राण बचाने को इधर उधर भागे। खून से लथपथ शरीरों व लाशों के ऊपर से भागदौड़ करते लोगों को कोई रास्ता तो दिखाई दिया नहीं—दीवार फांदने की कोशिश करने लगे। उन गोरे राक्षसों ने तब भी गोलियां बरसाईं। दीवारों पर गोलियों के निशान अब भी गोरे साम्राज्यवाद की नृशंसता की कहानी कह रहे हैं। बाग (जो उस समय मैदान था) के कोने में एक कुआं है। भयाक्रांत व्याकुल भीड़ जब खून के कीचड़ में से कूदती बाहर की ओर भागने का असफल प्रयास कर रही थी, तब अनेकों लोग धोखे से इस कुएं में ही गिर गए। सारा कुआं लाशों से भर गया जिसमें से १२० लाशें निकाली गई थीं। मुझे वह घटना भी याद है किएक बालक—भगतसिंह की बहिन ने भगतसिंह के बंद कमरे में झांककर देखा तो वह एक छोटी बाल्टी पर फूल चढ़ाकर उसके सामने अगरबत्ती जलाये हाथ जोड़कर ध्यानमग्न खड़ा है। बहिन ने भागकर मां को यह बात बताई। अब दोनों मां बेटी खिड़की से सटकर खड़ी होकर अन्दर झांकने लगीं। भगतसिंह बहुत देर ध्यान-मग्न खड़ा रहा। फिर उसने बाल्टी एक छोटी अलमारी में भारत माता की तसवीर के पीछे रख दी। फिर अपनी आंख में झलक आए आंसू पोंछ कर दरवाजा खोला। अब तो मां और बहिन ने झपट कर भगतसिंह से पूछा कि बाल्टी में क्या है? तुझे क्या हुआ है? भगतसिंह कुछ न बोला। तब बहिन ने तसवीर के पीछे से बाल्टी उठाई तो उसमें खून से सनी मिट्टी थी। भगतसिंह बोला, "मां, यह जलियांवाला बाग की वह शहीदी मिट्टी है, जिसका कण-कण मुझे कुर्बानी के लिए पुकार रहा है। यही मेरी आराध्य भारत माता है। देखो मां, आज अपनी भारत माता कितनी दीन, हीन और असहाय है कि उसके बेटों के खून से विदेशी उसी की छाती रंग रहा है। धन्य हैं भारत माता के लाड़ले भगतसिंह।

जलियांवाला बाग में कदम रखते ही यह सारा का सारा स्मृति चित्र मेरी आंखों में बिजली की तरह कौंध जाता है और बाग का हर फूल—हर पत्ता मुझे खून से सना नजर आता है। मिट्टी में उगी दूब का हरेक तिनका मेरे मस्तिष्क की नसों में तीर की तरह चुभ कर हजारों सवाल एक साथ छोड़ता है। जिस आजादी के लिए अनेक पीढ़ियां, कुर्बान हो गईं, क्या वही आजादी हमें मिली है? अपनी भारत माता की रक्षा के लिए मैं क्या कर रहा हूं? यह कैसा अन्याय है कि हमारे भाइयों को तन ढंकने के लिए कपड़े, पेट भरने के लिए रोटी और सिर के नीचे छत नहीं है? मैं किसी और पर दोषारोपण क्यों करूं? ये सारे सवाल मेरे निजी हैं और मेरे जीवन के लक्ष्य में संकल्प की दृढ़ता पैदा करते हैं। किन्तु कहीं न कहीं सार्वजनीन भी हैं।

कुछ मिनिट बाद ही मैं सहज हो पाता हूं। फिर शहीदी कुआं, चित्रशाला आदि घूमकर देखता हूं। जलियांवाला बाग के निकट ही दरबार साहब—स्वर्ण मंदिर है। यह सिखों का पवित्रतम धर्म स्थान है। विशाल मुख्य द्वार पर संगमरमर के पत्थरों का भव्य काम है—अन्दर सीधा गलियारा है। जो तालाब के चारों तरफ के चौकोर गलियारे से जुड़ता है।

सड़क पर से ही मुख्य मंदिर का ऊपरी भाग देख कर आंखें चुंधिया जाती हैं। विशाल मंदिर को सोने की पतली पत्तियों और ताम्बे की स्वर्णाच्छादित चादरों से ढंका गया है। सोने के शिखर, दीवारें और दरवाजे—सभी पर बहुत कलात्मक और सुन्दर नक्काशी की गई है। चौकोर ताल के बीचों-बीच बने इस मन्दिर तक पुलनुमा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रास्ता जाता है। मुख्य मंदिर दो तलों में है। अन्दर बिजली के फानूसों से झरता प्रकाश, चमकीले सोने और रंगीन नगों व संगमरमर का आकर्षण हजार गुणा बढ़ा देता है। पंजाबी भाषा में सिख धर्म गुरु संगीत गाते बजाते रहते हैं। ऊपर के तल पर ग्रंथी गुरुग्रंथ साहब का पाठ करते रहते हैं।

वहां से लौट कर हम पुनः अपने काम में लगे और कुछ लोगों से संपर्क करके सहयोग प्राप्त किया।

रात को लगभग १० बजे वापिस मंदिर लौटे। सोमवार को सुबह छः बजे हम माडल टाउन आर्य समाज के कर्मठ मंत्री श्री केदारनाथ जी मिले। उन्होंने कुछ व्यक्तियों से सपर्क कराया। बाद में हम लगभग दस बजे स्व० ललितकुमार स्मृति अस्पताल देखने गए। यह अस्पताल समाज सेविका और आर्यसमाज की निष्ठावान् कार्यकर्त्री माता कौशल्या देवी ने अल्पायु में दिवंगत हुए अपने पुत्र की स्मृति में बनवाया है। रोगियों के लिए लगभग १० छोटे-बड़े कमरे हैं— पुरुषों के व स्त्रियों के विभाग के लिए चिकित्सक अलग-अलग हैं। सभी प्रकार के परीक्षणों की सुविधाओं से युक्त इस अस्पताल में लगभग २०० रोगी प्रतिदिन सस्ता इलाज कराते हैं। संस्थापिका जी का कहना है कि वह स्वयं इसे मंदिर समझकर प्रतिदिन २ घण्टे वहां भरती हुए रोगियों की देखभाल करती हैं।

वहां से हम लोग श्री इन्द्रदत्त जी के घर पहुंचे। फिर माता आज्ञावती जी से मिले। ८४-वर्षीया माताजी के शरीर और मन की स्फूर्ति बड़ी प्रेरणादयाक है।

दोपहर को हम डा० तुलसीदास जी से मिले। वह बिस्तर पर पड़े थे, किन्तु उन्होंने अत्यन्त आदर से हमारा स्वागत किया और बगैर हमारे कुछ कहे आर्थिक सहयोग भी दिया। उनकी उदारता से हम बड़ प्रभावित हुए।

रात तक यही क्रम चलता रहा। मंगलवार को फिर सवेरे से ही हमने संपर्क शुरू कर दिया और अधिकतम भाई बहिनों से संपर्क का प्रयास किया, क्योंकि दूसरे ही दिन अर्थात् बुधवार को हमें लौटना था। रात तक सम्पर्क का क्रम जारी रहा। बुधवार प्रातःकाल पौने दस बजे बम्बई एक्सप्रेस से लौटने का हमारा कार्यक्रम था, अतः दैनिक यज्ञ के बाद हमने समाज के प्रधान, मंत्री और पुरोहित जी आदि से विदा ली तथा कुछ सज्जनों से सहयोगार्थ मिलने चल दिये। भागदौड़ में हमारी गाड़ी छूट गई। फिर मदिर लौटना पड़ा। सामान रखकर कुछ लोगों से सम्पर्क किया और दोपहर की गाड़ी फ्लांइग मेल से पौने एक बजे दिल्ली के लिए रवाना हो गये। इस यात्रा में हमें लारेंस रोड समाज के मंत्री श्री रामनाथ जी, माडल टाउन के श्री केदारनाथ जी, योग्य और सरल प्रधान श्री आनन्द जी, लारेंस रोड समाज के प्राण श्री मुन्नीलाल जी, श्रद्धानन्द बाजार समाज के प्रधान जी व पुरोहित श्री सत्य-स्वरूप जी आदि से बड़ा स्नेह और सम्मानपूर्ण व्यवहार मिला जिसके लिए मैं इन सब का आभारी हूं।

यद्यपि कुछ लोगों से आलोचना भी मिली, किन्तु हम उसे आशीवांद की तरह मानकर आगे बढ़ रहे हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ये चलते–फिरते कब्रिस्तान– एक विश्लेषण

—कैलाश सत्यार्थी

आप चौंकिये मत, मैं कोई तिलस्मी दुनियां की बात नहीं कर रहा। जी हां, मेरी तरह आपका भी अनेकों चलते-फिरते कब्रिस्तानों से पाला पड़ा होगा। कुछ आपके मित्र भी होंगे, पिछले दिनों मेरे अंतरंग मित्र के विवाह के सिलसिले में लड़की के घर जाने का मौका मिला। क्या बताऊं साहब, सारा घर ही कब्रिस्तान था। अजी जनाब विश्वास तो कीजिए। कब्रिस्तान के मायने ऐसी जगह, जहां लाशें दफनाई जाती हों। अगर किसी के पेट में ही बकरों, मुर्गों, तीतर,-बटेरों आदि की लाशें दफनाई जायें तो क्या वह व्यक्ति खुद चलता-फिरता कब्रिस्तान नहीं हुआ ?

दरअसल जिस 'कब्रिस्तान' का जिक्र मैं कर रहा हूं वे जन्मजात मांसाहारी हैं। साथ ही अंग्रेजियत और आभिजात्य का असर भी पूरा-पूरा है। वैसे वे काफी योग्य, पढ़ी-लिखी और समझदार भी हैं। जाहिर है कोई धार्मिक, नैतिक अथवा आप्त वचनों जैसी दलील मांसाहार के विरोध में उनके लिए कोई सार्थकता नहीं दे सकती। वैसे तो कर्मावेश सभी कथित आधुनिक और प्रगतिशील के साथ समस्या है। फिर भी हमारे इर्दगिर्द लगातार सामिष भोजियों का बढ़ना न केवल उनके व्यक्तिगत पतन बल्कि सार्वजनीन चिंता का विषय भी है। हमारे नैतिक व धार्मिक साहित्य में सामिष भोजन पर कड़ाई से पाबन्दी की व्यवस्था और उपदेश हैं। इससे तामसी प्रवृत्तियों का उत्पन्न और विकसित होना बताया है। लोक जीवन में भी 'जैसा खाओगे अन्न वैसा होगा मन' जैसी उक्तियों के जरिये मांसाहार को हेय बताया गया है। और यह वास्तविकता भी है कि इसके पीछे निर्दयता- क्रूरता व हिंसा के अमानवीय मूल्य ही सक्रिय रहते हैं, भले ही खाने वाला इसे प्रत्यक्षतः न समझे।

दुर्भाग्य से आज का आधुनिकतावाद जिस तरह की फूहड़ और फैशनेबुल संस्कृति को विकसित कर रहा है। उसमें हर एक पुरानेपन को नकार देना भी एक गौरवशाली अनिवार्यता बन गई है, स्वाभाविक है आहार संस्कृति भी समूचे नैतिक साहित्य (सात्विक-तामसिक चिंतन) को झमेला मानकर भड़कीले रेस्तराओं में छुरी कांटों से सजी चमचमाती प्लेटों में रखे मटन पुलाव, कलेजी, चिकन, बिरयानी के इर्दगिर्द ही पहुंच जाए। आधुनिकता की आधारहीन नकल ने कहीं न कहीं संस्कृति के हर पहलू पर अतिक्रमण किया है, आहार संस्कृति पर भी। यही वजह है कि आज के कथित आधुनिक समाज में मांसाहारी से यह पूछा जाता है कि वह मांस क्यों खाता है, बल्कि मुझ जैसे शाकाहारी से यह पूछा जाने लगा है कि मैं मांस क्यों नहीं खाता ? ठीक उसी तरह जैसे यह कि मैं सिगरेट क्यों नहीं पीता और अवश्य ही पूछा जाता है कि मैं शराब क्यों नहीं पीता ? विडम्बना यह है कि ये सब 'एटीकेट्स'। दोस्तों के बीच अपने आपको 'एडवांस्ड' व सिविलाइज्ड' साबित करना भी तो जरूरी हो गया है न !

आज छोटे कस्बों से लेकर महानगरों के किसी आधुनिक रेस्तरां में चले जाइए। मेज पर पड़े मीनू पर नजर डालते ही शुरू में आठ-दस सामिष व्यंजनों के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नाम मिल जाएंगे। वैरे से क्या है पूछने पर जवाब में एक ही सांस में वह कई सामिष नाम गिना देता है' वाद में दो चार शाकाहारी भी। ग्राहक मीनू के शुरू की वस्तुओं का 'आर्डर' देना ही अपनी शान और रुतबे के अनुकूल समझता है, तात्पर्य यह है कि रौब-रुतबे और दिखावे की सभ्यता के विकास के साथ ही मांसाहार का प्रचार हो रहा है। मजेदार बात तो यह भी है कि जो वास्तव में शाकाहारी ही हैं, उनके लिए 'वेजिटेरियन कलेजी', वेजिटेरियन पुलाव, शाकाहारी आमलेट आदि ऊंचे दामों पर मिल रहे हैं। इन नामों और शक्ल से कितना लगाव हो गया है यह तर्क भी बिल्कुल अर्थ हीन है कि स्वाद की दृष्टि से मांसाहार अपेक्षाकृत अधिक रूपों में मिलता है, क्योंकि अण्डे और मांस के मूल भोज्य पदार्थों की संख्या पांच-छः से ज्यादा नहीं, जबकि ४० से ५० किस्म की शाक-सब्जियां, २४ किस्म के फली वाले पदार्थ, १२ किस्म के गिरीदार पदार्थ और ९-१० किस्म के अन्न मूलतः भोज्य पदार्थ की तरह इस्तेमाल किये जाते हैं। (दिनमान, १४, नव० ७६)

ऐतिहासिक पहलू—आज का प्रगतिशील वर्ग एक ओर तो आदमी की पैदाइश में डार्विन के विकासवाद को आधार मानता है, दूसरी ओर सामिष भोजन को भी अप्राकृतिक नहीं मानता। यह बड़ी अंतर्विरोधी बात है, क्योंकि डार्विन के हिसाब से आदमी बंदर का वंशज है, जबकि बंदर मूलतः शाकाहारी है, अतः मानव भी उसी श्रेणी में शाकाहारी हुआ। हां अगर ये लोग पूंछ घिस जाने की कमी को मांस खाकर पूरी करना मानते हों, तब बात अलग है।

ऐतिहासिक तौर पर ऐसा कोई लेखा जोखा उपलब्ध नहीं कि आदमी ने कब और कैसे मांस भक्षण शुरू किया। फिर भी ऐसा समझा जा सकता है कि असभ्य और जंगली जनजातियों ने स्वाभाविक शाकाहार के अभाव में पशुओं को देखा देखी यह सीखा होगा। कालान्तर में मानवीय सभ्यता के विकास तथा वैचारिक दार्शनिक जागृति के साथ ही इसे रोकने की कोशिश भी चलीं, ई० पू छटी सदी में योरोप में पाइथोगोरस और उसके अनुयायियों ने व इसी समय भारत तथा एशिया के बौद्ध-जनों ने मांसाहार का विरोध किया। यूं तो वैदिक वाङ्मय में शुरू से ही हिंसा-मांस भक्षण का निषेध था। योरोपीय देशों में प्लेटो, अरस्तू, एपीक्यूरस, प्लूटार्क जैसे विचारकों की लम्बी श्रृंखला ने मांसाहार का विरोध किया। याद रखना चाहिए ये सभी नाम अपनी-अपनी जगह तत्कालीन वैचारिक व बौद्धिक विकास की पराकाष्ठा के रूप में इस्तेमाल किये जा सकते हैं।

भारतीय आहार संस्कृति को मुगल कालीन बादशाही-सामंती संस्कृति को ने बहुत प्रभावित किया। शासक वर्ग की सभ्यता, पहनावा, खानपान किसी भी गुलाम देश में शासित के लिए आदर, आकर्षण और नकल का विषय रहा है। सामिष भोजन को शाही सामंती व रईसी पसन्द का आधार मिलने से, वे भारतीय जातियां जो इनके आस-पास कार्यरत थीं, बड़े शौक और शान में सामिष भोजन का उपयोग सीखीं। वैसे हीअंग्रेजी काल में राजकीय सभ्यता के कई मानदण्ड बदले, किन्तु मुर्गा, तीतर, बटेर वाला मामला जस का तस बना रहा। इसके बाद भी हिन्दुस्तानी सत्ता और सम्पत्ति वालों का दिमाग रौब, रुतबा और रईसी से ग्रस्त बना है। यही आज सब चल रहा है।

मांस भक्षण का प्राणिशास्त्र—प्राकृतिक तौर पर प्रत्येक किस्म के प्राणी का पाचनतंत्र उसके भोजन के प्रकार और स्वभाव के अनुकूल बना है। इसे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यूं भी कहा जा सकता कि किसी प्राणी के पाचन तंत्र के अनुकूल कोई विशिष्ट प्रकार का भोजन ही होता है। जिस तरह मांसाहारियों (शेर, भेड़िया, कुत्ता आदि) के दांत पैने और नुकीले होते हैं, ताकि वह खाल काटकर आसानी से हड्डियों पर से गोश्त खरोंच सकें, इसे पचा सकने के लिए भोजन नला और आंतों की लम्बाई कम होती है, जीभ की लम्बाई ज्यादा होती है, उसी तरह निरामिषभोजियों के लिए भोजन चबाकर खाने की सहूलियत के लिए चौड़े 'प्रिमोलर-मोलर' और चपटे 'इंसाइजर्स' किस्म के दांत रहते हैं। देर तक निरामिष भोजन को पचाने के लिए आदमी के पेट में २२ फुट लम्बी आंत प्रकृति ने दी है आहार नली में भी 'वर्मी फार्म एपेंडिक्स' तथा 'सीकम' (अन्न से सूक्ष्म तत्त्वों के अलग करके रक्त को भेजने वाले सूक्ष्म अग) केवल निरामिषभोजियों में ही होते हैं, जो आदमी में हैं। वैसे भी प्राणि शास्त्र के हिसाब से आदमी केवल निरामिष भोजियों के वर्ग 'प्राइमेट' में आता है। जाहिर है मानव मूलतः मांसाहारी नहीं हैं, सूक्ष्म जैविकी (माइक्रोबॉयलाजी) की मान्यता है कि मारे और तरासे गए पशुओं के पास में विषाणुओं (वाइरस) और रोगाणुओं (बैक्टीरियाज) का असर बहुत तेजी से होता है, बूचड़खाने के गन्दे वातावरण में तो वाइरस और तेजी से पनपते हैं। इतना ही नहीं, पशुओं के मरते ही अनेकों जैव रासायनिक (बायोकेमिकल) क्रियाएं पशु शरीर में घटती हैं, जिनका असर मांस भक्षियों पर ही पड़ता है। जीवित पशुओं व पक्षियों के शरीर चलने वाली मेटाबोलिक क्रियाओं के कारण कोशिकाओं में निर्माणाधीन दूषित और उत्सर्जी पदार्थ (मल मूत्र) बच रहते हैं जो मांस को और भी अधिक गरिष्ठ बनाते हैं। हालांकि पकाते समय गर्मी पाकर कुछ बैक्टीरियाज जरूर मर जाते हैं, किन्तु वाइरस (विषाणु) तथा उत्सर्जी पदार्थ अधिक सान्द्र बन जाया करते हैं। ये दोनों व उत्तेजना पैदा करते हैं। मांस का लगातार भक्षण मस्तिष्क की कोशिकाओं पर विषैला व उत्तेजक असर बनाए रखता है। मांसाहारी में क्रोधी, हिंसक, कामुक प्रवृत्तियो का विकसित होना स्वाभाविक ही है। फिर एक बात और, हमारे आस पास ऐसे लोग तो बहुतायत में मिलते हैं जो शुद्ध शाकाहारी होते हैं, किन्तु ऐसा विरला ही मिलेगा जो केवल मांस खाकर ही जीता है। ऐसा व्यक्ति मिले भी तो वह आदमीयत की अपेक्षा पशुता के ज्यादा निकट होगा।

डा० हेनरी परडो का कथन है कि 'मांसाहारी की तुलना में शाकाहारी कम रोगग्रस्त होता है?' यूरिक एसिड पर अनेकों अनुसंधान करने वाले वैज्ञानिक डा० एलेक्जैण्डर हेग ने लिखा है—'मांस से यूरिक एसिड बहुत बनती है जो अनेकों रोगों को जन्म देती है। जर्मनी की विश्व प्रसिद्ध होम्योपैथी चिकित्सक एलिजाबेथ बेगन मांस को केवल विलासिता और हिंसक-फूहड़ संस्कृति की वस्तु मानती है। उन्होंने अपने रोगियों पर लम्बे प्रयोगों के बाद पाया कि शाकाहारी पर सक्रामक कीटाणु प्रभावशील नहीं होते। साथ ही शाकाहारी रोगी पर होम्योपैथिक औषधियां शीघ्र और स्थायी प्रभाव डालती हैं, जबकि मांसाहारी पर अधिक शक्तिशाली औषधियां भी कठिनाई से प्रभाव डालती हैं। वे आगे लिखती हैं कि पश्चिम के अस्पताल स्थायी रोगियों से भरे पड़े हैं। उन्होंने जब भारत की पाठ्य पुस्तकों में मांसाहार पकाने की विधियां और पाकशास्त्र में मछली-अण्डों के गुण वर्णन का समावेश देखा तो वे रो उठी। अपने प्रयोगों के आधार पर कैण्डिल महोदय ने तो यहां तक दावा किया है कि मांसाहारी आलसी और कमजोर होते हैं। वे तब ही काम करते हैं, जब किये बगैर चारा नहीं, वे शकते भी जल्दी हैं। डा० ग्रीनफील्ड ने इस तथ्य का और भी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पोषण किया है कि जितनी देर में योरोपीय दस मछलियां पकड़ता है, उतनी देर में मांसाहारी एस्किमा केवल एक ही पकड़ पाता है।

मांसाहार और पौष्टिकता का भ्रमजाल,— अपने दिमागों को गिरवी रखकर चलने वाले फैशनेबुल आधुनिकतावादियों ने यह भ्रमजाल बड़े जोरशोर से फैला रखा है कि मांस में शाकाहार की अपेक्षा अधिक पौष्टिक और ऊर्जादायक तत्त्व होते हैं। किसी किसी की हास्यास्पद दलील यह भी रहती है कि अन्य प्रकार का भोजन पेट के भीतर जाकर जिस मांस को निर्मित करता है, यदि मूलतः वही खाया जाय तो कितना शक्तिशाली होगा। उन बेचारों को पता होना चाहिये कि सामिष भोजन को भी उसी पाचन तंत्र से गुजरना पड़ता है जिससे अन्य प्रकार का भोजन। मांस भीतर जाकर कहीं गले या पेट में चिपक नहीं जाता। ऐसा होने पर तो सारा मामला ही खत्म हो जायेगा। खैर!

'वेजिटेरियन वर्सेज मीट ईटिंग' के एक अंश की तालिका यहां प्रस्तुत है जिससे स्वतः ही अनुमान लगाया जा सकता है।

(दिनमान १४ नव. ७६ में प्रकाशित)

निरामिष	प्रोटीन	वसा	कार्बोहाइड्रेट	कैल्शियम	लोहा	जल
१. गेहूं (आटा)--	१२.१	१.७	७२.२	८.४	७.३	१२.२
२. चावल—	८.५	०.६	७७.४	०.१	२.८	१२.६
३. मूंग—	२४	१.३	५६.०	०.४	८.४	१०.४
४. उड़द—	२४	१.४	६०.३	०.२	६.८	१०.४
५. अरहर—	२२.३	१.७	५७.२	०.१४	८.८	१५.२
६. मसूर—	२५.१	०.७	५६.८	०.१३	२.०	१२.४
७. मटर—	२२.६	१.४	६३.५	०.३	३.२	६.६
८. चना—	२२.५	५.२	५८.६	०.७	८.६	११.२
९. मूंगफली—	३६.५	३६.८	१६.३	०.५	०.३	४.२
१०. घी—	—	९८.८	—	—	—	+

	प्रोटीन	वसा	कार्बोहाइड्रेट	कैल्शियम	लोहा	जल
सामिष—						
१. मुर्गी का अण्डा	१३.१	१३.३	...	०.६	२.१	...
२. मछली	२२.६	०.६	...	०.२	०.१	...
३. (मांस) भेड़, बकरी, मुर्गा)	१८.५	१३.३	...	०.१५	२.५	...

क्या अभी भी हमारे कब्रिस्तानों को और भी ऊर्जावान् बनाने का शौक है? फिर भी ऊर्जा व प्रोटीन वाले मामले को जरा और विस्तार से समझ लिया जाय। हमारे शरीर को चलाने में तथा दैनिक कार्यों में खर्च होने वाली ऊर्जा का जोड़ हमें भोजन से मिलना चाहिये। अन्दाजा लगाइये कि एक लीटर पानी के १ डिग्री से०ग्रे० तक गर्म करने में खर्च होने वाली ऊर्जा १०० कैलोरी होती है। इसी को आधार मानकर समझ लिया जाये कि हमारे देश में कागजी काम करने वाले को २५०० कैलोरी ऊर्जा की जरूरत होती है जब कि गद्दी सोफा पर बैठे रहकर नौकरों पर हुकुम चलाने वालों को मात्र १६०० कैलोरी ऊर्जा चाहिये। इस स्थिति में मांसाहार तो क्या अधिक मात्रा में शाकाहार भी आवश्यक व अनुपयोगी है। इसे नहीं भूलना चाहिये कि किसी उच्च मध्य वर्ग में मांसाहार का प्रचलन बढ़

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रहा है। शारीरिक काम करने वाले मजदूर को ४००० से ५००० कैलोरी ऊर्जा की आवश्यकता पड़ती है। वैसे भी मांसाहार औसतन उसके बूते के बाहर की बात है। दूसरे उतने धन में वह शाकाहार से ही इससे अधिक ऊर्जा प्राप्त कर सकता है।

संतुलित भोजन के मुताबिक शरीर के वजन के हिसाब से प्रति किलोग्राम वजन के लिए १ ग्राम प्रोटीन, एक ग्राम वसा, तथा ४ या ५ ग्राम कार्बोहाइड्रेट चाहिये। इस तरह ७०-७५ किलो के युवक के लिए औसतन आधा किलो आटा या चावल, ७० ग्राम घी, चिकनाई ७० ग्राम दालें, हरी सब्जी वगैरह चाहिए। यह इतने ही मूल्य के सामिष भोजन की अपेक्षा अधिक संतुलित आहार है। गाय के दूध से अधिक पाचक व संतुलित आहार तो दूसरा है ही नहीं। जहां तक दूध की बढ़तीं हुई कीमत कासवाल है उसकी सीधी सी वजह यहहै कि दुग्ध व्यापार के बजाय हमारी राष्ट्रीय ओर वैयक्तिक रुचियों अन्य विलासी एवं खाद्य उत्पादकों की तरफ बंटी हुई हैं।

कुछ लोगों के पास यह भी दलील रहती है कि अगर पशुओं को न मारा जाय. तो उनकी संख्या इतनी ज्यादा बढ़ती जायगी कि मानवता के लिए खतरा पैदा हो जायेगा। यह और भी हास्यास्प्रद बात है। क्योंकि जिन जानवर जातियों का इस्तेमाल यह चलते-फिरते कब्रिस्तान नहीं करते। क्या चारों तरफ उनकी बाढ़ आ गई हैं? हमें तो ऐसा कुछ लगता नहीं, दरअसल उनको समझना चाहिये कि अव्वल तो होती नहीं, फिर भी पशुओं की संख्या में वृद्धि से मानवता को उतना खतरा नहीं है जितना जनसंख्या की वृद्धि से, रोक लगानी ही है तो जनसंख्या वृद्धि पर जायज तरीकों से लगाई जाय। वैसे भी प्रकृति स्वतः ही वनस्पति और पशु-संख्या के बीच एक संतुलन कायम रखती है। हाथियों को तो कोई नहीं खाता। शेरों, गैंडों का गोश्त तो इनके पुरखों ने भी नहीं खाया होगा, फिर धरती पर से उनकी संख्या क्यों निरन्तर कम हो रही है? प्रकृति ने सभी को आजाद बनाया है। फिर इस तरह की दलीलें देते समय सोचना चाहिए कि उस तर्क के पीछे हमारी जो प्रवृत्ति और मूल्य काम कर रहे हैं। वे किस सीमा तक जीवन के पक्षधर हैं और कितने जीवन विरोधी? इस तरह का कोई भी तर्क जीवन मूल्यों की ही विरोध करता है।

जो लोग यह समझते हैं कि बल, आयु, बुद्धि, फुर्तीलेपन की दृष्टि से मांसाहारी आगे हो सकते है। वे बड़ी गलत फहमी में हैं ··· प्राणियों में बन्दर घोड़ा हिरन, गैंडा, हाथी वगैरह अलग अलग उपरोक्त दृष्टियों से मांसाहारियों से बहुत आगे हैं। मनुष्यों के उदाहरणों में मास्टर चंदगी राम या सत्य पाल जैसे गुरु हनुमान के सभी पहलवान शिष्य शुद्ध शाकाहारी होते हुए भी सर्वोच्च विजेता रहें हैं। १९७० में कासा ब्लाका हज मोह बने बशीर का निधन १६६ वर्ष की उम्र में हुआ था अभी उनका बड़ा बेटा ११७ वर्ष का है उनके ३५ बेटे बेटियां हैं और लगभग १६० पोते पोतियां हैं। हज साहब, जिन्दगी भर उबली हुई शाक सब्जियां खाते रहे और उनकी अधिकांश लगभग १०० वर्षीय सन्ताने अभी शाकाहारी हैं। सापेक्षता सिद्धांत के प्रतिपादक इस युग के महान् वैज्ञानिक स० आइनस्टाइन जैसे अनेकों वैज्ञानिक शाकाहारी ही थे और हैं भी।

मैं समझता हूं अब इन कब्रिस्तानों के पास कोई तथ्यपूर्ण तर्क होगा नहीं फिर भी बगैर जानकारी के सामिष संस्कृति के अन्य खतरनाक पहलुओं पर भी चर्चा कर ली जाये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सामिष भोजन का अर्थशास्त्र--- बहुधा हमारे निर्णय और कार्य विचारपरक होने के बजाय दृष्टिपरक ही होते हैं। इसी लिए कई गम्भीर मामलों को हम सत ही ढंग से देख पाते है। मांसाहार भी ऐसा मुद्दा है, मांसाहार का आर्थिक पक्ष कितना गम्भीर है। इस पर प्रसिद्ध अमेरिकी लेखिका फ्रांसिस मूरलेप की बहुचर्चित पुस्तक 'डाइट फार ए स्माल प्लेनेट (एक लघु ग्रह के लिए आहार) ने बड़ा तहलका मचाया।

उन्होंने तथ्यों, आँकड़ों के जरिये गम्भीर विश्लेषण से यह सिद्ध कर दिया है कि मानव शरीर के लिए मांसाहार की कतई जरूरत नहीं है। उससे कहीं बेहतर प्रोटीन निरामिष आहार से मिल सकते हैं। साथ ही मांस उत्पादन हेतु जितना अनाज पशुओं को खिला दिया जाता है उससे सारी जनसंख्या को समुचित प्रोटीन मिल सकता है।

बड़ी शान से छुरी कांटा चलाने वाले किसी 'कब्रिस्तान' साहब का दिमाग अगर शोरबे की प्लेट की गोलाई तक फैलाकर देख ले तो आंखें खुल जायेंगी। आज समृद्ध देशों का लगभग ९० प्रतिशत अनाज मांस देने वाले पशुओं को खिला दिया जाता है। कितनी दर्दनाक है यह बात कि इसी धरती के किसी कोने में अपनी मां के कलेजे से चिपटा हुआ कोई बेटा 'रोटी-रोटी' चिल्लाते हुए दम तोड़ दे। कटोरा भर अनाज के लिए किसी बहन को अपना शरीर बेचने पर मजबूर होना पड़े। जब कि दूसरी तरफ उन्नत देश लगभग ४२,०० लाख मीट्रिक टन अनाज पशुओं को सालाना इसलिये खिला दें कि अच्छा मांस मिल सके, इतना अनाज भारत की पूरी जनसंख्या के लिये चार छै साल के लिये पर्याप्त है। अमेरिका के लगभग ८०-८५ फीसदी मांसदाता पशुओं का चारा ही अन्न, दाल, सोयाबीन व अन्य दुग्ध पदार्थ हैं। १९७५ में १९६० की अपेक्षा ६० प्रतिशत अधिक अन्न अमेरिकी बछड़ों को खिलाया गया, आखिर यह कौन सी मानवीयता या वैज्ञानिकता है।

उन्नत देशों में एक किलो मास प्राप्त करने के लिए २० किलो अनाज या उसी तरह के पदार्थ पशुओं को खिलाये जाते हैं। अकेले अमेरिका के लोग इस तरह जितना अन्न खर्च करते हैं उतना भारत जैसे तिगुनी जनसंख्या वाले देश को दो साल चल सकता है। इस सारी स्थिति को देखकर दुनिया भर के अर्थशास्त्री और कृषि विशेषज्ञ मांसाहार रोकने के लिए लगातार चेतावनियां दे रहे हैं। प्रसिद्ध अमेरिकी अर्थशास्त्री सिलवन विलटर ने सचेत किया है कि अगर औद्योगिक देश अनाज को सीधे न खाकर, मांस खाना पसंद करते रहेंगे। तो दुनिया में अन्न की मांग बढ़ती ही रहेगी। एक अन्य अमेरकी कृषि अधिकारी लायल पी० शर्टज् के अनुसार हम जितना अनाज पशुओं को खिला देते हैं, उतना ही गरीब देश अपने भोजन के लिए काम में ला सकते हैं।

यहां यह दलील दी जा सकती है कि यह मामला तो उन्नत देशों का है= भारत जैसे देश में जहां अन्न पर्याप्त मात्रा में नहीं होता, वहां मांसाहार उचित ही है। तत्कालिक रूप से यह बात कुछ लुभावनी है। किंतु अदूरदर्शितापूर्ण है। ऊपर यह सिद्ध किया जा चुका है कि अन्न उत्पादक और दुग्ध उत्पादन, मांसोत्पादन से सस्ते हैं, दूसरे, भारत जैसे अधिकांश गरीब देशों के पास खाली जमीन अभी भी इतनी मात्रा में हैं कि यदि उसका उपयोग किया जा सके तो अन्न व दूसरे शाकाहारी पदार्थ निर्यात की स्थिति तक पहुंच सकते है। फिर एक बात और है। मांस वाला मामला अंतर्राष्ट्रीय है। ऐसा कतई सम्भव नहीं है कि पड़ोस के गरीब देश का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नागरिक ठाठ से चिकन, बिरयानी पर छ रियां चलाये और अमेरिकी या जर्मन मुंह में पानी भरे टुकटुकी लगाए देखता रहे। वह मांस भक्षण छोड़कर अनाज को गरीब मुल्कों को निर्यात होने दें। दरअसल जब तक मांस भक्षण के खिलाफ एक सार्वभौमिक मुहिम नहीं चलती यह दुश्चक्र बरकरार रहेगा।

इस सिलसिले में अमेरिका के अन्दर ही झांक कर देखा जाय तो, बड़े लोग मांस के मंहगे व्यंजनों को खा सकने में समर्थ हैं। उनकी तो कोई बात नहीं, किन्तु जो लाखों लोग कम समर्थ है वे कुपोषण के दायरे में पहुंच गये हैं। हालिंग्स अर्नेस्ट ने अपनी पुस्तक 'भूख के विरुद्ध वकालत' में साफ लिखा है, आज लाखों अमेरिकी भूखे हैं, और इस बात के वैज्ञानिक संकेत हैं कि इस देश में आम पोषण की स्थिति इस समय वैसी ही है जैसी द्वितीय विश्व युद्ध के अन्त में थी।

मांस की अर्थनीति का एक और पहलू भी है। आज दुनिया के वैज्ञानिकों को पेय जल की कमी का गम्भीर खतरा लगातार परेशान कर रहा है। आधुनिक औद्योगिक संस्कृति और बढ़ती हुई जनसंख्या की वजह से पेय जल में लगातार कमी का गम्भीर संकट आने वाला है। प्रसिद्ध अमेरिकी पत्रिका 'टाइम' के एक लेख द वर्ल्ड फूड क्राइसेस (विश्व खाद्य सकट) में यह तथ्य दिया गया है कि पानी की दृष्टि से आधा किलो गाय का गोस्त आधा किलो रोटी से २५०० प्रतिशत मंहगा पड़ता है।

मांस की राजनीति— यहां एक सवाल उठता है कि उपरोक्त सब के बावजूद मांसाहार के खिलाफ कोई सार्वजनीन चेतना अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विकसित क्यों नहीं की जाती?

बड़ी सीधी सी बात है सार्वजनिक हित होने के बावजूद भी यदि जानबूझ कर उस काम में पहल नहीं की जांती तो उसके पीछे अवश्य ही कोई राजनीति सक्रिय है। आदमी की बुद्धि के विकास ने उसे लगातार कुटिल और चालाक बनाया है। किसी भी चीज को वह व्यक्तिगत लाभ और दूसरों के शोषण के औजार की तरह इस्तेमाल करना चाहता है। अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज पर भी यही सब चलता है। दुर्भाग्य से 'आहार' भी उसी दायरे में आ गया है। इस सिलसिले में बतौर उदाहरणों के अमेरिका की हरित क्रान्ति को लिया जाय। १९७५ से १९७१ के दौरान वह अन्नोत्पादन पचास से साठ फीसदी तक बढ़ा। चूंकि पहले से ही पर्याप्त अनाज था, अतः खपत का सवाल उठा। अमेरिका जो प्रतिस्पर्धी देशों के साथ सामरिक संतुलन और नवोदित गरीब व विकासशील देशों मे औद्योगिक तथा आर्थिक साम्राज्यवाद कायम करने का हामी रहा है, वह बगैर किसी बड़े राजनैतिक या आर्थिक स्वार्थ के उस अन्न को कैसे बेचता। दूसरी बात विश्व बाजार में अनाज के मूल्य भी संतुलन रखना है। क्योंकि उनके गिरने का असर सारे विनिमय पर पड़ता। यूं तो उसने सहायता सेवा वगैरह के नाम पर अनाज खपाया किन्तु समस्या बरकरार रही। सरकार ने करोड़ों डालर खर्च करके किसानों को कम जमीन में खेती करने के लिए प्रोत्साहित किया, मगर नतीजा कुछ न निकला। अंततोगत्वा देश के चलते-फिरते कब्रिस्तान ही काम आये। उनकी मांस प्राप्ति के लिए यह करोड़ों टन अतिरिक्त अनाज मांस दाता पशुओं के चारे की तरह इस्तेमाल किए जाने लगा। मांसाहारियों के शौक बढ़ने के साथ ही उपरोक्त दुश्चक्र भी तेजी से बढ़ता गया। जाहिर है अगर समस्या का हल मांस भक्षण में नहीं मिले तो सम्भव

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है, गरीब देशों की तरफ उनके निर्यात का कोई रास्ता निकल आवे। इसीलिए उन्नत देशों की कोशिश तो स्वाभाविक रूप से मांसाहार में वृद्धि के ही पक्ष में रहेगी।

विकसित देश अन्न व मशीनरी के बदले में विकासशील देशों से चाय, काफी, कोको, तम्बाकू, गन्ना आदि वसूलते हैं। नतीजा यह कि ये देश गेहूं उत्पादन के बजाय अपनी शक्ति इन चीजों के उत्पादन में लगाते हैं? और रही-सही के लिए मांसाहार का शौक पर्याप्त है। यह बात अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि जब तक गरीब देशों के लोगों में अनाज की तुलना में मांसाहार को सस्ता पौष्टिक या स्वादिष्ट मानने का भ्रम पाला जायेगा। अनाज व शाकाहारी चीजों का उत्पादन देश की आवश्यकता की पूर्ति नहीं कर सकेगा। साफ तौर पर ही चलाये जाने वाले अंतर्राष्ट्रीय राजनैतिक षडयंत्र को नजरबंद नहीं किया जा सकता।

मैं समझता हूं न समझी में शौक से मांस खाने वालों को दिमागी तौर पर कोई संदेह नहीं रह गया होगा। फिर भी आदमी में केवल दिमाग ही नहीं है, दिल भी है। आखिरकार वह भी मानव है उसके भी दिल में कहीं न कहीं दया और करुणा की माननीय संवेदनाएं छिपी रहती हैं। भले ही वह आदतन, शौक में या पारम्परिक तौर पर मांस खाते रहने के कारण इसे न महसूस पाए।

काश कि बड़े इत्मीनान से छुरियां चलाने वाले ये भाई एक क्षण को बूचड़खाने की उस तस्वीर को भी दिल में उतारें जहां एक तरफ दया की भीख मांगती बेसहारा प्राणी बकरे की करुणा भरी आंखें होती हैं, दूसरी तरफ निर्मम कसाई की क्रूरता भरी आंखें !! बकरे की पीली आंखों के अन्दर का काला निशान जो डर के मारे छुरा देखते ही जम सा जाता है, गर्दन कट चुकने के बाद भी वैसा ही जमा रहता है दूसरी तरफ कसाई की आंखों में पाशविकताभरी बीभत्स मुस्कान! बकरी बड़ी संवेदनशील होती है। जब उसके सामने से उसका मेमना कसाई उठा-कर ले जा रहा होता है, तब उसकी असहाय आंखों में अक्सर आंसू भी बह निकलते हैं—कितनी शर्मनाक हरकत है यह आदमी की! आदमीयत का पतन नहीं तो और क्या है यह?

हमारे मांसाहारी भाई कभी कभी दलील दे देते हैं, कि शाकाहारी वनस्पति भी तो सजीव है इसे क्यों खाया जाय? मैं उनसे पूछता हूं आदमी भी तो बकरे, मुर्गे की तरह सजीव है उसे भी क्यों नहीं खाते, फालतू आदमियों की संख्या भी कम तो नहीं है? ज्यादा ही शौक है और मुर्गे या बकरे को फालतू समझते हों तो, आपसे ही सम्बंधित कई फालतू आदमी मिल जायेंगे।

दरअसल यह मामला कुतर्क का नहीं, बल्कि भावना का भी है, भले ही इसे हम नैतिक या धार्मिक भावना कह लें। यही कारण है कि शाकाहार से नीचे जाकर आदमी भूसा नहीं खाने लगता, और न ही तो ऊपर जाकर आदमी। इस मान्यता के पीछे एक भावात्मक मानसिकता ही है जो नैतिक तौर पर हमारे लिए अन्य क्षेत्रों की मर्यादाएं भी निर्धारित करती, बुद्धि और भावना के उचित तालमेल से ही मानवता गतिमान है।

—★—

★प्रस्तुत लेख के आंकड़े, व उद्धरण अमेरिका पत्रिका 'टाइम' व 'साप्ताहिक दिनमान' के भिन्न अंकों के साथ ही संदर्भित पुस्तकों से लिये गए हैं। —लेखक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आश्चर्य जनक रूप मे सस्ता

महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र

केवल १०० रु सैकड़ा

कागज की भीषण महंगाई में भी हम स्वामी जी का
जीवन चरित्र केवल १००) सैकड़ा दे रहे हैं।
बढ़िया कागज सुन्दर छपाई आकर्षक आवरण
मूल्य २) मात्र

अनेक चित्रों सहित

एक अनुपम प्रकाशन

स्वामी दयानन्द का सर्वप्रथम
प्रामाणिक जीवन चरित्र

जो प्रथम बार सन् १८९५ में छपा था

सरस्वतीन्द्र जीवन

लेखक : स्व० चिम्मनलाल गोस्वामी
पृष्ठ ३५० के लगभग : मूल्य ३०)
किन्तु दीपमाला १९८० तक
केवल १५) में

दयानन्द संस्थान, वेद मंदिर, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बलात्कार और व्यभिचार की घटनायें कैसे रुकें ?

—डॉक्टर सत्यपाल

आये दिन समाचारपत्रों में बलात्कार की घटनायें पढ़ने को मिलती हैं। भारतीय दंड संहिता में इसकी कड़ी व्यवस्था होने के बावजूद ऐसी घटनाएं निरन्तर बढ़ रही हैं। इस सब के पीछे दोषपूर्ण न्याय एवं कानून व्यवस्था है अथवा सामाजिक एवं धार्मिक स्तर पर समग्र चारित्रिक पतन—इस पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। यद्यपि भारतीय संविधान के अनुच्छेद १५ में लिंग, जाति और धर्म के भेद को समाप्त कर स्वतन्त्रता और समानता की व्यवस्था है, परन्तु घर से निकलने के बाद अकेली युवती अपने को असुरक्षित अनुभव करती है। कहीं सामूहिक बलात्कार के दृश्य देखने और सुनने को मिलते हैं, तो कहीं एकाकी।

न्यायिक प्रक्रिया में छिद्र

महिलाओं के एक समूह द्वारा इस स्थिति से त्राण पाने तथा भारतीय नारी को सही अर्थों में कानूनी सुरक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से भारतीय दण्ड संहिता में सुधार की माँग की गई है। इस समय बलात्कार जैसे जघन्य अपराध का दोष सिद्ध करने का दायित्व नारी पक्ष पर है, जब कि महिलाओं की मांग है कि पुरुष निर्दोष है, इसे सिद्ध करने का दायित्व पुरुष पर होना चाहिए। यदि इस आपत्ति पर तटस्थ होकर विचार किया जाये, तो हम देखेंगे कि आमतौर पर नारी लज्जाशील एवं भीरु प्रकृति की होती है। न्यायिक प्रक्रिया में विरोध पक्ष के अभिभाषक द्वारा जो तर्क रखे जाते हैं, लज्जाशीलता के कारण नारी उनका स्पष्ट उत्तर नहीं दे पाती। फलतः विरोध पक्ष का अभिभाषक अपराधी को निर्दोष सिद्ध करने में सफल हो जाता है। इसी प्रकार जितने प्रकरण न्यायिक प्रक्रिया में आते हैं, उनमें से ८० से ९५ प्रतिशत तक निर्दोष सिद्ध होते हैं।

देश में सामाजिक अपराधों में वृद्धि का मूल कारण बहुअर्थी कानून एवं दण्ड व्यवस्था तथा उसकी सरक्षक संस्थाओं का भ्रष्ट आचरण है। अधिकतर बलात्कार प्रकरणों में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पुलिस कार्मिकों का संरक्षण प्राप्त रहता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
इसके अतिरिक्त बलात्कार प्रकरणों में बदले की भावना, जाति, धर्म तथा परलिंगी के प्रति बलात् आकर्षण निहित होता है।

नारी प्रतिष्ठा का अवरोध

हमारे देश में प्रतिदिन १४०० से १६०० बलात्कार की घटनाएं होती हैं, जिनमें से मुश्किल से एक प्रतिशत प्रकरण ही समाचारपत्रों में स्थान पाती हैं तथा ३५ प्रतिशत प्रकरण न्यायालय में दर्ज हो पाते हैं। ऐसे कुल प्रकरणों में से ७०% प्रकरण १२ वर्ष से कम उम्र की लड़कियों से सम्बन्धित होते हैं। शेष प्रकरण सामाजिक प्रतिष्ठा तथा लड़की की भावी वैवाहिक घटनाओं के कारण न्यायालय में नहीं जा पाते। अनेक प्रकरणों में डाक्टरी जांच लेन-देन के द्वारा पुरुष पक्ष में हो जाती हैं। यहां तक कि कई बार नारी पक्ष के माता-पिता द्वारा भी रिश्वत देकर यौन क्रिया को अपुष्ट कराया जाता है। शेष जिन प्रकरणों में चिकित्सा जाँच पुरुष पक्ष के विपरीत जाती है, उनमें से ९५ प्रतिशित न्यायालय में अभिभाषकों के कुतर्कों तथा नारी की लज्जाशीलता के कारण निर्दोष सिद्ध हो जाते हैं। ३० प्रतिशत से ५० प्रतिशत प्रकरणों में ही अपराधियों को सजा मिल पाती है।

कई बार युवती के अवैध सम्बन्ध किसी युवक से होते हैं। वह उसके साथ भाग जाती है अथवा उसे संदिग्ध अवस्था में परिवार के किसी सदस्य अथवा अन्य परिचित व्यक्ति द्वारा देख लिया जाता है, तो लड़की या उसके परिवार वाले उसे बलात्कार की संज्ञा दे डालते हैं और न्यायालय में युवती की गवाही मित्र युवक के पक्ष में चली जाती है।

पुलिस की भूमिका

कानूनी तौर पर कुछ सुधार अपेक्षित हैं। उदाहरणार्थ यदि डाक्टरी जाँच में यह सिद्ध हो जाये कि अपराधी द्वारा बलत्कार किया गया है, तो न्यायालय में नारी पक्ष से अधिक अश्लील कुतर्क करने की आवश्यकता नहीं है, अपितु डाक्टरी प्रमाण-पत्र को ही यथेष्ट प्रमाण मान लेना चाहिये—यदि युवती उसे बलात्कार कहे। अब यह चिकित्सक का निजी चरित्र है कि उसके द्वारा प्रदत्त प्रमाणपत्र की सत्यता रिश्वत पर आधारित है या यथार्थ है। दूसरे जिस युवती के साथ बलात्कार की घटना घटित हुई है, उससे जो भी पूछताछ पुलिस द्वारा की जाये, वह एकांत में न की जाये और न ही उस पुलिस स्टेशन पर रखा जाये। यदि कोई महिला पुलिस रिकार्ड के अनुसार असामाजिक कृत्यों में लिप्त रहने की प्रवृत्ति की है, तो उसे महिला सुधार गृह में रखकर वहीं महिला पुलिस द्वारा पूछताछ की जाय।

प्रचार माध्यमों की स्वस्थता

सामाजिक स्तर पर ऐसे युवकों का बहिष्कार किया जाये, जो इस प्रकार के कृत्यों में लिप्त रहते हैं। यौन भावनाओं को भड़काने वाले तथा अपराध वृत्ति को जन्म देने वाले "सच्ची कहानियाँ", "सच्चे किस्से" तथा अपराध विशेषांक सदृश साहित्य तथा तद्भव चलचित्रों पर कड़ा प्रतिबन्ध लगाया जाये। विज्ञापनों में भी नारी को इस रूप में प्रस्तुत न किया जाये, जिससे समाज में नारी के चरित्र के प्रति आमतौर पर संदेह की भावना जड़ पकड़े और उसके सामाजिक और सांस्कृतिक स्वरूप में विकृति उत्पन्न होकर वह युवकों को आक्रामक होने के अवसर दे। प्रगति-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शील होने के नाम पर कुछ साहित्यकार पुरुष से लोहा लेने के लिए नारी में समन्वयात्मक भावना पैदा करने के स्थान पर उसे विद्रोह के लिए प्रेरित करते हैं। यह प्रवृत्ति भी बलात्कार को प्रोत्साहित करती है, क्योंकि इससे पुरुष हृदय में नारी से बदला लेने और उसे नीचा दिखाने की भावना पनपति है।

श्रेष्ठ जीवन—मूल्यों की पुनःप्रतिष्ठा

भारतीय सस्कृति की इस मूल धार्मिक भावना की पुनः स्थापना हेतु परम आवश्यक है कि उम्र के भेद से प्रत्येक नारी में प्रत्येक पुरुष को विवाह पूर्व एव विवाहोत्तर पुत्री, बहन और माँ के स्वरूप की कल्पना या भावना करनी चाहिए और नारी को भी चाहिए कि वह सहज, सरल और शालीन भाव से उम्र के भेद से पुत्र, भाई और पिता के भाव को घोषित करे। परन्तु इस देश का दुर्भाग्य है कि पिछड़ेपन का बहाना प्रस्तुत कर हम अपने मौलिक जीवन मूल्यों को (धर्म के प्रत्येक क्षेत्र में आलोचना कर) छोड़ रहे हैं, जिससे धीरे-धीरे मानव पशुता की ओर जा सकता है।

उठो वीरो !

बढ़ो ! देखो! दनुज ने फिर भयानक द्वार खोला है,
कहां फिर शेर की मांदों में देखो स्यार बोला है,
भ्रमित जग में कहाँ का द्वन्द्व, यह कैसा झमेला है,
कहीं रावण करोड़ों हैं, कहीं कंसों का मेला है,
अभी तुम राम बन निकलो, तुम्हें दुख दर्द हरना है।
उठो वीरो ! तुम्हें अब विश्व को गतिमान करना है॥

यहाँ बलिदान की वेदी तुम्हीं पर मान करती है,
भरत भू ही नहीं, धरती तेरा सम्मान करती है,
चलो यह देख सच्चाई, तुम्हें पीछे नहीं हटना,
तुम्हें 'निर्दिष्ट' पर अपने शलभ की भांति मर मिटना.
तुम्हें अभिशाप, वर में आज, इस युग का बदलना है।
उठो वीरो ! तुम्हें अब विश्व को गतिमान करना है॥

विजय का ही, पराजय में तुम्हें संगीत गाना है,
मनुजता का तुम्हें गौरव, उठो वीरो ! निभाना है,
तुम्हें कुत्सित स्वरूपों में, नया निर्माण करना है,
तुम्हें अपने चरित्रों में दृढ़ व्रत सत्य करना है,
प्रबल अब शंखध्वनि कर दो, मनुज को आज जगना है।
उठो वीरो ! तुम्हें अब विश्व को गतिमान करना है॥

—राधेश्याम आर्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्व० महात्मा प्रभु आश्रित का अमर प्रसाद

भाग्यवान् गृहस्थी

एक विरक्त साधु का किसी नगरी में आगमन हुआ और वह नगर के बाहर किसी रमणीक वाटिका में ठहरे। साधु बड़े तपस्वी और तेजस्वी थे। श्रद्धालु भक्तों की इच्छा से सत्संग भी लगता। महाराज के अनुभवी उपदेश जनता को ऐसा मुग्ध कर देते कि उन्हें अपने गृह आदि सब विस्मरण हो जाते। अनेकों बार तो उपदेश समाप्त हो जाने की भी उन्हें सुध न रहती और ज्यों के त्यों बैठे डटे रहते। दृष्टि उनकी साधु पर रहती। कर्ण भी ऐसा प्रतीत करते कि हम कुछ श्रवण कर रहे हैं और मन मग्न हो रहा है।

साधु का नियम

साधु का नियम था कि वह किसी गृह में जाकर भोजन न करते थे। जो खिलाता वहां ही लाता। ऐसा उन्होंने प्रथम दिवस से ही सूचना दे रखी थी।

श्रद्धालु का निमन्त्रण

आज एक सरल स्वभाव श्रद्धालु भक्त ने भोजन बनवाया। स्वीकार होने पर स्वगृह को गया और अपनी धर्मपत्नी से कहा। वह सुनते ही अत्यन्त हर्षित होकर बोली, मैं तो भोजन ऐसे महाराज को घर पर खिलाऊंगी।

पति—उनका तो नियम ही ऐसा है, वह किसी के घर पर नहीं जाते।

पत्नी—वह गृहस्थी क्या जिसके गृह पर पधारने से अतिथि इन्कार कर दे।

पति—जब किसी ने नियम ही ऐसा बनाया हो तो कोई कैसे और क्यों भंग कर सकता है? वह पूजनीय हुए, हम गृहस्थी उनके आधीन हैं, हमारी क्या सामर्थ्य कि उनके नियम को भंग करें। आवश्यकता हमें है उनको भोजन खिलाने की, न कि उनको है खाने की?

नियम भंग

पत्नी—इसमें गृहस्थी की कमजोरी (त्रुटि) पाई जाती है। यह नियम मनुष्य का अपना बनाया हुआ है न कि परमात्मा का, अतः यह सर्वकाल और सर्व-देश सत्य नहीं हो सकता। हमारे तो एक प्रसिद्ध लोकोक्ति है, "मेहमान आया भगवान् आया"—यदि अतिथि (मेहमान) घर न आए तो भगवान् कैसे आया समझा जाएगा।

पति—तो फिर कैसे लाया जाय। मुझे तो असम्भव सा प्रतीत होता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पत्नी मार्ग दर्शाती है

जैसे मैं प्रार्थना करती हूं उन्हीं शब्दों में आप प्रार्थना करेंगे तो वह अवश्य चले आवेंगे। भावना तो हमारे अपने ही हृदय की सच्ची और दृढ़ होनी चाहिए।

किसी कवि ने कहा है :—

चुपके चुपके जो सदा[1] दिल से किया करता है।
उसको निश्चय से ही वह मन्ज़र[2] किया करता है॥
बारगाहे[3] ईश से मायूस[4] न होना हरगिज।
तू तो मनुष्य है वह च्यूंटी की भी सुना करता है॥

गृहस्थी की दीनता को प्रभु भी अनसुनी नहीं करते, विशाल करुणा-मय होकर सुना करते हैं। तो उनके प्यारे क्यों उल्लंघन और अवहेलना करने लगे।

आप जब जायें तो नत मस्तक, कर जोड़ यह प्रार्थना करें :—

प्रार्थना

"भगवन्! महाराज को कष्ट तो अवश्य होगा परन्तु श्रीचरणों से मेरा गृह पवित्र हो जाएगा। हम कई क्षुद्र जीवों के जीवन की ज्योति श्री महाराज के दर्शनों से जग जावेगी।

"हम दीन बुद्धि मलीन पतित आपके यजमानों की काया पलट जावेगी। हमारे गृह और पाकशाला की त्रुटियां सुधर जावेंगी। गृह में अतिथि यज्ञ (भोजन कराने) से हमारे लिए शेष, यज्ञशेष बनकर अमृत बन सकेगा, अन्यथा नहीं। उच्च कोटि के मनुष्य तो उच्च होते ही हैं, गृह पर खिलावें अथवा बाहिर। मैं तो एक निकृष्ट-सा क्षुद्र जीव हूं और अवगुणों से लिप्त हूं, महाराज की करुणामयी दृष्टि से मेरे परिवार का सौभाग्य उदय हो जावेगा।"

पति ने प्रार्थना कण्ठस्थ कर ली और पूछा क्या बनाओगी?

पत्नी—जो आपकी आज्ञा हो और उनके रुचिकर हो।

पति—आप खीर, मालपूए, व्यंजन, पुरोडाश (हलवा) बना दीजिए और पकौड़ों पर उनकी अधिक प्रीति रहती है, वह भी बना दीजिए।

पत्नी—बनाना तो यही कुछ चाहती थी परन्तु एक समय में सबका मेल नहीं। पुरोडाश और पकौड़े तो रात्रि को बनाऊंगी, शेष अब तैयार करूंगी।

पति—रात्रि का भोजन तो वह करते ही नहीं।

पत्नी—जब एक बार आ जावेंगे तो आप निश्चिन्त रहिए, रात्रि को बड़े हर्ष से चरण पधारेंगे।

देवी ने भोजन अगाध श्रद्धा तथा भक्ति भाव से तैयार किया। समय हुआ और भक्त महाराज की सेवा में गए।

---

१. आवाज २. स्वीकार ३. ईश्वर के द्वार ४. निराश

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रेम का कलश उमड़ पड़ा

नमस्कार कर, कर जोड़ ऐसी दीनता से प्रार्थना की कि मानस मात्र प्रेम से पूरित हो गया और उमड़ पड़ा। नेत्रों से अश्रु पात होने लग पड़े।

साधु पर जादू चल गया

विरक्त साधु पर उसके भक्ति तथा श्रद्धा के शब्दों ने ऐसा प्रभाव किया कि साधु को अपना नियम ही मस्तिष्क से विस्मृत हो गया और तुरन्त उठकर साथ चल दिए। "नियम भंग हो गया"

बुद्धि और शंका

मार्ग में जब सचेत हुआ तो विचार उत्पन्न हुआ कि यह भक्त कैसा श्रद्धालु है। वर्षों बीते, हम किसी गृहस्थी के गृह भोजन करने नहीं गए। नियम नहीं तोड़ा। किसी एक ने भी ऐसे शब्दों में याचना नहीं की। शंका हुई कि क्या यह इस भक्त की अपनी बुद्धि है अथवा इसकी धर्म पत्नी की? पूछने लगे :—

क्यों भक्त जी! यह तो बतायें कि तुम्हारी बुद्धि मुझे बांधकर ले जा रही है अथवा आपकी धर्मपत्नी की?

भक्त—भगवन्! मुझे इतनी बुद्धि कहां? यह तो मेरी धर्मपत्नी पर ही प्रभु की कृपा का प्रभाव है। मेरी कमाई को शुद्ध पवित्र करने वाली तो वही साक्षात् देवी है।

इतने में घर पहुंच गए। देवी ने दरवाजे पर जाकर सत्कार और नमस्कार की। सब बालकों ने भी चरण स्पर्श कर आशीर्वाद ली, अन्दर पहुंचे।

साधु का सत्कार

देवी ने लोटा जल का पति देव को दिया। एक युवा बालक तौलिया उठाए समीप ही खड़ा है। पतिदेव ने महाराज के पग प्रक्षालन किए और हाथ मुंह धुलाए। बालक ने झट तौलिये से पग पोंछने आरम्भ कर दिए। अतिथि देवता आज इस प्रकार का विलक्षण स्वागत देख गद्गद हो बालक से तौलिया खींस लिया और आप साफ करने लगे।

आसन बिछा था, बिठाया।

भोजन परोस देवी ने पतिदेव के हाथों से आगे रखवाया।

देवी और साधु का सम्वाद

साधु—देवी जी! मैं भोजन खाने से पूर्व एक प्रश्न पूछना चाहता हूं, क्या उत्तर दोगी?

देवी—यथासम्भव और यथोचित आज्ञा का पालन करूंगी।

साधु—जिस प्रश्न को मैं पूछना चाहता हूं वह आपसे एकान्त में होकर पूछना चाहता हूं। आपका पति और बालक बाहिर चले जावें। किवाड़ बन्द कर दो, तब मैं पूछूंगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देवी —यहाराज ! अब यही तो एकान्त है। निश्शंक होकर पूछिए !

साधु—इतने व्यक्तियों में एकान्त कैसे ? आप अकेले से ही एकान्त होगा।

देवी—भगवन् ! आपको भ्रम लग रहा है। एक पतिव्रता स्त्री के लिए तो इसे ही एकान्त कहते हैं।

शरीर में जो देखने वाली आँखें हैं, जब तक जागती हैं, इनको तो एकान्त हो ही नहीं सकता।

मन विचार रहित न रहने से एकान्त नहीं हो सकता, एकान्त तो माना गया है। जब आत्मा परमात्मा के अर्पण हो जावे। स्त्री अपने पति के अर्पण होने से स्त्री और पति एक हैं। स्त्री तो कभी भी किसी बात को अपने पति से नहीं छिपा सकती और न उसकी आज्ञा बिना चल सकती है। जब पति ही आत्मा है और पत्नी छाया है तो किससे पृथक् हो ? बालक इन्हीं के अंग हैं। आप कृपा करके भोजन में प्रेम रस लीजिए और हमारे हृदय को पवित्र कीजिए। तत्पश्चात् जो आज्ञा होगी, मैं प्रश्न का उत्तर दूंगी।

साधु पर प्रभाव

साधु की अन्तर दृष्टि एकान्त की सेवा से बहुत दूर पहुंच गई। प्रसन्नता से फूला न समाया। बड़े प्रेम से भोजन किया। परन्तु भोजन में एक-एक ग्रास में नए-नए ज्ञान की उपज होती पाई। दांत चबा रहे हैं और मन प्रभु के गुप्त ज्ञान को उत्पन्न कर कर आह्लाद से भर रहा है और घर वालों का धन्यवाद गा रहा है।

भोजन समाप्त करने पर भक्त ने कुल्ला कराया और साधु आकर बैठ गए और सम्वाद फिर आरम्भ हुआ।

साधु—देवी ! मेरा प्रश्न यह है कि आप बुद्धिमान् हैं अथवा आपके पतिदेव ?

देवी—भगवन् ! बुद्धि तो सिर में होती है, और मेरा सिर तो मेरे पति-देव ही हैं। आगे कोई शंका रहती नहीं।

साधु ऐसे सारगर्भित शब्दों को सुनकर आश्चर्य में आ गया। ऐसे-ऐसे गृहस्थी छिपे पड़े हैं जो हमारे ज्ञान के अभिमान को और हमारी भक्ति तपस्या भाव को अपनी श्रद्धामयी सेवा से चूर चूर कर देने वाले हैं। यद्यपि मेरा नियम भंग हुआ परन्तु मेरा तो आज इस देवी देवता ने आवरण उठा दिया। मेरी तो इन गृहस्थियों के चरणों को नमस्कार है। वस्तुतः उसका मस्तिष्क देवी के चरणों में दूर बैठे-बैठ झुकने लग पड़ा।

भक्त तो सरल स्वभाव था। उसका ध्यान तो वहाँ न गया परन्तु देवी उधर ही साधु की सर्व चेष्टाओं तथा संकेतों को देख रही थी, जान गई और कहने लगी, 'भगवन् ! पूज्य होकर लज्जित करते हैं। आपके आशीर्वाद से तो हमारा कल्याण होता है।

साधु चौंका। कहा, मैं आपसे बहुत प्रसन्न हूं। आप मांगो, क्या आशीर्वाद चाहती हो ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जादू चल गया

देवी—भगवन् ! बस और कुछ अभिलाषा नहीं। सायंकाल भी पदार्पण करके हमें शेष खाने का सौभाग्य प्राप्त कराइए।

देवी का जादू चल गया। इन अनोखे निराले शब्दों ने मोहित कर लिया और साधु यह भी नहीं कह सका कि मैं तो रात्रि को भोजन किया ही नहीं करता, अवाक् हो गया और तथाऽस्तु कह कर उठ खड़ा हुआ। नमस्कार की और भक्त पहुंचाने चले गए। मार्ग में साधु ऐसा मस्त हो गया कि भक्त से कोई बात नहीं कर सका।

दिन भर साधु आज ऐसा मग्न और मस्त रहा कि उसे बिना प्रभु चिन्तन और नवीन ज्ञान विचार धाराओं में तथा उस गृह परिवार के आकार प्रकार के और कोई बात अच्छी न लगती।

सायंकाल हुआ, भक्त ने आकर सिर झुकाया और दोनों चल दिए।

सत्कार तथा परीक्षा

गृह पर पहुंचे। देवी तो फाटक पर प्रतीक्षा कर रही थी परन्तु साधु ने उसे पहले ही नमस्कार बोल दी। मर्यादापूर्वक बिठाया। भोजन परोस सामने रखा। पकौड़े थे भिन्न-भिन्न प्रकार के बिना लवण, लवणीय तथा लवण, मिर्च मसाले वाले पृथक् रखे। साधु ने देखा और पूछा, हैं तो सब पकौड़े परंतु भिन्न-भिन्न क्यों ?

देवी—हमें ज्ञान न था कि किस प्रकार के महाराज को हितकर और प्रकृति अनुकूल हैं। साधु ने कहा, हमें तो जैसा और जो भी मिल जावे, सब हितकर और अनुकूल है। इस बात का कभी विचार नहीं करते।

परीक्षा असफल

खाने लगे तो पहले बिना लवण पकौड़े पर हाथ पड़ा, उसमें स्वाद न आया। दिल में लज्जित हुए कि यह तो झूठ हो गया। तो बिना नमक अस्वादु न लगते थे आज क्यों ऐसा प्रतीत हो रहा है। खाते सब भूल गया। यही विचार समाया रहा जब खा चुके तो लवण मसाले वालों को अधिक स्वादु पाया। तो अन्त में ज्ञान हुआ कि यह भी परीक्षा थी, अभिमान किया, असफल हो रहा। और विचाने लगा कि यदि कोई और गृहस्थी होता जो कृत्रिम सेवा करने वाला होता तो ऐसे शब्द बोले कि जिससे उसकी तो भक्ति टपके, परीक्षा मालूम ही न पड़े। यदि कह देती कि जो आपको अभीष्ट तथा रुचिकर है वह खावें मेरी आसक्ति का उसे पता लग जाता कि मैं स्वाद के पीछे मरता हूं परन्तु ऐसा कहा कि "जो आपको हितकर तथा प्रकृति अनुकूल हो," शब्दों में कितना भक्ति-भाव भरा है। परन्तु मुझे अपना ज्ञान हुआ कि मैं स्वाद के लिए खाता हूं परन्तु फ़ारसी के एक कवि ने और ही कहा है :—

खुर्दन बराए जीस्तनो जिक्र करदन अस्त।
तू मोतकिद के जीस्तन अज बहरे खुर्दन अस्त

अर्थात् खाना जीने और प्रभु भक्ति के लिए है। तेरा मत है कि जीना खाने के लिए है। मुझे नमक मसाले में आसक्ति है। यह देवी तो साक्षात् पूजनीय देवी है। मेरे आन्तरिक दोष को धोने वाली है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धन्यवाद

खा पीकर जब निवृत्त हुए देवी ने हाथ जोड़कर बड़ी श्रद्धा से धन्यवाद किया कि आपने हमारे जैसे क्षुद्र जीवों को दर्शन दिया और हमारे साधारण भोजन को स्वीकार कर कृतार्थ किया।

ऐसा कह और कुछ भेंट सामने धरी और कहा, हमारे कल्याण के लिए सुगम उपदेश और उपाय बताइये।

उत्तर

साधु—देवी ! ऐसा गृहस्थ मैंने अपनी आंखों नहीं देखा। मैं क्या उपदेश करूं ? मेरा तो अभिमान आपने चूर-चूर कर दिया। रहा सहा दोष भी मेरा प्रतीत करा दिया कि मैं किस गर्व में था।

भेंट, भेंट के रूप में देवी को लौटा दी और देवी से क्षमा मांगी और वह चल दिए। भक्त पहुंचाकर वापस आया।

अन्न का प्रभाव

रात्रि को शयन किया। रात्रि क्या थी तनिक ऊंघ आती तो ऐसा प्रतीत होता कि देवी कह रहा है 'साधो ! साधु के श्वास अनमोल होते हैं, इन्हें वृथा न गंवा, प्रभु के ध्यान में लगा।"

ऐसा रात्रि भर बार-बार उठकर बैठता और ध्यान करता।

गृहस्थी की याद

प्रातः हुई और मन में विचार आया—आज अभी उसी गृहस्थी के गृह पर पर जाकर बासी टुकड़ा मांगो।

कहां वह प्रतिज्ञा कि गृहस्थी के गृह पर जाकर भिक्षा याचना कर न खाने की शपथ ली थी—आज भिक्षा के लिए स्वयं दौड़ा जा रहा है। देवी के पवित्र विचार और सद्व्यवहार उस गृहस्थी की याद दिला रहे हैं। उनके घर पहुंचा क्या देखा कि बालक बैठे हैं। हर बालक के सम्मुख थाली में आधा-आधा बासी टुकड़ा और दधि रखी है। ज्यों ही उन्होंने देखा, सब खड़े हुए और नमस्कार की। देवी ने भी नमस्कार की। भक्त गृह पर न था।

बालकों का अतिथ्य

और तो था नहीं। सब बालकों ने अपना आधा-आधा दिया। साधु ने कहा बच्चो ! तुम खाओ, तुम्हारा मैं नहीं लेता। वे रो पड़े। कहा, क्या हम ऐसे पापी हैं कि आप हमारी आधी रोटी भी स्वीकार नहीं करते।

सत्याग्रह

अब तो आपके बिना हम नहीं खाएंगे, सत्याग्रह करेंगे।

साधु ने एक का आधे से आधा ले लिया और कहा, अब तुम खाओ। अन्य बालकों ने कहा हमारा क्यों नहीं लेते बालकों की तोतली भाषा में—हम तो देंगे ही, नहीं तो तुम्हारे मुख में ग्रास-ग्रास देवेंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

साधु झुका

साधु बालकों के इस मीठे और दिल से निकले शब्दों से प्रभावित तो हुआ और सबसे आधे का आधा ले लिया और खाया। बच्चों के प्रेम के आगे झुक गया और कहा :—

वाह रे बालको ! क्षुधा तो मुझे बड़ी थी परन्तु प्रेम के कतिपय ग्रासों ने मेरी उदर पूर्ति कर दी। बड़ी हर्षित आत्मा से आशीर्वाद दी और चल दिया।

वेद भगवान् सत्य कहता है कि वह गृहस्थी भाग्यवान् है जिसे अतिथि दूर से याद करके चले आवें और घर पूछते आवें, देखिये :—

येषामद्ध्येति प्रवसन्येषु सौमनसो बहुः।
गृहानुपह्वयामहे ते नो जानन्तु जानतः। यजु० ३/४२

वह गृहस्थी बड़ा भाग्यवान् है जिसको अतिथि जन दूर बैठे हुए भी याद करते हैं और बुलाते आते हैं।

अतिथि दो प्रकार के हैं। एक वह, जिनकी सेवा वस्त्रादि से की जाती है, ऐसे अतिथि से कोई लाभ नहीं क्योंकि वह अपने आराम के लिए आते हैं। दूसरे वह कि जिनकी गृह में पहुंच कर वृत्ति टिक जाये, वह भाग्यशाली हैं, ऐसा अतिथि कुछ दे जाता है। गृहस्थी अपने आप को नम्र दिखाता है और अतिथि सेवा के पश्चात् कहता है कि महाराज हम तो स्वार्थी हैं, हमें भाड़ा दो। हमें बताओ कि हमारा किस प्रकार बेड़ा पार हो। ऐसा मार्ग बताओ कि जिससे आत्मा को रस आये। अब वह भक्ति का रस बताता है, एक बार तो वह उनके पापों को धो देता है जिस प्रकार कुछ काल तक ठण्डा रखता है, उसी प्रकार गृहस्थी का पाप धुल कर वृत्ति टिक जाती है। तभी वेद ने अतिथि की सेवा की महिमा को गाया है। यहां तक वेद भगवान् ने बताया कि जिस गृह से अतिथि निराश होकर लौट जाता है वहां का ऐश्वर्य, यश, कीर्ति आदि सब कुछ ले जाता है।

अतः गृहस्थियो ! सावधान रहो। वेद की आज्ञा का पालन करते हुए गृहस्थ को चमकाओ और जीवन को चमकाओ। सफल बनाओ। प्रभु वेद आप लोगों को सुमति तथा बल प्रदान करें ताकि इस आदेश को आप भली भांति समझ तथा उद्देश्य पूर्ण कर सकें।

हिन्दू-रक्षा-समिति
के
सदस्य बनकर
राष्ट्र की रक्षा करें

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आदर्श गृहस्थी

साधु की खोज

हरिद्वार का मेला था एक सद् गृहस्थी भोजन उठाए स्त्री तथा बालों को साथ लिए गंगा तट पर जा किसी साधु की खोज कर रहा था कि कमण्डल उठाए एक साधु से भेंट हो गई।

साधु—वत्स ! क्यों अधिक खोज करता फिरता है। इतनी दूर निकल आया। बालकों को भी विश्रान्त किया, कोई साधु आपको योग्य प्रतीत नहीं हुआ। आपके भोजन में कौनसी विशेषता है कि इतनी खोज और भ्रमण कर रहे हो ? भोजन खिलाने में अधिक छान-बीन न किया करो।

भूखे को रोटी

गृहस्थी—भगवन् ! आपने यह बात कैसे जान ली ?

साधु—हमने तो नहीं जाना, हमारी क्षुधा ने जान लिया। क्षुधा नेत्रहीन होती है. जैसे बिल्ली को स्वप्न में भी छिछड़े सूझते हैं, ऐसे ही क्षुधा को भी भोजन दिखाई देता है।.भूखा भूखे को मिल जाए तो ईर्ष्या करते हैं, परन्तु तुम भी भूखे हो और मैं भी भूखा हूं, हम दोनों मिलकर प्रसन्न हो रहे हैं, समझे मेरी बात को ? सत्य है ना ?

गृहस्थी—आप भी भूखे नहीं और हम भी भूखे नहीं। आपकी बातें तो ऐसी हैं जैसे कोई तृप्त (रजा हुआ) बात करता है और मुझे प्रभु कृपा से सब कुछ प्राप्त है कोई भूख नहीं।

साधु—अच्छा तो तुम सत्य कहते होगे, हमने भूल की, मौज करो, जहां जाना चाहते हो जाओ ! हम भी आगे क्षेत्र को जा रहे हैं।

गृहस्थी—न महाराज न ! मेरा कहने का यह अभिप्राय नहीं कि आप भोजन कर चुके हैं अपितु यह कि आप में इच्छा नहीं। भोजन का तो समय है, अवश्य आपने खाना होगा। लीजिये ! मेरा सौभाग्य घर में ही मिल गया ! साधु बैठ गए। कहा वत्स ! हमको आपकी श्रद्धा ने नहीं बिठाया, हम तो अपने दोष को दूर करने के लिए बैठ गये हैं।

गृहस्थी—भगवन् ! दोष तो मुझसे हुआ, क्षमाप्रार्थी हूं, आपने अपने में क्या दोष देख लिया ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

साधु—बहुत छानबीन करके भोजन खिलाने वाला महान् स्वार्थी और अभिमानी होता है, साधुओं को ऐसे का भोजन न करना चाहिए परन्तु बैठ इसलिए गए कि आप भूले ही रहोगे यदि हम आपसे उपेक्षा करके चल देते।

क्षुधा दो प्रकार की होती है

लो सुनो! मेरी क्षुधा तो प्राण को लगी है और पेट में है, थोड़े से अन्न से मिट जायगी और आपकी क्षुधा लगी है मन को, और है भी मन में। मन को क्षुधा है स्वर्ग की जिसे देखा किसी ने नहीं। मिटेगी अथवा नहीं? और कब मिटेगी? इसे कोई जान नहीं सकता, प्रभु जाने।

गृहस्थी—भगवन्! यह तो आप का दोष नहीं। मेरी भूल को दूर करने के लिए आप बैठ गए, यह साधुओं का विशेष गुण माना गया है।

दुर्गुण और अवगुण

साधु—हमने अपने अन्दर एक दुर्गुण भांपा जिसने हमसे वाक्छल तथा दम्भ कराया और पुनः एक ऐसा अवगुण भी देखा जिसने तप भंग कराया।

गृहस्थी—मैं तो दुर्गुण और अवगुण के एक ही अर्थ समझता रहा हूं, आपने और उलझन डाल दी।

साधु—गुण का अर्थ होता है रज्जु (रसी) और रज्जु बांधने के काम आती है। जीव बन्धा हुआ है दुर्गुण से तो मनुष्य परमात्मा से दूर हो जाता है और अवगुण से अधोगति होती है। दुर् का अर्थ है दूर, अव का अर्थ है नीचे। बस यह एक स्थूल कसौटी है। जिन कर्मों से मनुष्य का अपने मनुष्यत्व से नीचे पतन होगा वह अवगुण होंगे, और जिन कर्मों से प्रभु से दूर रहेगा वह दुर्गुण हैं।

गृहस्थी—भगवन्! आपने तो नीति वतलाई परन्तु कोई उदाहरण भी तो हो। मैं एक साधारण व्यक्ति हूं।

साधु—अच्छा अन्य प्रकार से समझो, जब कोई मनुष्य ऐसा काम करे जिसे देखकर देखने वालों को सहसा मुख से यह कहना पड़े कि अरे! तू मनुष्य है अथवा पशु? तुमसे तो पशु भी अच्छे हैं, वे भी ऐसा नहीं करते। तब समझो कि वे ऐसे अवगुण हैं। एक अवगुण तो उसे पशु वनाने वाले हैं, दूसरे अवगुण उसे पशु से भी नीचे की योनि में ले जाने वाले हैं अर्थात् जिनकी उपमा पशुओं से न दी जा सके वह दुर्गुण होंगे अर्थात् जिन कर्मों को करने का साधन पशुओं में नहीं और केवल मनुष्य में हैं वे बुरे कर्म दुर्गुण कहे जायेंगे।

गृहस्थी—पहली बात तो समझ में आ गई दूसरी अभी पूर्णरूपेण समझ में नहीं आई।

साधु—अच्छा तुम ही बताओ, मनुष्य में कौन कौन सी इन्द्रिय पशुओं से अधिक हैं।

गृहस्थी—वाणी, मन तथा बुद्धि।

साधु—बस बस! अब तुमने खूब समझ लिया, असत्य बोलना, बुरा चिन्तन करना और अहंकार करना यह दुर्गुण हैं, इन से प्रभु से सदा दूरी बनी रहती है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गृहस्थी में श्रद्धा

यह उत्तर सुनकर गृहस्थी में श्रद्धा उत्पन्न हो गई, सिर झुकाया और श्रद्धा तथा प्रीति से भोजन कराया, साधु को भोजन में बड़ा रस आया, और प्रसन्न वदन होकर बोला, प्रभु तुम्हारा भला करे।

गृहस्थी की पत्नी ने हाथ जोड़ निवेदन किया, महाराज ! कभी हमारे गृह को पवित्र करने का कष्ट करें। हम अमुक प्रान्त के रहने वाले हैं (देवी ने अपने गृह का पूरा पता बताया)।

भोग पीछे फिरता है

साधु ने उत्तर दिया, हमारे अपने वश की बात नहीं और न हमें अपने भविष्य का ज्ञान है। हां, जिस प्रकार अब हमारे भोग को तुम उठाए फिरते थे, और भोक्ता जीव की खोज कर रहे थे और हमें उस भोग ने बांध लिया, और तुम्हारे निकट कर दिया, भोग पीछे फिरता है। अब भी यदि प्रभु देव ने ऐसा किया तो सम्भव है फिर मिलाप हो जावे।

मिलाप

वर्षों बीत गए, वही साधु भ्रमण करता करता उन के नगर में पहुंच गया, परन्तु उसे नगर का नाम तथा आकार भी विस्मरण हो चुका था, वह अकस्मात् नगर के बाहर सड़क से एक कूचे में प्रवेश कर रहा था कि कूचे के सर्व प्रथम गृह के बाहर एक बालक खड़ा था। साधु ने उससे सम्बोधन करके धर्मशाला का मार्ग पूछा। बालक ने ज्यों ही देखा पांव पर माथा नमा नमस्कार की, और कहा भगवन् ! यह मेरा घर है आप यहां ही विराजें।

साधु—तुम कौन हो ?

बालक—क्या आपने नहीं पहचाना ? मैंने तो आप को भली प्रकार पहचान लिया है। हरिद्वार में आपसे भेंट हुई थी, और माता जी ने आप से चरण पधारने के लिये कहा था।

साधु—हमको स्मरण में नहीं आ रहा, हमें धर्मशाला या कुटिया का पता बता दो।

बालक—मैं तो जाने नहीं दूंगा, अपने घर में बिठाऊंगा।

बालक की सरलता का प्रभाव

झट बाहर से किवाड़ खोला और हाथ से पकड़कर अन्दर ले जाने लगा, साधु बालक के इस सरल स्वभाव को देख अन्दर चला गया।

साधु—घर में तो कोई है नहीं। तुम क्या काम करते हो ?

बालक—मैं पाठशाला में पढ़ता हूं, अर्धावकाश था, मैं इस समय घर कुछ खाने पीने आ जाता हूं, आज मैं आया तो किवाड़ बन्द था, अब माता जी कहीं गई होंगी। अब मेरा समय होने वाला है।

साधु—तो तुम खाया क्या करते हो ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बालक—कभी मिठाई, कभी रोटी का ग्रास और लस्सी का गिलास पीता हूं।

साधु—तो तुम जल्दी से खा पी लो और फिर चलो, कहीं अनुपस्थिति न लगे, गुरु क्रुद्ध न हों।

बालक—महाराज ! कैसे खाऊं और क्या खाऊं ? माता जी तो हैं नहीं। वह आवे तो देवें।

साधु—अरे भोले बालक ! माता जी की क्या आवश्यकता है ? देखो सामने खुली अल्मारी में थाली में मिष्टान्न धरा है, क्या तुम को नहीं दीखता ?

बालक—हां महाराज दीखता है परन्तु माता की आज्ञा के बिना ऐसे उठाना भी तो पाप है।

साधु—अरे पाप ? कैसा पाप ? तुम्हारा अपना गृह है।

फिर चोरी क्या है ?

बालक—कैसा पाप ? फिर चोरी किसी और प्रकार की होती है ? पता नहीं, मिठाई किसी और के लिए हो या माता ने मुझे यह वस्तु न देनी हो।

साधु—हां, ऐसा हो सकता है। अच्छा तो रोटी निकाल लो वह तो बासी तुम्हारे लिए होती है।

बालक—वह तो है अपनी परन्तु पता नहीं माता ने किस-किस को कितनी कितनी देनी होगी। वह वस्तु तो माता के अधिकार में है।

साधु—ऐस प्रतीत होता है कि तुम माता से भय खाते हो। तुम्हारी माता बड़ी निर्दय होगी।

बालक रो पड़ा

माता जी की निन्दा सुनते ही बालक रो पड़ा। साधु ने समझा कि ठीक ऐसा ही होगा कि इसकी माता निर्दय है और कहा देखा ना हमने बूझ लिया, तुम भय से रो पड़े।

बालक—न महाराज ! मैं भय से नहीं रोया, मेरी माता जैसी दयालु माता कोई विरली ही होगी। मेरी माता मेरी माता है।

साधु—फिर तुम क्यों रोटी नहीं लेते, यदि माता का भय नहीं।

बालक—हमारे गृह में सबको माता जी ही सब वस्तुएं गृह की अपने हाथ से बांट देती है।

साधु—क्या तुम्हारे पिता को भी वही बांट देती हैं ?

बालक—हां हां ! मेरे पिताजी भी अपने हाथ से नहीं उठाते और उनकी शिक्षा ही यही है और उनकी आज्ञा है।

अस्तेय क्या है ?

गृह की स्वामिनी मेरी माता है। वह बिना मांगे और कहे, समय की आव-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

श्यकता के अनुसार सब को उचित रूप से पर्याप्त मात्रा में भोजन स्वयं दे दिया करती है। मेरे पिताजी का अधिकार अपने कार व्यवहार दुकान पर है। अधिकारी तथा स्वामी की आज्ञा के बिना उनकी वस्तु को उठाना स्तेय है।

इतने में पिताजी का आना हो गया। उसने ज्यों ही साधु को बैठा देखा, बड़े हर्ष से पांओं में माथा रक्खा और साधु ने अपने हाथ से उठाया और देखा तो उसे भी नहीं पहचाना। आश्चर्य में रहा, उसने कहा—

महाराज ! आज तो मेरा सौभाग्य बढ़ा, आपके दर्शन हो गए और फिर घर में अपने आप पदार्पण किया। मुझे तो अकस्मात् गृह से रुपयों की थैली उठाने के लिए आना पड़ा है। बहुत बहुत धन्यवाद है। मन बड़ा उत्सुक रहा परन्तु आपके स्थान का भी पता न था कि पत्र लिखते।

साधु—अच्छा भाई हमने तो तुमको भी न पहचाना। अच्छा ! यह तो पीछे बात करेंगे, तुम्हारे बालक को बहुत देर हो गई है। क्षुधा पिपासा भी इसे लगी है पाठशाला भी इसे जाना है, अनुपस्थित अंकित न हो (गैर हाजिरी न लगे), नहीं तो भूखा जाएगा, इसे कुछ खाने पीने को दे दो।

गृहस्थी—भगवन् ! इसकी माता अभी आ जाती है। जल का घट लाने को गई प्रतीत होती है। वह आकर देगी। मुझे क्या पता ? कि आज उसे क्या खिलाना है ? चौके की स्वामिनी तो वही है, मैं कैसे हस्तक्षेप करूं ?

साधु—अरे बालक ! बड़ी क्षुधा लग रही है ना।

बालक—मुझे तो क्षुधा का विचार ही नहीं रहा। आपके दर्शन से क्षुधा की वृत्ति बदल गई। अब तो यह चिन्ता लग रही थी कि माता जी कहां गई होंगी कि देर लगा दी। आपको बिना सेवा किए बिठा दिया। माता जी होतीं तो सेवा करने लग जातीं। अब पिता जी आ गए हैं। मैं पाठशाला जाता हूं, फिर मध्याह्न को आकर खाऊंगा।

साधु—तुम्हारा पिता भी बड़ा निर्दय है कि तुम्हें भूखा देखकर भी दया नहीं करता।

माता का प्रसाद

बालक—न महाराज ! ऐसा नहीं। माता जी जब कोई वस्तु देती हैं तो पिताजी ने समझा रखा है कि तुम उसे माता का प्रसाद समझा करो और उसे बड़े प्रेम से खाया करो तकि तुम में प्रेम के भावों की जागृति बनी रहे।

साधु—तो क्या तुम्हारे पिताजी भी तुम्हारी माता के दिए प्रसाद को स्वीकार करके सेवन करते हैं?

बालक—मुझे इस बात का ज्ञान नहीं। पिताजी जानें। मुझे तो अपना तथा भाइयों के लिए ज्ञान है।

साधु—हां भाई गृहस्थी। तनिक अब तुम बोलो। तुमको क्या समझ कर भोजन देती है और तुम क्या समझ कर लेते हो ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गृहस्थी—भगवन् ! मुझे तो वह बड़ी श्रद्धा से भेंट के रूप में पेश करती है और मैं हर्ष और प्रेम से लेकर शुभाशीष देता हूं।

बालक प्रस्थान करने को ही था कि माता भरा घट लिए आ गई। ज्यों ही दृष्टि पड़ी और मुख से निकला वाह भगवन् ! वाह ! आज कैसा उत्तम दिन चढ़ा, मेरा तो आज सुदिन है। घट रक्खा और बड़े आदर से नमस्कार की।

माता—महाराज ! आपको मेरी अनुपस्थिति से अवश्य कष्ट हुआ होगा, मुझे आज कारण वश कुछ चिर हो गया। मेरा सारा ध्यान तो बालक की ओर रहा कि वह आ गया होगा और प्रतीक्षा में व्याकुल हो रहा होगा। मुझे आज्ञा दीजिए कि मैं आपके पग प्रक्षालन करके (पांव धोकर) सेवा करूं।

साधु—हां हां, बहुत शीघ्र सर्व प्रथम यह कार्य करो। बालक बड़ा भूखा है और पाठशाला वापस जा रहा था।

साधु का सत्कार

माता ने झट मिठाई उठाई और पतिदेव को ऐसा संकेत किया कि साधु को पता भी न लगा। तीन थालियों में धर कर आ रही थी कि गृहस्थी ने लोटा ले जल से साधु के हाथ धुलाने के लिए भेंट किया।

साधु—पहले बच्चे को खा लेने दो उसे विलम्ब हो रहा है।

इतने कहते सुनते में देवी तीन थालियां लेकर आ गई। साधु देखकर चकित हो गया। अब तीनों को एक ही समय परोस आगे रखी और लस्सी के गिलास ले आई। तब सबने मिल बैठकर मिठाई खाई और बालक चला गया।

साधु—अच्छा भक्त प्यारे ! तुम व्यवहारी पुरुष हो, अब आप अपना काम सिद्ध करो और हमें कोई एकान्त कुटिया बतला दो।

गृहस्थी—वाह महाराज ! वाह ! अब आपके दर्शन छोड़ के जाना काहे को ? आप कृपया यहां रहिए, हमारे गृह को पवित्र कीजिए। यह सब आपका ही तो है।

प्रतिज्ञा पूरी करो

साधु—जिस काम के लिए आए और जो तुम्हारी प्रतीक्षा में होंगे, उनको तो क्षति होगी और तुम्हारे काम से जो अनियमितता होगी उसका पाप तो हम पर लगेगा और हम गृहस्थियों के गृह में कैसे रहें, हमें तो एकान्त चाहिए। हम साधु हैं।

गृहस्थी—अच्छा आपकी आज्ञा है तो मैं चला जाता हूं, परन्तु महाराज को हम अन्यत्र नहीं जाने देंगे। अब मध्याह्न होने वाला है, भोजन तैयार होता है।

साधु—अच्छा तुम जाओ और हम भोजन तक यहां हैं। गृहस्थी नमस्कार करके चल दिया।

साधु—देखो देवी ! तुम अपने चूल्हे का काम करो और हम जब तक कहीं बाहर जा बैठते हैं। तुम अकेली स्त्री घर में हो। हम बैठना अच्छा नहीं समझते और फिर हम यहां बैठकर करेंगे भी क्या ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देवी—मैं ऊपर के गृह में एकांत बना देती हूं, बाहर कहां जा बैठेंगे और यदि यहां भी बैठे रहें, तो यह भी एकान्त है।

साधु—ऊपर हो अथवा नीचे, एकान्त भी हो, तब भी एक अकेली देवी हो गृह में हो, शास्त्र उसके समीप बैठना वर्जित करते हैं।

देवी—आप तो साधु हैं, साधक तो नहीं, पुनः आपको ऐसा संशय क्यों ?

साधु—शास्त्रों की आज्ञा माननी चाहिए।

देवी—मुझे तो ऐसा भ्रम नहीं हुआ। शास्त्र क्या कहते हैं ?

शास्त्र आज्ञा का भाव

साधु—शास्त्र कहते हैं कि घर में अकेली स्त्री—चाहे माता हो अथवा भगिनी अथवा पुत्री भी हो, तो पुरुष को उसके साथ नहीं रहना चाहिए।

देवी—महाराज ! यह तो आप ही स्पष्ट कर रहे हैं कि किसी पुरुष को किसी अकेली स्त्री के पसा अथवा साथ न रहना चाहिए। आप जब साधु बन चुके हैं तो आप में वह पुरुषत्व कहां रह गया जो गृहस्थी में होता है। गृहस्थी के लिए तो स्त्री जाति का रूप भिन्न भिन्न प्रकार का होता है। चूंकि उसमें विषय वासनाएं उदार रूप रहती हैं जिन के उत्तेजित होने का कोई समय और विश्वास नहीं इसलिए माता, कन्या तथा भगिनी तक के साथ अकेला बैठना भी वर्जित कर दिया। क्या आप माता और भगिनी की छाती तथा गोदी (पट्टों) पर अकेले वर्षों तक नहीं रहे ? तथा उस समय आप पुरुष न थे ?

साधु—देवी ! उस समय तो मेरी विषय वासनायें और पुरुषत्व सुप्त अवस्था में थीं।

देवी—तो क्या मनुष्य जब साधना करते करते अपनी साधना को सिद्ध कर लेता है और साधु बन जाता है, तब उसकी विषय वासनाओं की वही अवस्था नहीं हो जाती जो एक शिशु की सुप्त अवस्था की होती है ?

साधु—हां, वैसी हो जाती है। जब तक न हो वह साधु कैसे बन सकता है ?

देवी—तो आपको मैं किस रूप में प्रतीत होती हूं।

साधु—देवी के रूप में।

देवी—यदि यह सत्य है तो एक देवी साक्षात् देवी के साथ रहते हुए किसी के मन में अदिव्य गुण का उठाना कैसे हो सकता है ? और फिर आपका प्रश्न तो एकांतवास का है। यदि मन इन्द्रियों के विषय में भ्रमने वाला है तो चाहे निर्जन वन की कुटिया भी हो तब भी उसे एकान्त नहीं और यदि मन विषयों से उपराम हो चुका है और आत्मा से युक्त परमात्मा में लगा हो तो संसार और बाजार भी उसके लिये एकान्त हैं।

साधु—बहुत अच्छा ! तुम ऊंचा ज्ञान रखती हो। हमें बड़ी प्रसन्नता है परन्तु एक संशय उठता है कि देवी के अन्दर इतनी निर्दयता कठोरता अपनी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
संतान के प्रति कभी नहीं देखी गई। तुम्हारा बालक पुत्र आया, उसे क्षुधा लग रही थी और तुम्हारे भय से अपने खाने की वस्तु अपने गृह से भी न उठा सका। इससे अधिक क्या निर्दयता होगी।

देवी— भगवन्! माता को सच्ची दयालुता तथा प्रेम तो अपनी सन्तान से यही हो सकती है कि उसे दिव्य गुणयुक्त बना दे।

मनुर्भव

वेद ने कहा है 'मनुभव जनया दैव्य जनम्' ऐ मनुष्य! तू मनुष्य बन! और अपनी सन्तान को दिव्य गुण वाला बना।

माता किसे कहते हैं

माता का अर्थ भी यही है जो मैंने अपने पतिदेव से श्रवण कर रक्खा है कि माता वही है जो (क) मति को बनावे (ख) मान वाला बनावे। गर्भ में तो मति को बनाती है और उत्पन्न होने पर उसे मान वाला बनाने का यत्न करती है।

माता पिता का कर्त्तव्य

हम तो दोनों (स्त्री-पुरुष) माता-पिता के नाते अपने बालकों को छोटे छोटे पापों को जिनको घर की चार दीवारी के अन्दर पाप नहीं समझा जाता और जिन पापों के अभ्यास से बालक बड़े होकर कुसंस्कारी बन जाते हैं, उनके सुप्त संस्कार जागृत होकर बलवान् बन जाते हैं और बड़े होकर जनता की दृष्टि से पतित कर देते हैं, उन्हीं से दूर रहने अथवा रोकने के लिए बड़े प्रेम और प्यार से समझाते हैं और यही माता-पिता का कर्तव्य है।

दूसरे बालक का आगमन और परीक्षा

अभी यह वार्ता हो ही रही थी कि दूसरा बालक आ गया, साधु को प्रणाम किया।

साधु—तुम्हारा नाम क्या है?

बालक—मुझे सुकर्मी कहकर बुलाते हैं।

साधु—यह देवी तुम्हारी क्या लगती है?

बालक—मेरी माता है।

साधु—तुमको क्या देती है और क्या करती है?

बालक—मुझे अन्न और ज्ञान आदि सब कुछ देती है और प्रेम करती है और संवार सुधार करती है।

साधु—किस प्रकार का ज्ञान देती है?

बालक—जिससे हम बालक पाप से बच रहें।

पाप क्या है?

साधु—पाप क्या होता है?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

युवक मैंने चोरी तो नहीं की, मुझे लघुशंका ने तंग किया। अपनी उपानह नहीं मिली, पिताजी की पहन ली और चला गया।

थानेदार—बेशक जूती तुम्हारे पिता की है। तुम जानते थे परन्तु तुम्हारे पिता को ज्ञान नहीं। चोरी क्या है, किसी वस्तु को स्वामी की आज्ञा के बिना उठाना। राजकीय नियम के अनुसार यह चोरी है जो मना है।

अब धनी बेचारे को उल्टा झुकना पड़ा। और लोगों को भी। वहां के सन्त उपदेश करने वाले यह कुतूहल सुनकर बाहर आए और कहा देखो पुत्र सचेत रहो, वस्तु पिता की हो अथवा माता की, जो तुम्हारे अपने अधिकार में नहीं उसको उनकी आज्ञा के बिना उठाना राज नियमानुसार पाप है। यदि आचार सम्बन्धी पाप नहीं तो भी संस्कार तो चोरी जारी तथा प्रमादके अवश्य उत्पन्न हो जाते हैं।

मनुष्य की सम्पत्ति

संस्कार ही मनुष्य की सम्पति है—अच्छे अथवा बुरे जिसे सदैव काल अपने साथ रखता है।

दण्ड का लक्ष्य क्या है ?

अब तुम प्रतिज्ञा कर लो कि कभी घर की वस्तु भी बिना आज्ञा न उठाऊंगा। युवक ने प्रतिज्ञा कर दी और सन्त ने थानेदार से कहा अब इसे क्षमा करनाश्रेयस्कर है। दण्ड का लक्ष्य अथवा अभिप्राय सुधार ही है।

बालक ने कहा ऐसे-ऐसे उदाहरण हम सदा स्मरण रखते और ध्यान में लाते रहते हैं और अनेक प्रकार के पापों से बचे रहते हैं।

अभिमान चूर

साधु सुन कर प्रसन्न हुआ और आशीर्वाद दी। किवाड़ बन्द कर एक चित्त हो बैठा। चित्त में विचार उठने लगे कि कितना उत्तम और श्रेष्ठ गृहस्थ है, वास्तविक साधु तो यही है, मैं साधु नाम का हूं। मुझे तो अभिमान था कि मैं इनकी भूल जो दूर करूंगा परन्तु अब तो मुझे अपनी भूल प्रत्यक्ष हो गई।

वृत्ति बदली

फिर साधु समाहित हो गया। थोड़े चिर पश्चात् ऊंघ आ गई।

क्या देखता है कि बहुत सी जनता उपथित है और मैं उपदेश कर रहा हूं और जनता प्रशंसा कर रही है कि साधु हों तो ऐसे। आंख खुल गई। सोचने लगा मैं साधु हूं यद्यपि यह गृहस्थी ऊंचे हैं तथापि मैं साधु होने के नाते इन को उपदेश दूं जिससे मैं इनकी दृष्टि में साधु जंचूं। वृत्ति बदल गई झट देवी को बुलाकर कहने लगा ए देवी ? इधर आइये।

देवी—(कर जोड़ कर) भगवन् ! आज्ञा दीजिये।

साधु—अब यह बताएं आप जिस समय काम करती रहती हैं आपका मन उसी काम में रहता है अथवा संसार के अन्य-अन्य विषय में भी दौड़ता रहता है जैसे मन चञ्चल है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बालक—वह कार्य जिससे हमारे शरीर का मन का, अथवा आत्मा का पतन हो उसे पाप कहते हैं अथवा जिससे संसार, जाति, और समाज को हानि बिगाड़ हो, वह पाप है।

पाप के स्वरूप का दिग्दर्शन

साधु—तुम को किस प्रकार से पाप समझाते हैं ?

बालक—कथाओं और दृष्टान्तों से।

साधु—अच्छा कोई चोरी की बात सुनाओ।

कथा

बालक—हमें पिताजी ने बताया था कि एक स्थान पर सत्संग लगा हुआ था। बहुत जनता उपस्थित थी। जब सत्संग समाप्त हुआ, एक प्रसिद्ध मान वाला धनी भी बैठा था। उसका एक नवयुवक पुत्र भी वहाँ उपस्थित था। उसे लघुशंका ने वेग किया, वह उठा, जनता की जूतियाँ मिश्रित पड़ी थीं, उसे अपनी उपानह (जूती) ढूंढने से न मिली परन्तु वह लघुशका के वेग से व्याकुल हो रहा था। अपन पिता की उपानह पर दृष्टि पड़ी और उसे पहन कर दौड़ पड़ा। दूर जाकर लघुशंका करनी थी। इतने में प्रत्येक व्यक्ति ने अपनी-अपनी उपानह पहननी आरम्भ कर दी। पिता चूँकि बड़ा धनी था, वह अन्त नमस्कार कर के बाहर आया, देखा तो जूता नहीं था कुतूहल किया, बहुत से व्यक्ति एकत्रित हो गए। दैव वशात् कई पुलिस के अधिकारी तथा सिपाही भी सत्संग में आया करते थे, वे धनी मानी का बड़ा मान करते थे, वे भी आ गए।

जूते की खोज

थानेदार—सेठजी ! कहाँ रक्खी थी।

धनी (स्थान दिखा कर)—इस स्थान पर रक्खी थी।

सिपाही भी साथ था, थानेदार ने सिपाही को आज्ञा दी कि वहां से जो पाद चिह्न जा रहे हैं, उनकी खोज निकालो। सिपाही पाद चिह्नों का अनुकरण करता-करता उस स्थान पर पहुंचा जहां से वह नवयुवक आ रहा था, देखा कि उसने वही उपानह (जूती) पहन रक्खी हैं, उसे पकड़ लिया, कहा कि तुम चोर हो ! चलो थानेदार साहब के पास। वह बेचारा आश्चर्य तथा चिन्ता में पड़ गया। कहने लगा कहाँ चोरी की है ? मेरे पिता की उपानह है।

सिपाही ने कहा, "कुतूहल भी तो तुम्हारे पिता ने ही मचा रक्खा है"। पकड़ कर अन्दर लाला अभी दूर ही था कि पिता देख कर चकित रह गया।

दूर से देखते ही थानेदार ने कहा, हथकड़ी लगा दो और थाने पर ले चलो।

धनी—यह तो मेरा पुत्र है ! इतने में वे समीप आ गये।

थानेदार—तुम ने चोरी क्यों की ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देवी—मुझे कार्य आरम्भ का तो पता लगता है परन्तु समाप्ति अपने आप हो जाती है। मेरा कार्य मेरे मन तथा इन्द्रियों से होता रहता है किन्तु नाम के आश्रय से, बस और कुछ नहीं जानती।

साधु—अच्छा तू तो मेरी माता है। तुझे मैं अब देवी के नाम से नहीं पुकारूंगा। माता जी के नाम से सम्बोधित करूंगा।

जाओ तपस्या करो

देवी—फिर आप कृपा कीजिए। भोजन कर लीजिए और कहीं एकान्त स्थान पर जाकर अभी साधु बनने के लिए तपस्या कीजिए। आपकी दृष्टि, आपके शब्दों के अनुसार एक पुरुष अकेला माता के साथ भी न रहे, घटिया हो गई है। आप में अब रूप का भेद आ गया है तो रंग का भी आ जावेगा। रंग ही भंग डालता है।

विवेक की प्राप्ति कब होती है ?

साधु विस्मित हो गया और अपने अन्दर विवेक ज्ञान और तप त्रुटि को अनुभव करने लगा कि मेरा तप तो बहुत था, वर्षों तप का जीवन व्यतीत किया, एकान्त और वन में रहा परन्तु स्यात् अभिमान के कारण विवेक प्राप्ति नहीं कर सका।

वास्तविक विवेक तब तक प्राप्त नहीं हो सकता जब तक अभिमान और अहंकार मनुष्य में रहते हैं चाहे कितना ज्ञानी, ध्यानी अथवा कर्मकांडी क्यों न हो।

प्रभु करे कि हम लोगों को वास्तविक विवेक की प्राप्ति हो ताकि आश्रम मर्यादा को पूरा करते हुए आदर्श गृहस्थी बन सकें। ●

अखिल भारतीय

हिन्दू-रक्षा-समिति

के

सदस्य बनिए

देश-धर्म-संस्कृति बचाएं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—कुंवर बहादुर

उत्तर प्रदेश में

मुस्लिमलैण्ड बनाने का षडयंत्र

परिस्थितियां बता रही हैं कि—यदि निकट भविष्य में मुरादाबाद से लेकर रामपुर तक के क्षेत्र को नागालैंड की तरह भारतीय संविधान के अन्तर्गत मुस्लिम-लैंड बनाने की मांग को लेकर आन्दोलन प्रारम्भ हो जाय तो कोई आश्चर्य नहीं होगा।

मुरादाबाद किस तरह विदेशी अरब इस्लामवाद के घेरे में आ गया है इसके लिए अगले तीन नक्शे जीवित प्रमाण हैं। इन नक्शों को उत्तर प्रदेश सरकार ने स्वीकृत किया है। तथा तेजी से अरबिया मुस्लिम विश्वविद्यालय का निर्माण हो रहा है। यही नहीं भारत में ऐसे ६ मुस्लिम विश्वविद्यालय बन रहे हैं और ६ और भी बनने की तैयारी हो रही है। एक अलीगढ़ विश्वविद्यालय यदि नए पाकिस्तान को जन्म दे सकता है तो १२ विश्वविद्यालयों की फैलायी सांप्रदायिकता क्या कहर ढाएगी कभी कल्पना की है, आपने ?

अपनी इस योजना को मूर्तरूप देने के लिए फिरकापरस्त मुसलमान नेताओं की सलाह से मुस्लिम व्यापारियों ने जमीनें खरीदने और मुस्लिम बस्तियां बसाने का काम प्रारम्भ कर दिया है। इस योजना के सूत्रधार अब अलीगढ़ के स्थान पर मुरादाबाद को इस्लामिक क्रांति का केन्द्र बनाकर भारत के इस उत्तरी क्षेत्र में एक मुस्लिम बहुल क्षेत्र का निर्माण करने का जी तोड़ प्रयास कर रहे हैं। भारतीय राजनीति की मजबूरियों का वे भरपूर फायदा उठाने के लिए कमर कस कर तैयार हैं। फिरकापरस्त नेताओं, संस्थानों और अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय छात्रसंघ की गतिविधियां इस आशंका की ओर स्पष्ट संकेत देती हैं।

मुरादाबाद में मुस्लिम बस्तियां

मुरादाबाद नगर के चारों ओर जिस प्रकार मुस्लिम बस्तियों का निर्माण करके उसे मुस्लिम क्रांति का केन्द्र बनाया जा रहा है और अन्य प्रान्तों से बुलाकर मुसलमानों को बिना मूल्य जमीन देकर यहां बसाया जा रहा है, उससे वैधानिक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अधिकार का दुरुपयोग करके किसी षड्यन्त्र की रचना का संदेह होना स्वाभाविक है।

मुरादाबाद रामपुर मार्ग

मुरादाबाद नगर के उत्तर में रामगंगा नदी के पार नेशनल हाईवे नम्बर २४ के छठे किलोमीटर पर मार्ग के पश्चिम में बर्तनों के एक बहुत बड़े निर्यातक हाजी अब्दुल वाजिद का ईंटों का भट्ठा है। इसी के निकट लगभग एक सौ वर्ग गज के दो सौ प्लाटों का एक भूखंड है। यह २० हजार रु० प्रति बीघा की दर से हाजी अब्दुल वाजिद के नाम से बिका है। इसके बाद यह भूखंड बाहर से आये मुसलमानों को बिना मूल्य वितरित किया गया है। यहां बोर्ड लगाया गया है 'गरीब मुसलमानों के लिए आवासीय व्यवस्था' और अब इन्हीं 'गरीबों' द्वारा आधुनिक सुविधाओं से सज्जित मकान बनाये जा रहे हैं। इन गरीबों के पास मकान बनाने के लिए धन कहां से आ रहा है, यह एक खोज का विषय है।

इसके बाद सड़क की दाहिनी ओर लगभग ढाई सौ प्लाटों का एक और भूखण्ड है जो विभिन्न व्यक्तियों के नाम से क्रय किया गया है। इस पर भी एक बोर्ड लगा है, जिस पर 'मुस्लिम कालोनी' शब्द लिखा है। इसके बाद रेलवे क्रासिंग के पास दोनों ओर बस्तियां बनी हैं, जिनके नाम मोमिन नगर, इस्लाम नगर, मुमताज हाउसिंग स्कीम, मुस्तफाबाद हैं। इसके बाद सातवें किलोमीटर पर सड़क की दाहिनी ओर बर्तनों के एक दूसरे बड़े निर्यातक हाजी बरतानिया द्वारा खरीदा गया एक बड़ा भूखण्ड है। इसमें लगभग तीन सौ प्लाट बनाये गये हैं और कागजी खानापूरी करके यह प्लाट भी बाहर से आये मुसलमानों को वितरित कर दिये गये हैं। इसके बाद काशीपुर का तिराहा पार करके रामपुर की ओर जाने वाले मार्ग पर सड़क के दक्षिण में 'हयात नगर' नामक एक मुस्लिम बस्ती बनायी गयी है। इसी के ठीक सामने आठवें किलोमीटर पर सड़क के उत्तर में हाजी बरतानिया द्वारा खरीद कर बनायी गयी दो मुस्लिम बस्तियां हैं। इनमें से एक में लगभग दो सौ प्लाट हैं तथा दूसरी में लगभग तीन सौ प्लाट हैं। इन सबके अन्त में जामिया इस्लामिया इमदादिया कालिज है, जिसका भूमिगत भाग तैयार हो चुका है और भूतल के भाग का निर्माण तेजी के साथ हो रहा है। तिराहे से काशीपुर की ओर को जाने वाले मार्ग पर भूखण्ड है जिसका बैनामा किसी अज्ञात व्यक्ति के नाम हुआ है। यहां उल्लेखनीय है कि जिस समय यह भूखण्ड खरीदे गए थे, तब यहां जमीन की कीमत ८ हजार रुपए प्रति बीघा चल रही थी और अब यहां एक लाख रुपए प्रति बीघा पर पहुंच चुकी है।

मुरादाबाद दिल्ली मार्ग

मुरादाबाद नगर के पश्चिम में गांगन नदी के पार कई एकड़ भूमि में इस्लामिया अरबिया यूनीवर्सिटी का निर्माण हो रहा है। इसी के साथ हाजी अब्दुल वाजिद द्वारा वहां दो मुस्लिम बस्तियों के लिए भूखण्ड खरीदे गए हैं। इनमें अभी प्लाटिंग नहीं हुआ है।

मुरादाबाद सम्भल मार्ग

मुरादाबाद नगर के दक्षिण में मुरादाबाद-सम्भल मार्ग पर जहां अगस्तों १९७८ में इस्लामिक इज्तमा हुआ था और जिसमें लगभग दो दर्जन मुस्लिम देश

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था, रहमत नगर, मुसर्रत नगर, इस्लाम नगर, तथा दो बेनामी मुस्लिम बस्तियों का निर्माण इस समय पूरी तेजी पर है।

वस्तुस्थिति क्या है ?

इस सम्बन्ध में जो तथ्य प्रकाश में आए हैं, उनके अनुसार इन बस्तियों के लिए जितने भी भूखण्ड क्रय किए गए हैं, उन सबमें किसी न किसी रूप में बर्तनों की निर्यात करने वाली मुस्लिम फ़र्मों के मालिकों के नाम अवश्य आए हैं। मुरादाबाद से पिछले वर्ष १३४ करोड़ रुपए के बर्तन निर्यात किए गए जिनमें अधिकांश मुस्लिम व्यापारियों द्वारा पश्चिम एशिया के अरब देशों को भेजे गए। स्पष्ट है कि विदेशों से जो धन आया है, उसमें मुसलमान निर्यातकों का बहुत बड़ा हाथ है और अधिकांश धन चोर दरवाजे से आया है। इसमें एक राष्ट्रीयकृत बैंक की मोहल्ला असालतपुरा स्थिति शाखा के कुछ कर्मचारियों का शामिल होना भी प्रकाश में आया है। इसके अतिरिक्त हजयात्रियों का भी इस मामले में सहयोग लिया जाना असंदिग्ध नहीं है।

अब यह सब स्वीकार करते हैं कि पिछले १५ वर्षों में मुरादाबाद के मुस्लिमों में एक नए धनिक वर्ग का उदय हुआ है। उन्होंने अपने बड़े-बड़े भवन बनवाए हैं और मुस्लिम निर्यातकों की संख्या भी बढ़ोतरी पर है।

सी०पी०आई० से संबंधित मुरादाबाद के राजनीतिक कार्यकर्त्ता अनीस जलाली का कहना है—"अब मुस्लिम मुहल्लों में सामान्य अपराध भी बढ़ रहे हैं। जमीन पर दावेदारों की संख्या भी बढ़ रही है। कमजोर और असहाय मालिकों के मकानों पर जबरदस्ती कब्जा कर लेने वाले नए गुण्डा गिरोहों का उदय हुआ है। यहां तक कि नगर पालिका के अधिकारियों को रिश्वत देकर नगरपालिका की जमीनों पर भी कब्जा किया जा सकता है। कब्रगाहों और वक्फ की जमीनों के लिए मुकदमें और झगड़ें सामान्य बात हो गई है। निर्यातक और अन्य नये धनी लोग वक्फ, विधवाओं और पुराने जमीदारों की संपत्ति पर कब्जा कर रहे हैं।"

निर्यातकों की होड़

'पिछले पांच वर्षों में जमीन खरीदने की होड़ मुरादाबाद के अगल-बगल में पहुंच गई है। हर निर्यातक अन्य धनी लोग और हाउसिंग सोसायटीज जमीन खरीद रही हैं। करोला के छोटे-छोटे कारीगर भी जमीन खरीद रहे हैं। रामपुर और दिल्ली मार्ग पर इस्लामी अरबी यूनिवर्सिटी नाम के दो मदरसे बन रहे हैं। बड़े निर्यातकों के नाम वाले बड़े-बड़े साइन बोर्ड सड़क से ही दीख जाते हैं।"

"शहर में एक चर्चा है। यह चर्चा पैट्रो डालर के बारे में है। अरब देश अधिकाधिक पीतल के सामानों की मांग कर रहे हैं और मुस्लिम व्यापारी इनका निर्यात कर रहे हैं।

पैसे ने मुरादाबाद में हाजियों की संख्या भी बढ़ा दी है। (मेनस्ट्रीम वार्षिक अंक १०८०।

मुरादाबाद के इर्द-गिर्द इस प्रकार जत्थेबंदी की रणनीति का उद्देश्य क्या है ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पिछले दो साल से

इसी सन्दर्भ में उल्लेखनीय है कि अगस्त, १९७८ में हुए इज्तमा के बाद इस क्षेत्र में साम्प्रदायिक दंगों की लहर सी आ गयी, और मुसलमानों की अलगाव की भावनायें स्पष्ट दिखायी देने लगीं। इसका दुष्प्रभाव नगर ही नहीं, वरन ग्रामीण क्षेत्रों पर भी पड़ा था। इस इज्तमा में तीन दिन तक दो लाख से अधिक इस्लाम धर्मावलम्बियों ने भाग लिया था। इस सम्मेलन के लिए सरकार की ओर से बिजली पानी सप्लाई तथा विशाल आवासीय व्यवस्था में भारी योगदान दिया गया। इसके बाद ही ग्रामीण अंचलों में बसे हिन्दू मुसलमानों में भी तनाव की स्थिति उत्पन्न हो हो गयी। ठाकुरद्वारा तहसील में सुल्तानपुर दोस्त, लोगो खुर्द, राजीपुर मिल्क, ठाकुरद्वारा नगर, मुरादाबाद तहसील में सरकाड़ा, काजीपुर, अमरोहा तहसील में बरखेड़ा पांडे अपरोला तथा हसनपुर तहसील में सलेमपुर और बिलारी में ढकिया आदि लगभग पचास से अधिक ग्रामों में सांप्रदायिक हिंसा भड़काने के प्रयास किए गए। इस संबंध हुए अनेक झगड़ों के मामले आज भी विभिन्न न्यायालयों में विचार-धीन हैं। स्वतन्त्रता के बाद जिस रूप में यह झगड़े हुए हैं, उनके सम्बन्ध में अनेक वृद्धों का कहना है कि उनके जीवन में यह प्रथम बार सामने आया है। यदि इस षड़यन्त्र को पहले ही न कुचला गया तो इसके परिणाम सारे राष्ट्र को भोगने होगें।

देश–धर्म–संस्कृति

की रक्षा के लिए

हिन्दू रक्षा समिति

के सदस्य बनें

अपने क्षेत्र में

हिन्दू रक्षा समिति स्थापित करें

साहित्य मंगाएं : बांटें

अ० भा० हिन्दू रक्षा समिति

नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

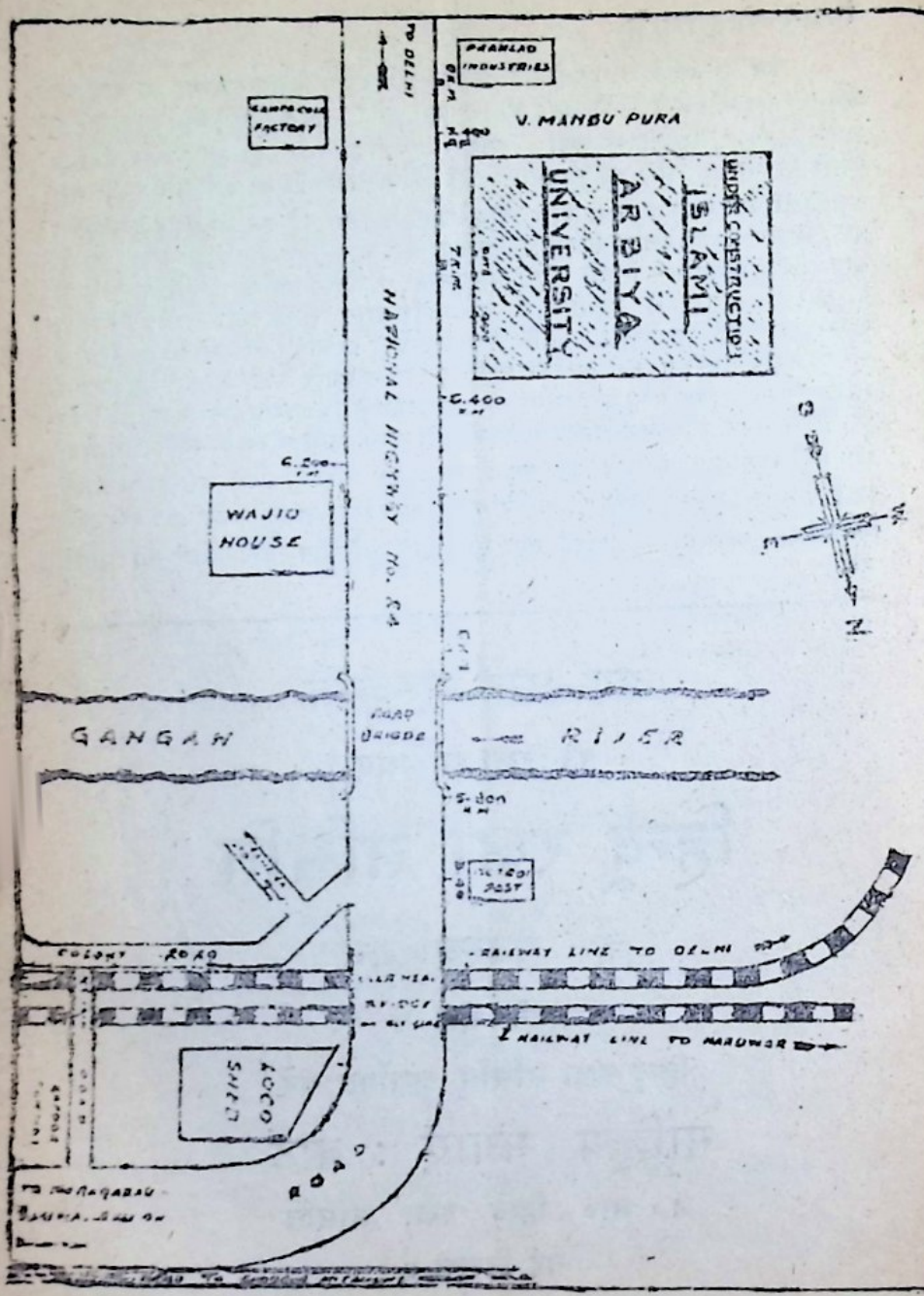

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

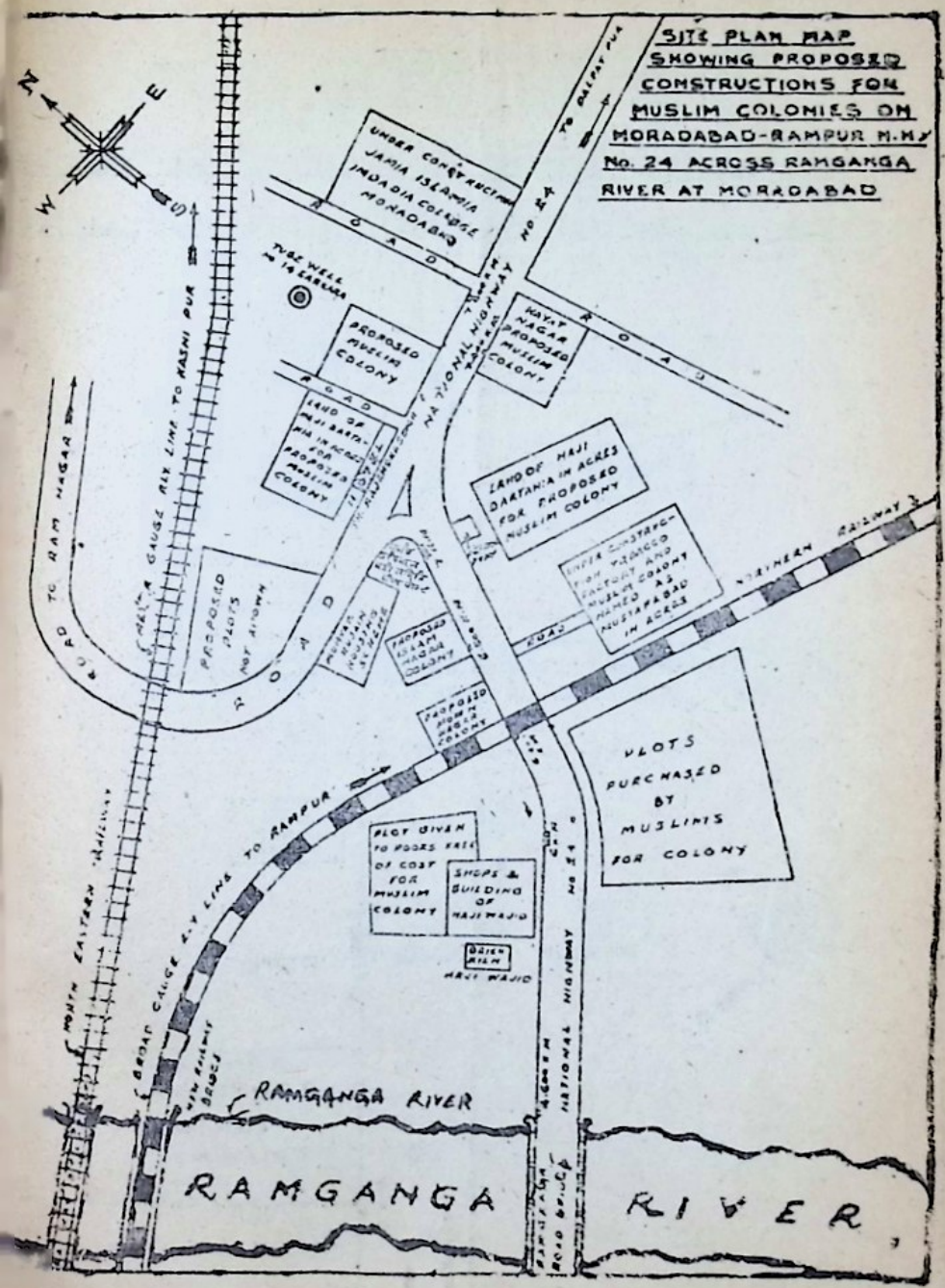

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

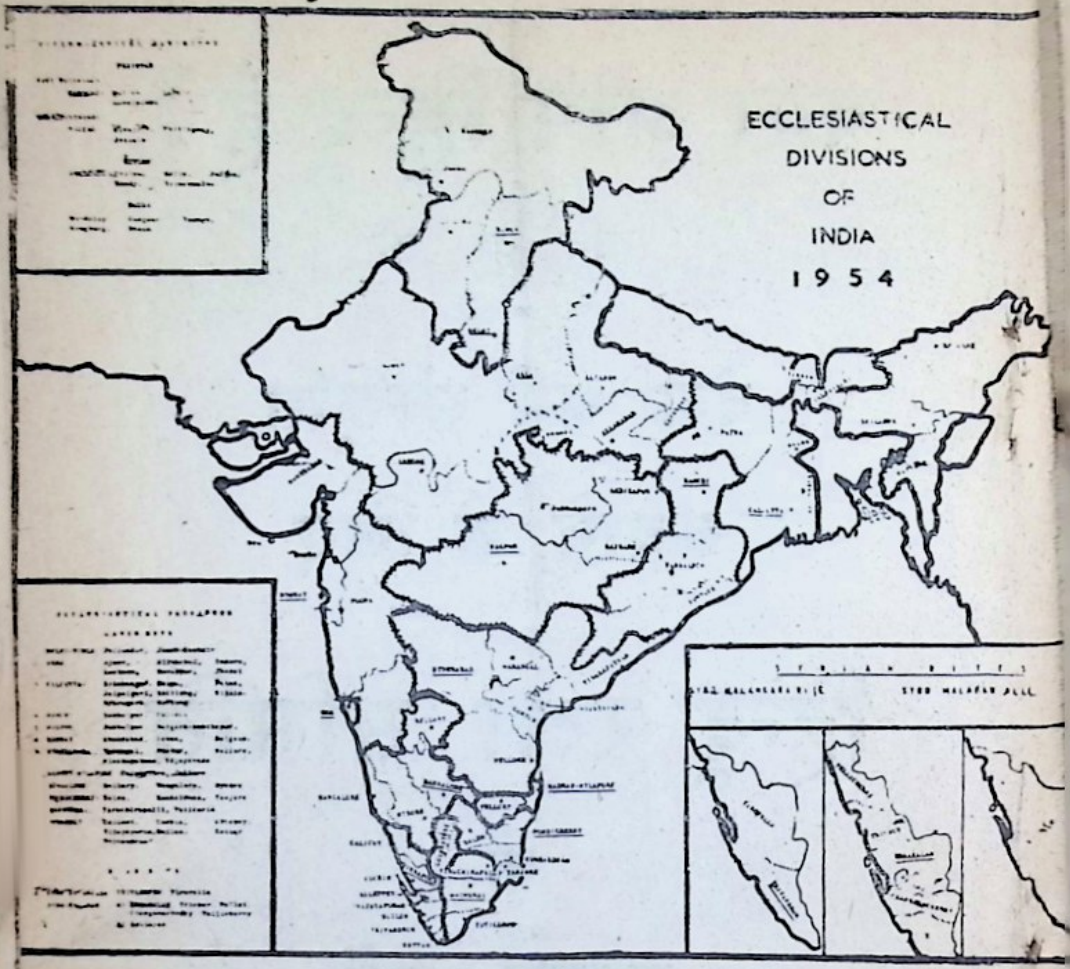

भारत को ईसालैण्ड बनाने का विदेशी षड़यंत्र नक्शे में स्पष्ट हो रहा है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'ओ३म'

क्या ईसा खुदा का बेटा था ?

दयानन्द संस्थान
वेद मन्दिर नई दिल्ली-११०००५

मूल्य ४० पैसे : अधिक से अधिक मगायें

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिंदू जागरण का शंखनाद

गत माह राजधानी में हिन्दू नेता प्रो० रामसिंह जी का 'भव्य' अभिनन्दन किया गया। वस्तुतः यह अभिनन्दन हिन्दू भावना का अभिनन्दन था।

इस अवसर पर जहाँ आर्य नेता उपस्थित थे वहां सनातन धर्मी भी थे। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता थे तो जनता पार्टी के भी थे। पत्रकार भी तो समाज सेवी भी।

लोगों का कहना था, ऐसा भव्य समारोह राजधानी में दूसरा नहीं हुआ।

अगले दो पृष्ठों पर इस समारोह के २ चित्र हम छाप रहे हैं। एक चित्र में श्री देसराज चौधरी, प्रोफेसर रामसिंह व उनकी पत्नी दिखायी पड़ रहे हैं। महात्मा वेदभिक्षु हिन्दुओं के जागरण का शंखनाद कर रहे हैं, तो दूसरे चित्र में सभी सम्मान्य नेता भी दिखायी पड़ रहे हैं।

अगले दोनों पृष्ठों के चित्र स्वयं अपनी कथा कह रहे हैं। वस्तुतः हिन्दुओं की सेवा के लिए जीवन अर्पित करने वाले वीर व्यक्तित्व का यह सच्चा अभिनन्दन था।

—सम्पादक

हिन्दू जागरण का प्रचार साहित्य

भारी संख्या में मंगाएं

१. हिन्दुओं को चेतावनी	४० पैसे
२. इस्लामी साम्राज्यवाद की चुनौती	६० "
३. पोप की सेना का भारत पर हमला	६० "
४. क्या ईसा खुदा का बेटा था ?	४० "
५. ईसाई मत खण्डन	२० "
६. पादरियों को चुनौती	२० "
७. BIBLE IN THE BALANCE	६० "

एक हजार मंगाने पर ५० प्रतिशत की छूट

दयानन्द संस्थान वेद मंदिर नई दिल्ली-५

मुद्रक—प्रकाशक-संपादक पंडिता राकेशरानी के लिए नरेन्द्र प्रेस दिल्ली के छपा॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

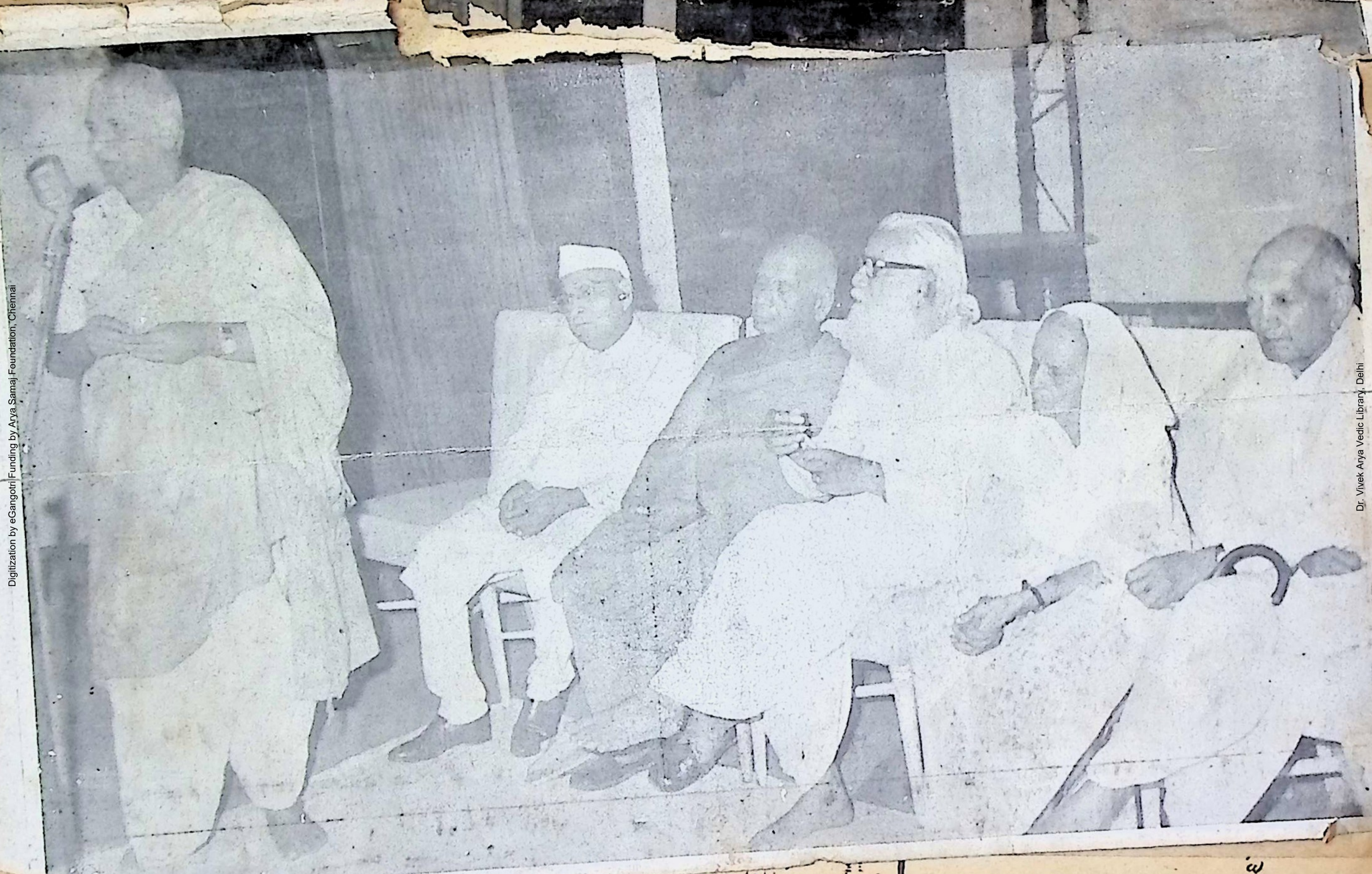

Digitization by eGangotri|Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi